कबीरकृष्णगीता

सत्यनाम



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

कबीरदर्शनग्रन्थमालाकी प्रथम मणिका.

कबीरकृष्णगीता ।

कबीरपन्थी ग्रन्थोंके एकमात्र जीर्णोद्धारक स्थान कबीरधर्मनगरके हजूरी महंत श्रीयुगलदासजी प्रसिद्ध-रसीदपुर शिवहरवाले भारतपथिकस्वामी श्रीयुगलानन्दविहारीद्वारा संगृहीत ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास™,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : सितंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : १०० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

सत्यनाम ।

प्रस्तावना.

मंगल दोहा ।

श्रीगुरु दीनदयाल प्रभु, करुणामय शुभ नाम ।
जेहि सुमिरि नर पावई, अजर अमर सुखधाम ॥ १ ॥
ताकर चरणसरोजयुग, बारबार शिर नाय ।
लिखिहौं शुभ प्रस्ताव यह, सतगुरु होहिं सहाय ॥ २ ॥

मानवजन्मका सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य "सर्व दुःखोंकी निवृत्तिपूर्वक परमानन्दकी प्राप्ति है." इसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिये "धर्म" की आवश्यकता है. धर्म स्वरूपसे एक होनेपरभी, भिन्न अधिकारियोंके भेदसे अलग अलग रूपमें देख पडता है. इसी कारणसे महात्मा आप्त पुरुषोंने ऐसे उपदेशमय वचनोंको प्रगट किया है कि, जिससे सर्व श्रेणीके अधिकारियोंकी निज २ योग्यता और भावनाके अनुसार लाभ प्राप्त हो सके. इसी कारणसे एक ही वचन भिन्न २ टीकाकारों द्वारा भिन्न भिन्न विचारोंका बोधक जान पडता है यद्यपि इस भेदमें न तो मूल वक्ताओंकाही दोष है, न टीकाकारोंकाही; किन्तु विचारके यथार्थ स्वरूपको न जाननेवाले अल्पज्ञ विचारहीन पुरुषोंको उसमें यथार्थकी झलक नहीं देख पडता. इसीसे वे उसके यथार्थ लाभसे वंचित रहकर अपना अमूल्य जीवन मिथ्या निन्दा और कुतर्कमें नाश कर देते हैं ।

इस बातके जाननेवाले प्रत्येक धर्म और पंथोंके विचारवानोंको इसका पूर्ण निश्चय था. इसीलिये उन्होंने निज निज इष्ट गुरुओंके बताये मार्गकी वृद्धि तथा जीवोंके कल्याणके लिये ऐसी एसी पुस्तकें और वाणी वचनकी रचना की थी कि, जिससे बुद्धिमान् तो सम्यक् सिद्धान्तको जान ले और बालबुद्धिवाले अधिकारी, प्रथम निज इष्ट गुरुमें श्रद्धाको:प्राप्त कर, क्रमशः तत्त्वकी ओर अग्रसर होवें ।

वैदिक धर्मके, महत् ज्ञान और सर्व प्रकारके अधिकारियोंके योग्य उपदेशोंसे भरे, पुराण, बौद्ध, जैन, पारसी इत्यादि सर्व धर्मोंकी कथा,

गाथा इत्यादियोंका उपरोक्त उद्देश्यकी सिद्धिके लिये आविर्भाव हुआ है।

उसी प्रकारसे कबीरपन्थी महात्माओंने उपरोक्त आशयकी सिद्धिके लियेही अनेक ग्रन्थोंकी रचना की है. उन्हीमेंसे यह कबीर-कृष्णगीता भी एक है।

यद्यपि क्षुद्र विचारवाले, पक्षपातपूर्ण कुतर्कियोंको इस ग्रन्थमें सारका दर्शन मिलना कठिनही–नहीं असम्भवभी–है, तथापि जो सत्यके खोजी हैं, निज आत्माके कल्याणकी जिनको तीव्र इच्छा है, जो सारग्राही और पक्षपातशून्य हैं, उन्हें इस ग्रन्थके प्रत्येक शब्दों, वाक्यों चौपाइयोंमें यथार्थतत्त्वका दर्शन हुए विना कदापि नहीं रहेगा।

इस ग्रन्थकी एकही प्रति मेरे पास रहनेसे मुझे स्वतंत्रतासे इसकी शुद्धि अशुद्धिपर विचार करनेका अवकाश न मिलनेसे, निज नियमानुसार इस आवृत्तिमें हस्तलिखित प्रतिको ज्योंका त्यों छपवा दिया है. यदि इसकी और प्रतियाँ मिल जायँगी अथवा जो कोई इस ग्रन्थकी हस्त लिखित प्रति मेरे पास भेज देंगे, दूसरी आवृत्तिमें उन सब ग्रन्थोंद्वारा इसको शुद्ध करके छपवानेका प्रबन्ध किया जायगा. साथही उन ग्रन्थ भेजनेवालोंका नाम प्रस्तावनामें दे दिया जायगा और ग्रन्थ छप जानेपर छपी हुई एक प्रतिभी उन्हें दी जायगी. यह ग्रन्थ जिस प्रतिसे छापा गया है, वह प्रति छत्तीसगढके एक पनिका महंत दरबनदासकी दी हुई प्रतिके ऊपरसे लिखी गयी थी।

कितने लोगोंको, जिन्हें यह ज्ञान है कि–शुभस्थान कबीरधर्मनगरमेंभी छापाखाना खुल चुका है और वहांभी ग्रन्थ छपते हैं, तब निजके प्रेसको छोडकर बम्बईमें यह ग्रन्थ क्यों छपवाया गया है, ऐसे लोगोंको जानना चाहिये कि–शुभस्थान "कबीरधर्मनगर" दिहातमें होनेके कारण वहां एक तो प्रेसके लियें उपयुक्त कम्पोजिटर, कागज, स्याही इत्यादि कुल वस्तुओंपर अत्यन्त खर्च पडता है. दूसरे हैण्ड प्रेस होनेके कारण उस प्रेससे कामभी बहुत कम निकलता है, इस हेतु ग्रन्थोंका शीघ्र शीघ्र यहांके प्रेस (कबीरधर्मप्रकाश) से छपना दुस्तर समझकर, और लोगोंकी, ग्रन्थोंके लिये मांग अधिक बढ जानेके कारण सिद्धि श्री १०८ पं० श्री उग्रनामसाहब प्रधान

आचार्य, कबीरपन्थकी आज्ञासे, पुनः मुझे ग्रन्थोंके छपवानेका प्रबन्ध बम्बईमेंही कराना पडा है।

"अनुरागसागर" जो ४० ग्रन्थोंके द्वारा शुद्ध किया है वहभी बम्बईमें छपगया है, इसका आकारभी इस ग्रन्थसे कुछही बडा है और ऐसे मोटे टाइप तथा ऐसी पूर्णताके साथ छपा है कि-आजतककी छपी हुई कोई प्रतिभी इसकी समता नहीं कर सकती। विशेष वृत्तान्त अनुरागसागरकी प्रस्तावनासे जानना चाहिय।

अन्तमें पाठकोंसे एक बात कहकर मैं इस प्रस्तावनाको समाप्त करता हूं। मेरा नियम है कि-किसीभी ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रति जब मुझे प्राप्त होती है और उसकी दूसरी प्रति मेरे पास नहीं होती है तथा ग्रन्थके छपवानेकी अत्यन्त आवश्यकता जान पडती है, तो प्राप्त प्रतिके अनुसार ज्योंकी त्यों उस ग्रन्थको छपवा देता हूं। इसलिये हस्तलिखित प्रतियोंके समान यदि मेरे छपाये हुए प्रथम आवृत्तिके ग्रन्थमें अशुद्धियां जान पडे अथवा किसीकी प्रतिके साथ उसका मिलान न हो तो क्रोध न कर उस अशुद्धिकी सूचना और हस्तलिखित प्रति भेज देवें, जिससे आगेकी आवृत्तियोंमें शुद्ध करनेमें सहयता मिले।

इस "कबीरकृष्णगीता" की यद्यपि एकही प्रति मेरे पास थी जिससे यह छपवायी गयी है, तथापि यह प्रति छत्तीसगढकी अनेक प्रतियोंसे मिली हुई है और छत्तीसगढमें इसका इतना मान और इसकी इतनी चाहना है कि-लोगोंके बारम्वार अनुरोध करनेसे मुझे इसके शीघ्रही छपवानेकी आवश्यकता हुई है। इसकी छपाई, बंधाईकी सुन्दरता तथा सफाईके विषयमें कुछ कहना हाथ कंकनको आरसी दिखानेके समान है; इसलिये मेरे परिश्रमके ऊपर ध्यान देकर, यदि धर्मज्ञगण इसे शीघ्र अपना लेंगे तो अन्य ग्रन्थभी शीघ्रही शीघ्र छपवाकर उनकी सेवामें उपस्थित करता रहूंगा।

स्थान कबीरधर्मनगर
ता० १९-१-१४.

भवदीय
महंत युगलानन्द विहारी.

अथ कबीरकृष्णगीताकी
विषयानुक्रमणिका।

विषय.	पृष्ठ.
धर्मराजकी सभा	१
सत्यनामकी महिमा	३
राजा छत्रजीतकी कथा	४
नारद–कृष्णसंवाद–कबीरके भक्तकी महिमा वर्णन	७
यमदूतका कृष्णसे कबीरके भक्तके विषयमें वार्तालाप	९
कबीरकी महिमा कृष्णमुख	१०
(सत्यलोक, जीव, निरंजन आदिका वर्णन)	१२
काललीला वर्णन	१४
कालसे वचनेका मार्ग	१५
निरंजन और विष्णुका संवाद	”
चौरासीका वर्णन–विष्णु मुख	१८
शुकदेव मुनिका अपने अनेक जन्मोंका वृत्तान्त कहना।	”
राजा निर्मोहकी कथा	२१
गुरुकी महिमा	२७
सच्चे गुरुकी पहिचान	”
नारदके गुरु करने और चौरासी भोगसे छूटनेकी कथा....	२८
कबीरकी महिमा	२९
सुपंथ कुपंथका वर्णन	३१
त्रिगुणी जीवका वर्णन	”
पाण्डव और कृष्ण संवाद....	३२
कपिल मुनि वचन (निज वृत्तान्त)....	३४
कबीर शरण विना मुक्ति नहीं	३८
सब देवताओंका कबीरकी स्तुति करना और कबीरका प्रकट होकर सबको उपदेश देना	४०
व्यासका कबीरसे सत्यलोक दिखानेकी प्रार्थना करना	४२
कबीरका उपदेश	४४
कलियुगका वृत्तान्त	४५
कलियुगमें तरनेका मार्ग सगुण-निर्गुण भक्तिका वर्णन	४६
सद्गुरु और गुरुके लक्षण और चिह्न	४८
सकलदेववचन	४९
कुबेरका गुरु उपदेश लेना	”
कृष्णका दीक्षा लेनेके लिये प्रार्थना करना	५१

विषय।	पृष्ठ।
मनका वर्णन—मनकी ४० प्रकृति।	५३
गुरु और गुरुओंका वर्णन	५४
चौरासीका वर्णन	५५
मीन भक्षककी गतिका वर्णन	५६
जीव बधनेका पाप	५७
कबीरसाहबसे दर्शन देनेके लिये सब देवताओंका प्रार्थना करना।	५८
कपिलमुनिका पान परवाना लेना	५९
रावणका वृत्तान्त	६०
कलियुगके धर्मका वर्णन	६१
पतिव्रता और व्यभिचारिणीके लक्षण और कर्तव्य	”
राजा दृगपालके पुत्रोंकी कथा (पतिव्रता और व्यभिचारीके दृष्टान्त)	६३
कथाका सार दृष्टान्तका अध्यात्मिक अर्थ	७०
निर्गुण भक्तिकी महिमा	”
अर्जुन और कबीर संवाद	७१
युधिष्ठिरका आरती चौका करना।	७३
कबीर साहबका देवतों तथा युधिष्ठिरको परवाना देकर लोकको जाना।	७४
निरंजन और त्रिदेवका सम्वाद शिवादिदेवका कोप करना	७५
कृष्णको निरंजन शिवके कोपसे बचानेके लिये कबीरका प्रकट होना और शिवका भस्म करना	७९
सनकादिका शिवका जिलानेके लिये प्रार्थना करना	८१
सनकादि और विष्णुका सम्वाद वेदादिकी उत्पत्ति	८२
औतारोंकी कथा	८९
गुरुभक्तिकी महिमा	९३
गरुडकी चेतना गरुड और कबीर सम्वाद	९४
कृष्ण गरुड सम्वाद	९९
शुकदेवकबीरसम्वाद	१०२
कृष्ण कबीर सम्वाद	१०४
कबीरका अपने पन्थकी बात कृष्णसे कहना	१०९
अवतारोंमें सर्वश्रेष्ठ औतारका नाम	११४
तीनों गुण तथा त्रिगुणात्मक भक्तिका वर्णन	”

विषय.	पृष्ठ.
व्यास और कृष्ण सम्वाद	११७
साधुके लक्षण रमता और बैठाका भाव	११८
ज्ञान दशा और मनकी दशाका वर्णन अर्थात् गुरुमुखी और वनमुखीका वर्णन	१२५
कलियुगमें कबीर साहब क्यों प्रकट हुए ?	१२७
सब देवतोंका कबीरसाहबका शिष्य होना	१२९
लक्ष्मी आदि देवियोंके गुरुमुख होनेका वृत्तान्त....	१३०
सत्यलोकके हंसोंके रूपका वर्णन	१३६
ब्रह्मा और कबीर सम्वाद, लोक द्वीपका वर्णन	१३८
महादेव और कबीर सम्वाद, योगका वर्णन	१४०
योगियोंके तत्त्वोंका वर्णन	१४६
मुक्तिका मार्ग, त्रिदेव और कबीर सम्वाद	,,
त्रिगुणका प्रभाववर्णन	१४८
सत्य भक्ति तथा योग भोगका वर्णन	१४९
विराट्का स्वरूप कथन	१५०
चौदह यमका वर्णन	१५१
ग्रंथसमाप्ति	१५२

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ।

सत्यनाम ।



सत्यनाम.

सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष,
मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरतियोगसंतायन,
धनीधर्म्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शननाम,
कुलपतिनाम, प्रमोधगुरुबालापीर, कवलनाम,
अमोलनाम, सुरतिसनेहीनाम, हक्कनाम,
पाकनाम, प्रगटनाम, धीरजनाम,
उग्रनामसाहबकी दया वंश
बयालीसकी दया।

सत्यनाम•

गुरुस्तुति।



श्लोकाः।

हे लोकेश दयानिधे ! त्रिभुवने देवोऽस्ति कस्त्वत्परः।
ब्रह्माविष्णुमहेश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानः सदा ॥
संसाराख्यदवानलेन विकलः संतप्यमानोऽस्म्यहम्।
त्वत्पादौ शरणं गतोऽद्यदिवसे भोः सद्गुरो ! पाहि माम् १

अर्थ–हे विश्वपति दयासागर ! त्रिलोकमें आपसे कौन देवता श्रेष्ठ है ? अर्थात् कोई नहीं• ब्रह्मा, विष्णु, महादेव इत्यादि देवताओंके समूहकरके आप सदाकाल सेवन करने योग्य हो• संसाररूपी दावाग्निसे व्याकुल हुआ तपायमान मैं आज आपकी शरणागतिको प्राप्त होता हूं सो हे सद्गुरु ! मेरी रक्षा कीजिये ॥ १ ॥

ध्येयं सदा निखिलवेदविदो वदन्ति।
ज्ञेयं च शुद्धमतयो यतयो विरक्ताः ॥
स त्वं प्रभो ! विगतशोकभवाब्धिसेतो ! ।
प्रत्यक्षतोऽसि भवतः शरणागतोऽस्मि ॥ २ ॥

आपको समस्त वेदके विद्वान् ध्यान करने योग्य कहते हैं, तथा विरागवान् निर्मल बुद्धिवाले यतिलोग आपको जानने योग्य कहते हैं सो आप हे प्रभो ! शोकरहित संसारके सेतु हो• मैं आज आपके साक्षात् शरणागत होता हूं ॥ २ ॥

नमोऽस्तु ते नाथ! तवांघ्रिपंकजम् ।
प्रत्यग्रकल्पद्रुमपर्णसन्निभम् ॥
श्रेयस्करं स्वात्मपदप्रदायकम् ।
ध्येयं मुनीन्द्रैरपि योगिनां वरैः ॥ ३ ॥

हे नाथ! आपके चरणारविंदोंको नमस्कार है. कैसे हैं आपके चरणारविन्द कि, कल्पवृक्षके नूतन पत्रोंके समान, कल्याणके करनेवाले तथा स्वात्मपदको प्राप्त करानेवाले फिर कैसे हैं ? मुनींद्र और योगीन्द्रोंके भी ध्यान करने योग्य ॥ ३ ॥

माता त्वमेव मम नाथ ! पिता त्वमेव ।
सौहार्दद: स्वजनबन्धुसखा त्वमेव ॥
सर्वं त्वमेव न च कोऽपि त्वया विनाऽन्यः ।
तस्मात्त्वदीयचरणौ शरणागतोऽस्मि ॥ ४ ॥

हे मेरे नाथ! आपही माता हैं, आपही पिता हैं, आपही मित्र हैं, आपही कुटुम्बी हैं, आपही भाई हैं, आपही सखा हैं, आपही सब कुछ हैं, आपके विना मेरा और कोई नहीं है. तिसी कारणसे मैं आपके चरणोंकी शरणागति हुआ हूं ॥ ४ ॥

अद्य मे सफलं जन्म प्रतीतोऽस्मि दयानिधे ! ।
नरः संसारदुःखौघात्त्वत्प्रसादाद्विमुच्यते ॥ ५ ॥

हे दयानिधे! मुझे प्रतीत होता है कि, आज मेरा जन्म सफल हुआ है. क्योंकि, मनुष्य दुःखके समूहसे आपहीकी कृपासे मुक्त होते हैं ।५।

श्लोकपंचकमाहात्म्य ।

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठते सुभक्त्या ।
शिष्यो जहाति कुगतिं परितः सदा तम् ॥
संपद्यते विविधमंगलहर्षलाभम् ।
सर्वार्थसिद्धिरपि मोक्षगुरोः प्रसादात् ॥ ६ ॥

अथ

कबीरकृष्णगीताप्रारम्भः ॥

उक्ति विष्णुव्यासवाणी–चौपाई ।

सुमिरो सत्तनाम गुरु नामा । साधुस्वरूप गुरू बिसरामा ॥
वकता विष्णु व्यास श्रुति वाणी । गुरुप्रताप सकलो गम जानी ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश देवादी । तैंतिस कोट देव संवादी ॥
मुनि नारद इंद्रादि अहीशा । सरस्वती गणपति जगदीशा ॥
बैठे सबै विष्णु मुख हेरा । पापपुण्यका करहिं निबेरा ॥
चित्रगुप्त तहां कागज लिखहीं । जेहिपर जेते बाकी अहहीं ॥
कितहूं निरति भजन गुरुनामा । कितहूं तो माया मनकामा ॥
पाप पुण्य बंधन जमफांसी । नाम विना भरमें चौरासी ॥
पकडे जीव चोरकी नाईं । मारत मुगदर रोर कराईं ॥
सासत खाय जीव अपराधी । यम लावे साकट कहँ बांधी ॥
करे पुकार सुने नहिं कोई । गुरुविन साकट परले होई ॥
जीवघात आमिष भख जेते । अग्निकुंडमें झरकें तेते ॥
अग्नि जारके नरक बुडावे । नरकभर सिर निकसन आवे ॥
जब जिव सीस काढ दम लेहीं । तबहीं जम सिर मुगदर देहीं ॥

लोहा सखा सिखेधके गाडे । पिबहिं नरक जिव परवश पाडे ॥
त्रिगुण भक्त जिव तजे न काला । त्रिगुणभक्त काल भगजाला ॥
परनारी परद्रव्य तलासी । तेहिते डारि देंय गरव फांसी ॥
ओझा डाइन चोर बटपारा । परे नरक जो खेले शिकारा ॥
साधु देख जिन बदन छिपावा । जम सिर मुगदर ताहि ढहावा ॥
मिथ्या वाद चुगल हंकारी । मित्र द्रोह लै नरकहिं डारी ॥
ऋणबंधन निज आतमघाती । बंधुघात जम तोरैं छाती ॥
विश्वासघात दै लेय बहोरी । अघोर नरकमें तेहि लै बोरी ॥
बैरागी ब्राह्मण संन्यासी । शस्त्र बांध भरमें चौरासी ॥
गुरु पितु मातुकी करे नहिं सेवा । भ्रमें तीरथ पूजत बहु देवा ॥
ब्रह्म तजि जो पूजहिं भूता । अघोर नरक देहीं जमदूता ॥
आतम तज जा पूज पषाणा । शिलारूप देहीं भगवाना ॥
वृद्ध मनुज जो करहिं विवाही । सूकर जन्म नरक भार वाही ॥
वेश्यागमन विश्वाकर बेटा । तेहि पीछे होय ग्राहको घेटा ॥
त्रिया पति तज जार जो राती । लोहमेख जम तोरहिं छाती ॥
तेहिपर आनि अग्नि धधकावें । छेद बेध जम अनल जरावें ॥
मात पिता तज त्रिय प्रतिपालें । ताहि काल आवामें डालें ॥
बापको कुल तज जो सासुर वसें । ताके सिर मसान चढ हसें ॥
बहिनी गांव वसे जो प्राणी । पितुपछ त्याग संग्रह अघखानी ॥
अजिया सुत जिन बंधो रे भाई । अजिया फिर तेहि खाय चबाई ॥
दिन दस भक्त करें अज्ञानी । बहुर मलेक्ष दशा लपटानी ॥

ताहि दिये भिष्टाके कुंडा । उड बुडके अब काटैं मुंडा ॥
निकसत सिर जम मार गजारा । लोहदंत कृम करहिं अहारा ॥
देह पराया भखैं जो मासू । भखहीं कृम दंतन घट तासू ॥
बरबस व्याह छोर धन लेहीं । ताहि सेज कांटाको देहीं ॥
जिन भिखरिको भीख न दीन्हा । ताकहँ भीख मंगाय लीन्हा ॥
मांगत भीख देय जो गारी । कहहिं ते भीख न देय अनारी ॥
अभ्यागतको नेवति जेवावे । तेहिते पाय चला अघ जावे ॥
पारहि वाट टाट दै मारी । मार शिकार कोरादिया अघ डारी ॥
करे मजूर मजूरी भूखा । पेट भरे लघु जेठके सूखा ॥
जो हरे मजूरनकेर मजूरी । ताकहँ काल देत हैं सूरी ॥
गऊ बधन जो द्विज बध कीन्हा । विष्णुद्रोह खान अघ दीन्हा ॥
दुरबल सबल सबल नर चांपै । जम बेधे तब थरथर कांपै ॥
जौलो पोखर पार बनावै । जड आगे हत जीव चढावै ॥
देव नाम ले जीव हतावे । भोथे शस्त्रसे गला रितावे ॥
ब्राह्मण करे शूद्रसो भोगा । परे नरक व्यापे बहु सोगा ॥
कन्या बेंच बेंच करे व्याजा । औ जो महँग मनावे अनाजा ॥
इन सबको दीन्हा अघखानी । औ जो प्यासे देय न पानी ॥
राजा होय अन्याई होई । परजहिं दुखदे अघ भुगते सोई ॥

दोहा—जन्म जन्मका लेखा, वासिल बाकी होय ।
पापी दुख सिर बूडही, पुन्निहि पहुँचे सोय ॥

जाहि जीव जत पुन्नके दासा । सो बैकुंठ पुन्न भर बासा ॥
पुन्न घटा फिर पर चौरासी । सत्तनाम बिन कटे न फांसी ॥

मन वचके जो साधू सेवा । ताकहँ छोडि सके न जमदेवा ॥
साधु देह घर भजहिं जो रामा । सद्गुरु भक्ति प्रताप सुखधामा ॥
सुखके धाम आह सतलोका । सत्तनाम भज जीव निसोका ॥

राजा छत्रजीतकी कथा ।

राजा छत्रजीत छत्रधारी । करे भक्ति कुल लाज बिसारी ॥
इच्छाभोजन सब कहँ देई । जो इच्छा माँगे सो लेई ॥
राजा रहे कबीरके शीषा । सर्व जीवपर दाया दीषा ॥
आतुर होय कहे इंद्र भुवारा । अब तो राज न रहे हमारा ॥
राजा छत्रजीत चलि आवा । इच्छा भोजन सबहिं खवावा ॥
बोले कृष्ण इंद्रसन आई । कबीर भजेते प्राण बसाई ॥

इन्द्र उवाच ।

कहैं इंद्र अब केहिपर जाऊं । हम आये राखहु मम भाऊ ॥

कृष्ण उवाच ।

जो अब तुब आवनमें राखो । निर्गुण भक्त द्रोह किम भाषो ॥
जो हम निर्गुण भक्त दुखावें । निराकार मोहि नरक डुबावें ॥
और सबनपर मैं सरदारा । कबीरके संतसे जम सब हारा ॥
कबीरको मनुषजानो मत कोई । कारण करण कबीर है सोई ॥
निराकार निरंजन देवा । तिन कह सत्त कबीरको भेवा ॥
पिता निरंजन हम सो कहेऊ । जब कबीर तब कोई नहिं रहेऊ ॥
कहैं निरंजन राज जो मोरा । सो दीन्ह कबीर बंदीछोरा ॥
कबीरके दिये करें हम राजू । कबीर सेवक मम सिरताजू ॥

और सबे हैं जमके चेरा। भजें कबीर तोहि सतपुर डेरा॥
कहें कृष्ण जानहु सो करहू। कबीर बालकके पाछ न परहू॥
कृष्णवचन लख सबहिं उदासा। कहें अजहूँ चल देखहु दासा॥
ब्रह्मा रुद्र नारद सब देवा। रज तम संग जीव सबे चलेवा॥
इंद्र आद नारद सो भाषी। चलो जाय देखहूं मैं आंखी॥
सबे अधर धर प्रगटे गोपा। नारद धार नृप गये कोपा॥
सात दिवस निशिके हम भूखे। इच्छाभोजन बिन हम रूखे॥
जाय सेवटिया नृप सो कहई। क्षुधावंत द्वारे नृप अहई॥
राजा कहा पूछहु तुम जाई। इच्छा भोजन कौन गोसाई॥
जाय सेवटिया ऋषिसों पूछा। भोजन कौन आय तुव इच्छा॥
तब नारद कहे तोहि कह कहहीं। कहौं ताहि राजा जो अहई॥
जाय सेवटिया नृपसो भाषी। द्विज नृपसो कहवे चित राखी॥
राजा आय कीन्ह परणामा। कछु ऋषि कहु इच्छा भच्छकामा
नारद कहें इच्छा चित मोरा। सर्व मांस खाऊं भर थोरा॥
सर्व मांस सुन राजा डरेऊ। सर्व जीव हतको डर भरेऊ॥
नृप ऋषिकहँ बैठक दीन्हा। आप गमन भवन निज कीन्हा॥
मंदिर जाय ध्यान गुरु कीन्हा। तुरत कबीर दरश नृप दीन्हा॥
राजा चरण पखार सो पान कराये। नारदमुनिके कथा सुनाये॥
सर्व मांस चाहे अन्याई। सद्गुरु आप दया उर लाई॥

कबीर वचन।

कहें कबीर सोच कछु नाहीं। देहु मीन ले तिनके पाहीं॥
सर्व मांस है मीनशरीरा। गउ सूकर नर सकल समीरा॥

शिष्टा पटार और खरवारा। भषै मीन सो मृतक झारा॥
मीन कीरा सो तुरत मगाये। शूद्र हाथ दे राय पठाये॥
नारद देख कोप होय ऊठे। लेहिं न मीन जाय तब रूठे॥
जाय दास नृप सो अर्थाई। ब्राह्मण रूठा जाय गोसांई॥
उठे कबीर राय तेहि बारा। आय ठाढ़ भे सिंह दुवारा॥
आपन रूप छिपाय कबीरा। साधुरूप होय मुनिसो भीरा॥
कहैं साधु सुन जमके अंसा। सर्व मांस तैं भष निहसंसा॥
नारद कहैं जीवत जिव मारी। सबकर मांस मैं भषत अहारी॥
कहैं कबीर राजासों बाणी। कलिके विप्र जांय अघखानी॥
अब नृप मानुष बहुत बोलावहु। तिनते सब तर रुधिर मंगावहु॥
जीवन मरे रुधिर सब चाही। सप सरोय अब सबके लाही॥
एक कहत धाये शत कोटी। लाये हेर रुधिर भर लोटी॥
सो ले धरा ऋषीके आगे। सर्व मांस अब लेहु अभागे॥
लोहूते होय मांस तुच हाडा। सर्व मांस भषतैं अघ गाढा॥
नारद देख अचंभा भयऊ। हो नृप यह बुध को तोहि दियऊ॥
कहा नृप सतनाम कबीरा। सो हमरे रक्षक गुरुपीरा॥
सो समर्थ मम सङ्कट निवारन। औ सब जीवके बिथा बिडारन॥
तब कबीर निज रूप दिखावा। नारद प्रतीत भये पतिआवा॥
नारद सुनहु श्रवण दे बैना। कहैं कबीर अलख लख नैना॥
कस तुम फंद रच्यो इहँ आई। मेटो अजहूँ सबे नसाई॥
डोप तोहे नरक ले नारद। राख सके को गनपत शारद॥
नारद बेग नृपके पग धारे। राजा बकसहु चूक हमारे॥

तब राजा कबीर मुख जोवा । कहें कबीर बकसहु द्विज रोवा ॥
राजा कहे बकसा हम तोहीं । तुमहु दया कर बकसहु मोहीं ॥
तब नारद बहु स्तुति कीन्हा । सबे रुधिर सरवरमह दीन्हा ॥
जेहि २ तनके श्रोनित गहेऊ ।भयउ सो झकतनमीनहोय रहेऊ॥
स्तुति करत नारद चलि गयऊ । अति लज्जित होय हरिपद गहेऊ॥
हरिसन्मुख नारद सिर नाये । पूछा हरि ऋषि कहँते आये ॥

नारद उवाच ।

कहें ऋषि नारद सुन जदुराई । बिन तुव आज्ञा गयउ गोसांई ॥
इंद्रकाज ब्रह्मा शिव भेजा । भयऊं पतित अब यह तन तेजा॥
छत्रजीतके गुरू कबीरा । रोसेउ तिन पुनि नृपत गँभीरा ॥
भसम होत चाहूं वहां आजू । होत भला तब इंद्रके काजू ॥
सत कबीर मोहि कोप सुनावा । मम सेवक किमि आन दुखावा ॥
अमित कला कछु बरणि न जाई।कही न सके अज हरि देव नसाई॥

कृष्ण उवाच ।

कहें कृष्ण तुम हमरी नहिंमाना । मानसके तुम सद्गुरु जाना ॥
सतकबीर करता अविनाशी । निराकारकेमूलकबीर सुखराशी॥
राजा रहे कबीरके दासा । तिनसे हम आज्ञा प्रगासा ॥
कबीरके संतसे काल डेराना । जरे गात तब पेल पराना ॥
कबीरके संत रहे सतलोका । इंद्रहि कौन भार भौ सोका ॥
जब इंद्र तब इंद्र कह पूजहु । इंद्र पराहि अब दूसर भूजहु ॥
इंद्रासन वैकुंठ विलासा । यह सब कीतम ठौर विनासा ॥
सत्तलोक अम्मरपुर देशा । तहां रहे सतकबीर सुखभेषा ॥

सबहिं जीव सतकबीरके आहीं । बिन परचे कोइ चीन्हत नाहीं ॥
मैं चीन्हा मोहि पिता चिन्हावा । निराकार मोहि भेद बतावा ॥
तुम सब कहँ हम भाष सुनाईं । पेल्ह वचन तुम गये गोसांईं ॥
कबीरके त्रास निरंजन कंपे । हम तेहि दास गने निज थापे ॥
धर्मराय चौदह तेहि हारे । जो सतनाम कबीर पुकारे ॥
सुन नारद सीस तर कीन्हा । कबीरके स्तुति करबे लीन्हा ॥
पुनि एक जम दौरा तहँ आवा । विष्णुहिं सीस नाय गोहरावा ॥
जीव एक बरबस चलि जाईं । सत्त कबीर कहें इतराईं ॥
तेहि देखत मम बल भो थोरा । जैसे साहु देखत हो चोरा ॥
तुम हरि सब ईश गोसांईं । ताते आप कहों गोहराईं ॥
कहा विष्णु तुम घर चलि जाहू । जो कबीर बे मुख तेहि खाहू ॥
हम सब हैं कबीरके दासा । निराकारको जाकी आसा ॥
सत्तपुरुष सतनाम कबीरा । दास कबीरके सो मतधीरा ॥
कहें कृष्ण सुन जम जिवजाला । तजहु जाहि तेहि तुलसीमाला ॥
तुलसीमाला तिलक लिलारा । कहें कबीर जिन राम पुकारा ॥
तासु निकट जिन जायहु भाई । साकट बांध नरक देवनाईं ॥
भये शिष्य गुरु शब्द न माने । गुरुसाधनकी भक्ति न ठाने ॥
साकटके तेहि लागे चांपी । साकट तो भये कालसमीपी ॥
बिन गुरु शरणको साकटकहिये । बिन गुरु शरण बस अघ लहिये ॥

दोहा–सत्त कबीरके सेवक, तेहि मत बोलहु बात ॥
राम गहे तेहि छांडहू, राम कबीर एक साथ ॥

राम भजे जो तजे दुचिताई । एक आस गुरु सब बिसराई ॥
आतम पूजा भ्रम बिसारे । जीवदया गुरु साध सुधारे ॥
सतकी चाल राम जप लाई । आगे ताहि कबीरपंथ मिलाई ॥
राम वैकुंठ कबीर सतलोका । कबीर शरण मिटे जिव धोका ॥
सुनके दूत फिर सुन्य समाये । जोतसरूपी कहँ गोहराये ॥
कहे दूत आतुर कह तोरा । जिव सब जाय कबीरकी जोरा ॥
ना जानो कहँ जाय समाई । जम बलहीन साधके ठाई ॥
तब हम कहा विष्णु सो जाई । विष्णु कहा घर जाहु रेभाई ॥
जब हर जीवके किये न खोजा । तब हम आये तुम्हरे सोजा ॥
को कबीर कहवाते आये । जीवहिं लेकर कहां सिधाये ॥
उठे अवाज सुनाते सोई । कबीरके दास छुवहु जानि कोई ॥
जिनके दिये राज हम करहीं । सो कबीर जिवलोक संचरहीं ॥
धर्मरायसे हम कहि राखा । औ पुन विष्णुसे महिमा भाषा ॥
विष्णु तो तोहि कहा समुझाई । धर्मराय तोहि नाहिं लखाई ॥
अब सुन राखहुं सब जमदूता । कबीरके दास छूवे अजगूता ॥
छुवहु कबहुं तोर बलहानी । हम हारे तोहि कौन बखानि ॥
सुनके दूत विष्णु ढिग आये । विष्णुहिं कहा जमन सिर नाये ॥
अहो विष्णु देवनके ईशा । तुमहि कहा सो नैन न दीसा ॥
हम जो गये निरंजन दरबारा । शून्य अंधियार भय कीन्हपुकारा
उठी अवाज सुन्यते जबहिं । कबीरके दास छुयउ मत कबहीं ॥

दोहा—कहा निरंजन राय अस, संत द्रोह जम नास ।
राम कबीरहिं छोडके, औरहिं घालो फांस ॥

रामके भक्तन हरगण लावहिं। कबीरके दास नाम बल धावहिं ॥
रामके दास पूछे कहु केह बाता। जन कबीर सद्गुरु रंगराता ॥
चढ़े विमान चले सब जाहीं। जागृत सतकबीर कहाहीं ॥
त्रिगुण जीव औ भूत पिशाची। पाप पुण्य आश्रित जमफांसी॥
सतकबीरके जो हैं दासा। जेहि नाहिं पाप पुण्यके आसा ॥
एकहि नाम कबीरहिं गावहिं। गुरुसाधुके सेवा लावहिं ॥
एकहि दूत गये जम धामा। साधु संत हर्षित लख रामा ॥
सबे देव औ सुखदेव व्यासा। को कबीर जेहि डर जमत्रासा ॥
कहैं कृष्ण कबीरके लीला। सतनाम कबीर गहीला ॥
कबीर हैं अमरलोकके वासी। सो नहिं देह धरे चौरासी ॥
अमरलोक तिहु लोकते न्यारा। जहँते यहां आये निरंकारा ॥
सो घर आदु सबनके मूला। सत्तलोक अमर अस्थूला ॥
जीव अमर सतलोकते आये। पूंजी सो अलख निरंजन पाये ॥

दोहा—आदु पिता सो सब, सो हैं सत्तकबीर।
क्रीतम पिता सो बहुत, भये निरंजन नीर शरीर ॥

सत्तकबीरके अंस सोहंगा। आय रहे सो सबके संगा ॥
सोहंग नाम ब्रह्मके दल। पांच पचीस त्रिगुण अहंकल ॥
तत ओंकार सोहंगम जीऊ। सत्तकबीर सब जिवके पीऊ ॥
जीव न चीन्हे सत्तकबीरा। पांच तीनके धरे शरीरा ॥
अमर लोक हिरंमर काया। तहं सब हंसा केल कराया ॥
हम सब कहा सेवक बडभागी। जो कबीरके शरण न लागी ॥

अब निज इच्छा भये है मोरा । सतगुरु करों कबीर बंदीछोरा ॥
केहि कारण हमहूं दुख पावा । निरंजन मोंहि भग जठर रमावा ॥
जन्म मरण औ गर्भ बसेरा । कोटिन बार धरों तन फेरा ॥
जब कबीरको लेउं प्रवाना । तब मैं करिहों लोक पयाना ॥
जन्म मरण तब छूटे भाई । सतकबीर जब हृदय समाई ॥

व्यास सुखदेव गरुड उवाच ।

कहें व्यास सुखदेव गरुड आदी । हम सब तुम्हरे सेवक आदी ॥
आप तार हमहूं कहँ तारो । जन्म मरण हर मोर निरवारो ॥
तुम थोरे घर दस चौबीसा । इतन दुख हर धूनहु सीसा ॥
कहें सुखदेव मैं परऊं चौरासी । नामभक्त बिन परे जमफांसी ॥
सही निर्गुण बिन मुक्ति न होई । को हम सम तप करि है लोई ॥
सो तो हर चौरासी डारेहु । भक्तनकेर बाट तुम पारेहु ॥

विष्णु उवाच ।

कहें विष्णु मैं करों का भाई । निराकार जैसे फरमाई ॥
पाप पुण्य कछु नहिं जानो । पितु आज्ञा मैं सिरपर मानो ॥
नहिं मानों तो मोहिं धर खाई । काह कहौं कछु कहत न जाई ॥
पिता निरंजन बड हर भोगा । दुखित सबे हिहुं पुरके लोगा ॥
जन्म मरण सब कोइ अरूझा । बांचे सतकबीर जेहि सूझा ॥
सतकबीर जेहि होय सहाई । ताके वारन बंके भाई ॥
पाछे रामचंद्र मैं रहऊं । पितु आज्ञाते जन्म लियऊं ॥
धन मम तिरीता निरंजन काला । सबहिं खाय सुतकरे विहाला ॥
कर ब्याह बन पठइन मोही । पुन बन विपत दीन्ह बहु द्रोही ॥

कोटिन जीवन हतन करावा । सब फल दे मोहि नरक भोगावा ॥
लोहड रूप धर मोहिं चेताऊं । केते रामचंद्र लख पाऊं ॥
तब रघुनाथ देह वन तेजा । देह गुप्त धरनीमह भेजा ॥
लैगौ दुलन निजपतिधामा । भक्ष कीन्ह तब राखेउ नामा ॥
कृष्ण नाम धर कथेऊं बामा । देह धरे व्यापे अघ कामा ॥
राजा मनु तब कीन्ह बहूता । करता होहु हमारे पूता ॥
तब मोहि कहा निरंजन राई । दशरथके घर जन्मो जाई ॥
तब जन्मेंउं कौसल्या पेटा । गरजत कहायेउं दशरथ बेटा ॥
तहँ बहु दुख सुख चिंता परऊ । अब कृष्ण देउ मजुरी दियऊ ॥
द्वापर केलि करहु तुम भाई । देवकी वसुदेव घर जाई ॥
जो मनु भये सो दशरथ राजा । जो दशरथ सो नंद बिराजा ॥
केकई देवकीके घर जाये । प्रेम भकतवसा नंद घर आये ॥
नंदके घर कृष्ण अनंदा । पै कचा सुख तन यह गंदा ॥
कछु दिन सुख बहुते दुख दीन्हा।लडत बधत जिवघात बहु कीन्हा॥
टीका पुरे यदुवंश मरावा । गोपी सब मार जाट लुटावा ॥
तब मोहि व्याधा हाथ मरावा । बहुर बौध रूप फरमावा ॥
कर ताको आज्ञा सिर मानी । बौधरूप जग धरायउं आनी ॥
जैसे गऊ हत्या काहु लागे । रहै मस्ट तीरथ व्रत भागे ॥
काहिनकी मारेहु ब्राह्मन भांटा । और अनेक जीव तुम काटा ॥
परनारीसे तुम रति कीन्हा । कहा जताय जात जू लीन्हा ॥
आप कहायऊ सिरजनहारा । ताते विष्णु चौविस तनधारा ॥

जब हत्या छूटे हरि केरा। निहकलंक औतार साधु बस चेरा।
चारों जुग आयेउं कइ बारा। जुग जुग२ आय धरेव औतारा॥
मैं तो बोइल देव पितु पाहीं। मैं कस न बोइल जीवपै चाही॥
बोइल न छूटे कोट उपाईं। कोट अनेक जिन सांसत पाईं॥
जो मैं करों सो पिताके आज्ञा। तापर श्रेष्ठ सो सद्गुरुसंगा॥
सद्गुरुके संग कंपे काला। सद्गुरु सत्तकबीर दयाला॥
कर्म भोग फल सब जिव पावे। क्यों नहिं सुखकी राह चलावे॥
वेद शास्त्र सब तनकी वाणी। करनै चले वाट पहिचानी॥
चित सोईं जो पर उपकारी। नार सोई पिव दरश अघारी॥
सोईं शिष्य गुरु शब्द जो माने। सोईं पुत्र पितु सेवा ठाने॥
सोईं बहु जो सास सहेली। खसम सहेली सो वेलि चमेली॥
पुत्री मातसे दुतिया वाणी। तम फल बीज जो बोवे प्राणी॥
औरहिं देय जो भोजन करहीं। सो प्राणी वैकुंठे तरहीं॥
भूखे अन्न प्यासेको पानी। नांगे वस्तर देय सुखखानी॥
सुखी सोईं जो पर तन पोषे। आनहि वंचित पावे सोइ मोषे॥
कोट जग्य पुण्य फल पावे। कसाई सो जो गाय छोडावे॥
काहु जीव सो द्रोह न करई। जीवद्रोह कर नर्कै परही॥
भूखा विष्णु अन्नजेंवावे। गऊ कोट मुक्त फल पावे॥
सकल देह व्यापे सतनामा। रमता राम सकल विश्रामा॥
विष्णू बडे भागते होईं। विष्णुपंथबिन तरे न कोई॥
द्ढ बांधो सतभक्त कबीरा। औ जस खेती पान शरीरा॥

विष्णूके भक्त लावनी होई । खेतंगी माता भक्त बिलोई ॥
उसर भक्त आये शिवकेरा । ब्रह्मा भये अपूज्य सकेरा ॥
भूतनी डंकनी भैरो काली । यह जीव अघखानी जंजाली ॥
सवा लक्ष जिव नित प्रति चाही । निरंकार तर भोजन खाही ॥

दोहा—क्या पापी क्या पुण्य कर, काहू न छांडे काल ॥
सवा लक्ष जिव रात दिन, नित खाहीं निराकार ॥

पापी घींच नरकमें दीन्हा । पुण्यी जीव चूस सो लीन्हा ॥
ज्यो नरको भोजन है नीका । खाय जुडाय तपन गई जिवका ॥
तैसे काल चवावे रस पुन्नका । पुण्य क्षीन तब जीव भये सुन्यका
थुथक लीन्ह सीठ जब भयऊ । दूतन आन चित्र पंह दियऊ ॥
सुचि बचाय जमावै धाई । पाप पुण्यके लेख चुकाई ॥
चित्र गोपित्र कह ले कछु बांचा। सब फांसिक देवन घर जांचा ॥
तब जत पुण्य बांच सो दीन्हा । डारेउ नरक जन्म संग लीन्हा ॥

दोहा—पुण्य करावे छलके, जीवनको निराकार ।
पुण्य चूस ले आपनो, जीव नरक ले डार ॥

कबीरके शरण कालते बांचा । कबीर शरण बिन जमघर नाचा ॥
यह कछु बात कहनकी नाहीं । रही सोच मनही पछताहीं ॥
जेहि लख परे गहे गुरु पूरा । कबीरको मनुष कहे कोइ कूरा ॥
सुखदेव सुनत मगन मन भयऊ । व्यास पितासो विनती कियऊ ॥
जन कबीर देहु गुरु मोरा । सत्त कबीर रक्षक बंदीछोरा ॥

व्यासदेववचन।

कहैं व्यास अस साहेब नीका। जमके आस मिटे जो जिवका॥
ठाकुरसो विनवैं सुनि व्यासा। कौन कबीर आवे तुव पासा॥
जब मैं सुमरौं दीन दयाला। सद्गुरु कबीर प्रगटे कृपाला॥
कहैं व्यास तुम ठाकुर मोरा। बेग मिटाव कबीर बंदीछोरा॥
सुखदेवके मन उपजी इच्छा। कबीरकेर मैं लेऊं दीक्षा॥
दान पुण्य बहु तीरथ जोगा। सचनाम विन भये सब रोगा॥
माया मोह कछु काम न आवे। सद्गुरु विना नर नरक सिधावे॥
धन सद्गुरु सतनाम कबीरा। जम जालिमको मेटे पीरा॥

विष्णु वचन।

कहा विष्णु महाविष्णु सो जाई। महाविष्णु निरंजन राई॥
सुखदेव व्यास औ देव अनेका। कबीरहिं सद्गुरु किये चहे ठेका॥

निरंजन वचन।

कहैं निरंजन गुप्तहिं राखो। कहु काहूके आगे न भाषो॥
कबीर जोगजीत औतारा। तिन तो सीस हमारा मारा॥

दोहा--मैं अष्टंगी ग्रासेऊं, जोग हने मम शीश।
रूप रेख विन भयउं तब, नाम मोर जगदीश॥

जेहिते कूर्म विनै शिर नाई। कोट विनति कै सीस दिवाई॥
मोर सीस देहौ सच कबीरा। तबते डर थरहरे शरीरा॥
जो कोइ सत्त कबीर पथ चहई। तेहिमें आपन माथ निरबहई॥
सद्गुरु कबीरकेर यह रीती। शरण गहे तेहि नहिं बेप्रीती॥

कोट जनमके पापी होई । भ्रमे तीर्थ अघमल चहे धोई ॥
पाप न छूटे कोट उपाई । कहु हरि शरण पाप दुर जाई ॥
अघनाशक सतनाम कबीरा । जाके निहचल अजर शरीरा ॥
कबीर शरण जिव पहुँचा चाहे । पैत चला कछु रहे सो राहे ॥
और जहांलग जीव जहाना । सब कबीरके मैं गुरू बखाना ॥
जैसे गऊ गोरषिया राखे । पैसै गऊ कबहुं रस चाखे ॥
गोरस रास गऊ स्वामीके । सांझ सकारे छांछ महीके ॥
जैसे मैं कबीरके चेरा । कबीर पुरुष मम पिता सुखेरा ॥
मैं कपूत सब बंधु सयाना । वे सब निकट मैं दूर समाना ॥
मैं अपराधी दरश बिहूना । पुरुष दरश विन मंदिर सूना ॥
जहँ मैं रहों सुन्य तेहि नाऊ । तुम बिनपुरष सुन्य सब ठाऊं ॥
धन्य जीव जो सद्गुरु सेवे । सद्गुरु सेय परम पद लेवे ॥
परमपद सोई भवते न्यारा । भौसागर तुम कष्ट अपारा ॥
तीन लोक तव करिहों राजू । जब कबीरसों करिहों साजू ॥
हमरे पिता त्रिगुणके आजा । सतकबीर सुमरै जिव काजा ॥

दोहा–जो समर्थके जीव हैं, सो नाम कबीरके लेंय ।
तिनकी सेवा तुम करो, सुफल कबीर कहैं सेय ॥

सुनके विष्णु कृष्ण औ रामा । पुलकित भये तब विष्णु सुजाना ॥
पूछा निरंजन कस खुशियाला । कबीर नाम सुन गात रिसाला ॥
कहैं विष्णु हम अति पुलकाने । हमपर दया कबीर बहु ठाने ॥
कहैं निरंजन तेहि बड भागी । दीन्हो जाय कबीर सोहागी ॥

कहैं निरंजन विष्णु सपूता । सवा लक्ष भक्ष देहो पूता ॥

विष्णु वचन ।

कहें विष्णु सब तुम्हरी दाया । नित्य काट देउं आपन काया ॥
इक आज्ञा प्रभु मोकहूँ करहूं । मैं सद्गुरू कबीर पग धरहूं ॥
गुरुकी भक्त मात पितु सेवा । साधुसेवा फल बैठे लेवा ॥

निरंजनवचन ।

कहें निरंजन मन हर्षाई । सद्गुरु करो कबीरको जाई ॥
सद्गुरु प्रगट दुनिया दिखलाई । जाते लोग न जाने भाई ॥
यह सब समुझ बूझ हर्षाये । जाय सबन सानंद सुनाये ॥
अब तुमसब मिल राधहु ध्याना । हमहूं सत्त कबीरहि जाना ॥
कबीरके ऊपर और नहिं कोई । आप कबीर पुरुष हैं सोई ॥
तीन लोक सबते अधिकारा ।जोत स्वरूप निरंजन निराकारा ॥
सेवक सम लघु आपहिं जाना । एक कहिन कोउ बहुतक जाना॥
कबीर भजे सो मोहि गुनदाना । सत्त पुरुष निर्भय निर्वाना ॥
प्रगट राम कृष्ण निराकारा । सब मिल गुप्त कबीर अधारा ॥
अमी बुंद सो सत्तकबीरा । विषय निरंजन नीर शरीरा ॥
प्रेम भक्त नहिं छिपत छिपाये । गुरुसो अधिक कौन अस जाये
सरगुणके प्रेमाधिक गुरूवा । जन्मत मरत भये अति हनूवा॥
सत्त कबीर अखंड सुखदाता । तिनके भक्त दुख जाय निपाता॥
जो कबीर कहिहै सो करई । गुरुकी दया मात पितु तरई ॥

विष्णुवचन ।

कहैं विष्णु तुम धीरज धरहू । सब मिल स्तुति कबीरके करहू ॥
कहैं कृष्ण सुन सुखदेव व्यासा । कहहूं चौरासी करे विलासा ॥
डारत निरंजन मोकंह चोरासी । सत्त कबीर काटे जबफांसी ॥
दस चौबीस जन्म भौ मोरा । दया कीन्ह कबीर बंदी छोरा ॥
तुम सब भ्रम आये चौरासी । चौरासी दुख कहुं संग यासी ॥
चौरासी कर लेतहिं नामा । सुखदेव व्यास त्रसित अति जामा
कहैं कृष्ण तुम काहे कंपे । मुर्च्छित होय धराणि किमि चंपे ॥

व्यास सुखदेववचन ।

कहैं व्यास सुखदेव सुन रामा । का तुम लेहु चौरासी नामा ॥
नाम लेत चौरासी केरा । अबही कंप उठा जिव मेरा ॥
चौरासी लक्ष योनि दुखरासी । मम अरिजनसों परेउं चौरासी ॥
चौरासीका सुनहुं विलासा । पंछी योनि जम लावहिं फांसा ॥
लेय बझाय उखारिस पांखी । पांव टोर लेसी बस आंखी ॥
कोइ दुइ चार दिवस यह हाला । काहूकेर तुरत होय काला ॥
भूंज २ कर तेहि फिर खाई । काहु तरे काहु भूंज पकाई ॥
जाहि मार जो करे अहारा । सो तेहि मोर सौ २ बारा ॥
हमहु हारिल सुवना भयऊ । लासा लगायबझाय जमलयऊ ॥
जीवत एक २ पंख उखारेसि । जियतहिं प्राण बाज सुखडारेसि ॥
तीसर दिन जिव निकसे भाई । घर२भिन्न जीवत कट जाई ॥
यह संक्षेप कष्ट बरणाई । सज पंछी तन भरमेउ भाई ॥
शीत ऊष्ण सहि भवन बिहुना । पत्थर मार करे सब चूना ॥

बरसे पानी बहे समीरा। तरुवर डोले अतहि गंभीरा ॥
चरन जाउं डरपों दिन राती। जस मंजर टोरे कोइ छाती ॥
भयउं वृक्ष तब छीले छाला। कोइ जर काट करे बेहाला ॥
गउ भयेऊं तब दुख कछु थोरा। पुन्नमान गउ वृक्ष अंजोरा ॥
बकरा भया चला बल देने। फांसी लगाय गरा गहि लीन्हे ॥
खैंचे जाय बेदरद कसाई। भोथा शस्त्र सो गला कटाई ॥
अधमरा काट दिहिस मोहिडारी। छूटे न प्राण महादुख भारी ॥
लेकर विप्र गये घर अपना। काटेसि गर छिन मिटी कल्पना।
चील्हर भयेउं बसेउ तेहिमाहीं। टोय निकरेसी रुधिर पियाही ॥
मलत २ मारेसि अध मरके। दीन्हेसि डार हाहूतमह धरके ॥
बडे कष्ट छूटा तहँ प्राणा। सर्पखान जिव जाय समाना ॥
जहँलग सर्पखान जो जितनी। भमैंउं सब अजगर अघजोनी ॥
अजगर तन अतिभये मितभारी। लूक आग तन निशिदिन जारी ॥
भूखन मरही प्यासन मरही। तेहिपर अष्ट काल निशि जरही ॥
भारी देह चला नहिं जाई। दलमें परे अहार भक्ष खाई ॥
दस हजार कोइ बीस हजारा। सहस्र पांच शत कोइ जियारा ॥
अस जीवनसो मरना भले। पाख बीते कछु भोजन मिले ॥
जिया जंतु जो सोहें धावे। स्वास संग खैंचि मुँह आवे ॥
महाकष्ट दुख अगम अथाहा। धन्य गुरू जिन तह निरवाहा ॥
सरगुणके गुरुको क्या देशा। सोई देय कहुं पास जो जैसा ॥
निर्गुण भक्त विना गत नाहीं। मिला कबीर सब त्रिखा बुझाहीं॥
और सुनहु चौरासी पीरा। भिष्टा माहिं भयऊं तब कीरा ॥

मर भिष्टा मह फिर तन धरईं । सत्तनाम विन भर्मत फिरईं ॥
नरक भषहिं औ नरक निवासा । भिष्टा सेज भोग कविलासा ॥
भिष्टा कीराते सूकर भयऊं । चमकत फिरों नरक भष रहऊं ॥
भयउं श्वान तव हाड टटोरा । भिष्टा भखी जन्म दुख झोरा ॥
एक दलिदर मोकहँ पाला । सीसलाय पालेसि मोहिं काला ॥
पुष्ट भयऊं अहार जब बाढा । पापी भक्ष देन तब छांडा ॥
आप खाय भर पेट अघाई । ग्रास एक मोहिं देय ललचाई ॥
खाय पेट भर उठे तब झारीं । कबहुँक देय ग्रास एक मारी ॥
ताते श्वान पाले मत कोई । जो पालै सो भक्ष देय सोई ॥
भक्ष नहीं देय परे अघखानी । सबमो एके राम बखानी ॥
भयऊं वाघतबकियेऊंतनघाता । मैं नहिं कीन्हसो कीन्ह विधाता ॥
करता काल करावे आपे । जीव श्राप हे अघ अस्थापे ॥
कर्ता काल निरंजन स्वामी । गढे भरे तन अंतरजामी ॥
जीवहिंदुखसुख बहुविधि देही । सुख किंचित दुख खान भरेही ॥
सतकबीर हैं सबके मूला । तिनके भक्त मिटे दुख शूला ॥
पुनि मैं भयउं सिद्ध अघ ग्रासी । सरे ढोर ग्रासेउं अघरासी ॥

दोहा—और कहां लग बरणों, चौरासीदुख मूल ॥
सत्त कबीर मिले जब, मेटे सब दुख शूल ॥

कहैं कृष्ण हम नीके जाना । हमहूं लेब कबीर प्रवाना ॥
हमहुं पिता सो विनती कीन्हा । पान लेन कहँ आज्ञा दीन्हा ॥
सतकबीर जब दाया करहीं । आपन जान मो देउ धारही ॥
यह कह उत्तर दिशि शिर नावा । नारद मुनि तब बात चलावा ॥

नारद वचन ।

प्रभु तुम कहेउ प्रथम हम ईशा । पुन बूझा तो निरंजन सीसा ॥
सीस जाय अब अंते लागा । सत्तकबीर सीस अब जागा ॥
बिन कबीर मुक्ति जिव नाहीं । योग यज्ञ बहु जतन कराहीं ॥
यह दंडवत तुमकाकंह कीन्हा । ताकर मोहि बतावो चीन्हा ॥

विष्णुवचन ।

सुन नारद हरि कहें बुझाई । गुरु पितु मात साधु सिर नाई ॥
सतकबीर कहँ कीन्ह प्रणामा । आय दरश दीजे सुखधामा ॥
कबीरके शिष्य राजा निरमोहा । ताहि प्रणाम कीन्ह बहु छोहा ॥
धन्य राजा निरमोहकी वाणी । हर्ष विशेष कछु लाज न हानी ॥

नारद उवाच ।

कह नारद मैं देखों राजा । तिनके दरश होय मम काजा ॥
धन्य निरमोह जेहि कृष्ण सराहा । उनके दरश करों चित चाहा ॥
आज्ञा करहु जो श्रीयदुराई । तो निरमोह दरश कर आई ॥
आज्ञा किये दरश गये करहू । दरश निरमोह जियत जिव तरहू ॥

राजा निरमोहकी कथा ।

चले ऋषी दरश निरमोहा । सभा निरमोह तर गये निरमोहा ।
नृप निरमोहके एकहिं बारा । गयेउं कुटम चार सुत बारा ॥
नारद जाय द्वार होय वैसे । संसै शूल भूप घर जैसे ॥
सुंदरी एक अब कहा बुझाई । नृपकर सुत नियते मर जाई ॥
लै संदेश नृप सुतके आयऊं । भये परले ऋषि रैार करायऊं ॥

रोवत नारद सुंदरी उठ नाची। कहे सुंदरी मरना दिन सांची ॥
कहें नारद सुन सुंदरी पापिन। नृपसुतहतन सुन हंसस कस पापिन
सुन्दरी कहे संगत मम ऐसी। हाटबजारकी सौदा जैसी ॥
एक दुकान गहकी दस मिला। सौदा लेले चले अकेला ॥
को केहि लाग करत है सोगा। अस हम निरमोही लोगा ॥
नारद ज्ञान सुनत मन मूर्च्छा। बहुर नारद सुंदरी कह पूछा ॥
राजहि केर सुभाव जस तोरा। की घट घट सहि कहु रोरा ॥
सुंदरी कहे देख ऋषि आंखी। निज चक्षु देखि कस साखी ॥
यह कह सुंदरी मंदिल पैठे। सुनि जहँ तहँ जहां जो बैठे ॥
कहे सुंदरी द्विज आये द्वारे। उन संदेश कहि कुंअरही मरे ॥
सुन राजा रानी सुत नारी। निरत करत आये सब द्वारी ॥
नारदऋषि कहँ कीन्ह प्रणामा। कहें ऋषि तुव सुत हरि लिये रामा
सुनत वचन ऋषिराय अनंदा। गांवहिं मंगल लाग करंदा ॥
राजा कहे लाव निरत काली। गावत कुंअरके खाट निकाली ॥
राजाकी रानी उठ गावे। कुंअर बधू सेंदूर चढावे ॥
पायक महाउत आय धाई। मंगल गावहिं गाय बजाई ॥
गावहिं मंगल हंस चलावा। महा अचंभो नारद आवा ॥
नारद उठ राजहि संबोधा। रानी कुंअर बंधहिं प्रबोधा ॥
तुव सुत मृत्यु वचन हम बोले। पै तुव सबके वदन न डोले ॥
कैसे तुम सब हृदय कठोरा। पुत्र मृतुक सुनकरहु न रोरा ॥
सही राजा तुम बडे धर्म धीरा। पुत्र मुये कर राज प्रधीरा ॥

नृपति वचन ।

कहे नृप ऋषिसो कहें सो सांचा । राज करनको देही कांचा ॥
हम सबके संगत दिन चारा । मरनो रोर न धन बित धारा ॥
आन मरे तो रोइये भाई । मरन आप अमर रहि जाई ॥
गुरुमुख मरे रोवे नहिं भाई । साकट मरे विकल होय जाई ॥
गुरुमुख भये कालभौ नासा । साकटके गले जमको फांसा ॥
बहुरि समुझ ताही नहिं रोई । दाया सतसाहेबके होई ॥
सतसाहेब सतनाम कबीरा । तिनके हम सेवक रणधीरा ॥
हमरे साहेब यह कह दीन्हा । जीव मुये चिंता नहिं कीन्हा॥
चिंता सोइ सुमरिये नामा । सब चिंता मेटे सतधामा ॥
जो आये हमहू तन धारी । रहे न कोइ राम कृष्ण नरहारी ॥
गुरुसेवा सोई शुभ कामा । और सकल जग काम अकामा ॥
गुरु जब मिले सद्गुरु पूरा । जीव बचावे जमसो सूरा ॥
जालिम काल निरंजन बांका । त्रिय देवा निस लावहिं आसा॥
सबकहँ खाय निरंजन राई । बांचे सत्तकबीर लौलाई ॥
ऐसे संगत हमरे स्वामी । कैसे संगत कहु नृप नामी ॥
कहें निरमोह सुनो ऋषिदेवा । उतरें पार लोग एक खेवा ॥
जो जहँके तहँवा चलि जाहीं । कोउ काहूको पूछत नाहीं ॥
आपन २ समर्थ साथा । आदनाम समर्थ सुखदाता ॥
समर्थ गुरु साधुकी सेवा । तजे आस सब देवी देवा ॥
तीर्थ व्रत तप योग यज्ञधर्मा । गुरु विन मरे कालबरवंधा ॥
गुरु सोई जो अंतहु मीठा । जन्म मरण गुरु लागिह सीठा ॥

पुन नारद रानीकहँ पूछा । सुत बिन तोर गोद भयो छूछा ॥
गुरु बिन राम नाम नहिं पावा । रामचंद्र गुरु नाम लखावा ॥
कहैं रानी गहुं नृपके पाऊं । छूछा सोईजो गुरु न कराऊ ॥
गुरु बिन राम नाम नहिं पावा । रामचंद्र गुरुनाम लखावा ॥
हमरे स्वामी सिरपर आहीं । गुरु साधन बल हर्ष कराहीं ॥
कहा ऋषी तैं डाइन आही । तेही पुत्र खाय निज चाही ॥
सही ऋषितैं निहचे यह भाषा । ऐसी बोले सहे तुव साखा ॥
मात पिता जो सुतकहँ खाले । कहु जन्म छटी प्रतिपाले ॥
जैसे निरंजन पाले घाले । ऐसी चाल तुमहिं कहँ चाले ॥
हमरे साहेब सत्तकबीरा । अमित भाव तेही अजर शरीरा ॥
सो पालक घालक निराकाला । ताहिमिसल तुमतो अस चाला ॥
निरंकार बहु तन धर मूवा । पुरुषके वंश निरंजन तूवा ॥
दश अवतार महा ठगपाला । हरि हर अज धर खाये काला ॥
कबीरके हंससे काल निनारा । सो पहुँचे सतपुरुष दरबारा ॥
सत्त पुरुष सोइ सत्तकबीरा । कोइ जन भूले देख शरीरा ॥
ऐसी मम संगत ऋषिराई । कैसी संगत कहहु बुझाई ॥
जश पंछी लिये वृक्ष बसेरा । चुगन चले जित कित तव फेरा ॥
को केहि पूछ कुशल औ क्षेमा । ऐसो पुन निरमोह व्रत नेमा ॥
पुन नानाविध भावना कीन्हा । एक रती कछु मोह न चीन्हा ॥
नारद पूंछा कुंअर बियाही । तुव मन बहुर जारके पांही ॥
कहैं बहुर नृपके सिर नाहीं ।सास वंद गुरु स्वामी सुख चाही ॥
हमरे स्वामी मुवा न मरि हैं । तजके देह अमर तन धरिहैं ॥

सत्तलोक सुख अमृतखानी। एके संग रहब दोउ प्राणी॥
तुम्हरे वंश होइहै रांडी। कंथ वेमुख धगडन सो मांडी॥
मैं पतिव्रता सद्गुरुके चेली। श्राप देऊं तो साध मत हेली॥
एक कहों सो सब सुन राखो। प्रातिहि नारद मुख नामन भाषो॥
नारद कोप कीन्ह परनामा। मोपर कोप न कीजे बामा॥
जाकर स्वामी मर जग जाई। सुनतहीं रोर करे चिल्लाई॥
कुंअर वध कहे सुन ऋषि मुर्षा। रोय जिये तो मरे न पुरुषा॥
मरे सोइ जो गुरु नहिं कीन्हा। हमरे शिरपर समर्थ चीन्हा॥
जेते दिन। लिखा एक संगा। वोही जोत महँ धसत पतंगा॥
ऐसी संगत हमरे पाडें। अस सोइ करे ज्ञान जेहि माडे॥
कैसी संगत तुम्हरी बाला।जसपनिहारिनकलशभरि चाला॥
दस घरकी तब एकहिं ठाईं। कलश भारि २ लीन्ह उठाईं॥
घाट पंथ जित तित भईं नारी। ऐसी संगत ऋषी हमारी॥
ऐसी समय कुंअर चलि आये। नारद मुख देख कारिख आये॥
कुंअर उतर कीन्हे प्रणामा। परम गुरू पितु मात द्विज रामा॥
नारद कुंअरसो बिनती लाई। हम यह दरश एक बात जनाई॥
मिथ्या वचन कहा हम आई। तुम्हरे मुयेकी खबर जनाई॥
कोइ तोह लाग रोवे नहिं भाई। तुव मृतु सुन सबगती कराई॥
कहें कुंअर रोवे किहि काही। जो रोवे मरना पुनि ताही॥
मुये कारण नहिं रोइये स्वामी। तब मृत्युका गाडे प्राणी॥
मुये चलावा मंगल गाइ। गुरू साधुकी सेवा लाई॥
अन्नदान कंचन दिज जाना। मृतुका पहुंचे गुरु निज धामा॥

अविनाशी राम सोइसत्त कबीरा। सो मम सतगुरू अजर शरीरा॥
ऐसी संगत हमरी पांडे। हम सब जीवहिं जाने भांडे॥
कहो कुंअर अस संगत तोरी। सुनहु ऋषी अस संगत मोरी॥
जैसे पथिक बसे सराई। प्रात भये अपने पथ जाई॥
कोउ काहूको बात न पूछा। प्राण गये जस काया छूछा॥
हम सबके जीवन सतनामा। सतसंगत गुरू भक्त विश्रामा॥
नारद उठ परिक्रमा कीन्हा। तब नृप सुतहिं जो बैठक दीन्हा॥
ऋषी विनय कर पाक कराई। नाना व्यंजन परसे जवाई॥

दोहा-बिदा भये ऋषि नृपते, आप नगर महदेख।
हर्ष विस्मय ऋषि चित्तमें, कला निरमोह अलेख॥

एक चमार चलेउ पुर माहीं। सोई मृत्यु कहँ रोवत नाहीं॥
तहां जाव नारद भये ठाढा। कृत्य करत मृतुक ले काढा॥
तब ऋषि पूछा समरहि जाई। कस नहिं रोवस मनुष मराई॥
हाडी कहे रोवहिं केहि लागी। गुरु मुख होय मुअ अनुरागी॥
साकट मरे काल मुख जाई। गुरुमुख तनतज हरिपहँ जाई॥
राजा भयो कबीरको शिष्या। हम सब रामचरण चित लिख्या॥
राम भजे सो साधुकी चाली। मिला कबीर मिटा जंजाली॥
जो जन्मे तेहि मृत्यु कर लेखो। महितन अछत जियत ना देखो॥
जिन प्रभु दिया तिनहिं हरलिया। मरन जियनकी सोच न किया॥
ऐसी संगत आय हमारी। कैसी संगत कहो बिचारी॥
ऐसी संगति ऋषि मुनि मोरी। तिरबो अस जस लकडी जोरी॥

छूटे भँवर होय दोय दीशा। दोमहँ एक रोक नहिं दीसा ॥
कुशल काहुकहँ पूछहिं भाई। ऐसी संगत हमारि गोसांई ॥

दोहा सुन नारद अचरज भये, हरि पहँ कीन्ह पयान ।
हरिसे चरित्र कहा सब, धन निरमोह सुजान ॥

ऋषि उवाच ।

कहें ऋषि सुन दीन दयाला । नृप निरमोह जियत कलिकाला ॥
अस २ संत आहिं जग माहीं। धन्य जो सतकबीर जेहि छांहीं॥
अस मोहि दया करो भगवाना। वस्ती तज बन करहिं पयाना ॥
कुल परिवार झूठ हम जानी । सत्तनाम एक सार बखानी ॥

कृष्ण वचन ।

कहें कृष्ण बन किमि चलि जाहू । गुरुके गृह निज भक्ति कमाहूं ॥
हम ब्रह्मा सुत सब ते जेठे । जगमें और सकल मम हेठे ॥
कहें कृष्ण जो करता आवे । बिन गुरू ते उबार नहिं पावे॥
तुम कितने आहू किह माहीं । मम निरबाह गुरू बिन नाहीं ॥
गुरु बिन साकट प्रेत समाना । साकटके सिर जमको थाना ॥
धरती कहँ साकट है भारी । औ प्राणी भारी बेविचारी ॥
जस चंदा बिन रैन अँधेरी । तस साकट ले जिव जन घेरी ॥
रवि न दिवस ईश बिन सैना । गुरु बिन साकट अंध जन नैना ॥
बिन देवल देवस्थल जैसे । बिन गुरुके प्राणी है तैसे ॥
बिन दीपक जस घर अँधियारा। तस गुरु बिन साकट जम चारा॥
कहें नारद गुरु का कहँ करऊं । जेहिते तुम्हरे चित संचरऊं ॥

कहैं कृष्ण गुरु कर निरबंदा । नारी तजै तजै कुल दंदा ॥
विष्णव गृह त्यागीं वैरागी । ऐसे गुरुके शरणन लागी ॥
गुरु कबीर पंथतन धारी । सद्गुरुके सब जिव निस्तारी ॥
सद्गुरु सत्तकबीर निरबाना । जाके त्रास काल भय माना ॥
अब तो गुरु तुम प्रातहिं करहू । प्रात प्रथम मिले तेहि पग धरहू ॥

दोहा—नारद गवने निज मठ, प्रात जाय गुरु कीन्ह ।
मछवा मिले पंथ महँ, तासो दीक्षा लीन्ह ॥

दीक्षा ले वैकुंठ पगु धारे । हरिके आगे वचन उचारे ॥
गुरू कियापै जातके हीना । तुव आज्ञा मछवा गुरु कीन्हा ॥
कहें कृष्ण गुरु कहँपै लाऊ । अब ऋषि तुम चौरासी जाऊ ॥
वेगि जाहु तुम गुरुके पासा । अपने औगुण करहु प्रकाशा ॥
तब गुरु आज्ञा जैसी होई । किये निसतार सुनहु ऋषि सोई ॥
चले ऋषि तेहि जग महँ आये । बहुर तहां गुरु दरशन पाये ॥
चरण सीस दे बिनती लाई । मोहिसे अवगुण भयउ गोसांई ॥
कैसे अवगुण वेगि सो कहहू । गुरुसे कह अंतर अबकरहू ॥
गुरुसे कपट करे गुरु निंदा । साधु द्रोह नर यमके बंदा ॥
सुनत ऋषि थरहर पगु धरेऊ । केहि अवगुणसे प्रगट कहेऊं ॥
भयउ दया तुम दीक्षा दीन्हा । ठाकुर मोसन पूछन लीन्हा ॥
कहहु ऋषी गुरु कैसन कीन्हा । तब हम कहें गुरू कीन्ह कमीना ॥
ऐसे कहि हम वचन अधीना । हमरे जोग नहीं गुरु ध्याना ॥
औपै नीच जातपै आना । ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

यह सुन कृष्ण कहा मोहि सेती । जात मनुष गुरु कहे अनेती ॥
तुम ठाकुर कहो कौन सजाई । कहे नारद तुम कहो बुझाई ॥
कृष्ण कहा भरमो चौरासी । तब छूटे ऋषि यम गर फांसी॥
ताते तुम पहँ आयउँ स्वामी । कहो सो करहुँ मैं अंतर्यामी ॥
अब तुम कहो कृष्णसों जाई । क्षित चौरासी लिख दिखलाई॥
तब हरि लिखें पृथ्वी चौरासी । लोट पोट कर छुटे फांसी ॥
चले ऋषि गुरु कहँ सिर नाई । ठाकुरसे गये बिनती लाई ॥
लिख देव स्वामी मम चौरासी । बूझ लेव तब भर्मेउ दासी ॥
लिखा कृष्ण भूतल अघखानी । लोटहिं नारदमुनि बिलखानी ॥
कहे कृष्ण तुम यह का काहू । महि महँ लोट खेह तुम करहू ॥
भरमो चौरासी हरि सुन बैना । हरि भर आये जल धर नैना ॥
कहें ऋषी यह बुध किन दीन्हा । कहें ऋषी गुरु मोक्ष मम कीन्हा ॥
कहा कृष्ण अस गुरु परतापा ।गुरुसम जग हित नहिं पितुमाता ॥
पिता निरंजन गुरुसम मोरा । गुरु दुरवासा ऋषि गतघोरा ॥
सद्गुरु सत्तकबीर हमारे । कबीरके शरण इकोतर तारे

दोहा—कहें कृष्ण सुन नारद गुरु, बडेके द्विजराज ।
कह ऋषि गुरु सबते बडे, गुरू गरीब निवाज ॥

गुरुसम काहु न देख गोसांई । करता पितु जननी औ भाई ॥
गुरु हैं सबपर ईश गोसांई । कहें कृष्ण नारद समुझाई ॥
नारद ऋषि उठ चरणन लागे । श्रीपति तुम मोहि कीन्ह सुभागे॥
जो हम ब्रह्मा सुत बड ज्ञानी । गुरु बिन इतने बात न जानी ॥

धन्य गुरु अब धन्य सो कहिये। जासु चिन्हाये गुरुपद लहिये॥
प्रथमहि रजगुण गुरुकी महिमा। सुनहु सतोगुण गुरुकी महिमा॥
तमगुण गुरुकी कहहुँ सुभाऊ। देवी पंथकर चाल लखाऊं॥
देव निरंजन पंचम कहिये। जोत अकाश होय दरशन लहिये॥
छठयें जीव सतयें सतनामा। सत्यनाम संतन सुखधामा॥
संतके प्राण सब जीव सुखदाई। सोई सत कबीर गोसांई॥
एक जीव त्रिगुण दरशावे। इंगला पिंगला सुखमन भावे॥

दोहा-बाँये इंगला दहिने पिंगला, मध्यसुषुम्णा नार।
तापर मनपर मन निज मन है, सोई रूप हमार॥

निज मनपर सिंहासन साजा। तापर सत्तकबीर विराजा॥
तहँ न काल जंजाल न व्यापा। नहिं तहँ पुन्य नहीं तहँ पापा॥
तहां न रवि शशिके उजियारी। एक रोम विध कोट चिकारी॥
पांच पचीस तीन नहिं तहां। त्रिगुण न नाम कबीरसो जहां॥
रूप स्वरूप सो निर्मल काया। अजरहिंरम्बर हंस रहाया॥

दोहा-एक हंसकी शोभा, रवि शशि कोटन तूल।
तहां सो सत्यकबीर बिराजे, सब जीवनके मूल॥

पूरण पुन्यमान जिव होई। सतकबीर कहँ सेवे सोई॥
लखन कोट माहीं एक जीवा। सो करिहैं कबीरको पीवा॥
जेहि होय दाम सो खाय मिठाई। मकरा घांस रंक ले खाई॥
तैसे दाम सहज सतदाया। पूरण पुण्य सद्गुरु पद पाया॥
सद्गुरु सत्यकबीर जिव व्याही। जीव व्याह अमरलोकलै जाही॥

अमरलोक सुख बरणि न जाई। छिण एक महमें गये अघाई ॥
अजर मुक्त चाहे जो कोई। सो सद्गुरु कबीर शिष्य होई ॥
बिना कबीर सांच कहु नाहीं। तीन लोकसो आवहिं जाई ॥
सत्तकबीर सो सत्तनिवासी। सत्यलोक अम्मरपुरवासी ॥
जीव दयाको जन पशु धारा। दासा तन धरि शब्दपुकारा ॥
दास कहाय प्रगट भये काशी। शिष्य कहाय रामानंद विलासी ॥
संन्यासीसे भये वैरागी। रामदत्त रामानंद अनुरागी ॥
कबीर ब्रह्म आपन जगआदा। तिन गुरु कीन्ह बाध मरजादा॥
पाछे तब हमहूं गुरु कीन्हा। तब गुरु कीन्ह सबन भल दीन्हा।
रामानंद आनंद सरूपी। जन कबीर परमानंद रूपी ॥
रामानंद कला एक मोरा। सत्यकबीर समर्थ बंदीछोरा ॥
बडा नवे छोटा अभिमाना। शीतल ज्ञानक्रोध अज्ञाना ॥
ताते अमरपद चीन्हे भाई। सुपंथ चले सो कबीर घर पाई।
कछु सुपंथ कछु पंथे चाहे। सो तो रामचरणचित आहे ॥
झूठे लंपट चोर छिनारा। यह लक्षण रजगुण निरवारा ॥
क्रोध कपट पाखंड बडाई। यह तम गुण जीव दुखदाई ॥
सतगुण सत्त कपट नहिं भावे। प्रेम भक्त गुरु दरशन पावे ॥
गुरुदर्शन प्रभुदर्शन मानो। साधु दरश गुरु दरश बखानो ॥
सत्तकबीर सतगुणके मूला। उनकी पटतर कोइ नहिं तूला ॥
और सबे छल छुद्र समाना। रागद्वेष मान अभिमाना ॥
कहैं कृष्ण मोहि मन वच सेवे। हरदम नाम हमारा लेवे ॥

दया क्षमा सत गहे सो पंथा । दीन दुखी पालक भगवंता ॥
गुरु साधमहँ मोकहँ देखे । घात द्रोह तज पंथ परेखे ॥
मेटो आप मृतककी नाई । प्रेत पिशाच असुर औतरई ॥
रहे जो पुण्य सो प्राणी । रामनाम भज नरतन जानी ॥
नरतन पाय जो भजे कबीरा । कबीर भेंट मिटे तनपीरा ॥
शिव तमगुणकी भक्तिजो करई । प्रेत पिशाच असुर औतरई ॥
देवि भक्त चौरासी बासा । भक्त करे तन परे यम फांसा ॥
शूकर श्वान गिद्ध मंजारी । परे चौरासी मांस अहारी ॥
दिन रस चेटक भूत मसाना । नामभक्त बिन यमघर थाना ॥
जाहि ज्ञान जाके मन थाका । आतम परमातम पंथ ताका ॥
परआतम सब आतम कीन्हा । बिरलेआतम परमातम चीन्हा ॥
जिन चीन्हा तिन्ह सद्गुरू सेवा । सद्गुरु सत्तकबीर निज भेवा ॥
नारद मगन भये सुन वाणी । धन्य कबीर जो कीन्ह बखानी ॥

अर्जुनउवाच ।

अर्जुन पूंछे सीस नवाई । अबलग हम नहिं पूंछ गोसांई ॥
को कबीर कहवाते आये । जाकी ऐसी स्तुति लाये ॥
भक्त कबीर जो रहे एक तोरा । तुमते कौन बडा सुन मोरा ॥

युधिष्ठिरवचन ।

कहैं युधिष्ठिर सुनहु महिंद्रा । गुरु साधकर जितकर निंद्रा ॥
गुरुके निंदा साधुके खोटी । जुरेनसे जन बस्तर रोटी ॥
ताकर वंश होय निर्वंशा । जो साधूके निंदा परसंसा ॥

भीम वचन ।

कहैं भीम अर्जुन भल कहा । सुना कबीर जुलहा एक रहा ॥
ताकी एतिक करे बडाई । तब सहदेव बोले रिस आई ॥
तुम कबीर कह सके बूझा । अबहिं तोहिं गुरुमत नहिं सूझा ॥
कबीर नाम करता अविनाशी । कबीर भजे तेहि छूटे चौरासी ॥

नकुल वचन ।

कहे नकुल भक्त कहा गोसांई । जेहि प्रभु तारे सो तर जाई ॥
सुनिके कृष्ण कहा सुन भीमा । अर्जुन पढे तिनहु नहिं चीन्हा ॥

दोहा-सोई कबीर तुम चीन्हहू, जेहि शिष्य घंट बजाय ॥
द्वापर भक्त सुदरसन, डोम स्वपच बरणाय ॥

कबीर सोई जाको अस शिष्या । हम सब जीव कबीर घर भीषा ॥
जोलहा आद जासु जगताना । सुरझे साध साकट अरुझाना ॥
चंदसूर जाके दोय तारा । करि गह काया बिनहि रिसारा ॥
इंगला पिंगला चले दोय घोटी । मध्य सुषुम्णा हांथ जोटी ॥
सरसों तीन साठ लग जानी । अर्ध उर्ध दोय खूंटी तानी ॥
तानी ताना भरनी सुत स्वासा । निहचल बिनहि कबीरा दासा ॥
धरती अकाश पवन औ पानी । रचा कबीर सकल रजधानी ॥
फिरहिं जगतमहँ आप छिपाये । भक्त मुक्त पथ इनहिं चलाये ॥
जासे तबहिं निरंजन राई । हम तुम कौन गलीमहँ भाई ॥
संकट माहिं कबीर सहाई । बंदी छोर कबीर गोसांई ॥
करताका कोइ अंत न पावे । तरे सोई जो भक्त कमावे ॥

अर्जुन भीम कृष्ण पग लागे। निहचल सोयते अब जागे॥
कृष्ण युधिष्ठिर कहैं इसारा। अधम उधारन नाम कबीरा॥
राम नाम कबीर प्रकाशा। राम कबीर दोय एक अवासा॥

युधिष्ठिर वचन।

कहैं युधिष्ठिर सुनहु स्वामी। आज कहौं तोहिं अंतर्यामी॥
जा दिन कहा तुव पुर्षा तारे। बुडे नरकते जाय निकारे॥
तब तुव आज्ञा शिरपर राखा। बांये अंगुली नरकमहँ नांखा॥
पांव पकड मोहिं पित्रन खैंचे। नाम कबीर सुमर तब बांचे॥
और नाम बहु सुमरेहुं भाई। तजहिं न पित्र मोहिले जाई॥
तब मैं सत्तकबीर पुकारा। ततछिण भयउँ नरकते न्यारा॥
तबसे हम कबीरको चीन्हा। कबीर कहत भये अघते भिन्ना॥
जबहिं हम युधिष्ठिर ऐसी कहा। तबहिं कपिलमुनि उठकर गहा॥

कपिलमुनि वचन।

धन्य युधिष्ठिर कह दुलराये। तुमहु लख कबीर कहँ पाये॥
कबीर आप हैं समर्थ सांई। जाकी रची सकल दुनिआई॥
आपन बडाई विष्णुहिं दीन्हा। आप दास भये अस अधीना॥
एक दिन व्यास निरंजन ईशा। औरहिं भया चितवे मम दीसा॥
सवा लाख सँग पहुँचे जाई। सूरी देंय यम चला गोसांई॥
तब कबीर कहँ कीन्ह चिकारा। छिन्य२ के मोहि निरंजन डारा॥
दूतहिं कहा हंस केहि आना। भाष बेग नतो करों निदाना॥
बोला श्रीहर दूत होय आगे। डरहिं दूत सब कांपन लागे॥

इन नाहिं कीन्ह कबीर पुकारा । निरखत जोत तहां हम मारा ॥
यहां आय कबीर गोहराये । वहां जोगके गर्भ भुलाये ॥
जोग भोग नहिं जानो भाई । कबीर नाम भज काल न खाई॥
तबहिं निरंजन दूतहिं बुझावा । यहि धारि डार तुरत तब नावा ॥

दोहा-इतना कहा निरंजन, तत्क्षण प्रगट कबीर ॥
किन मम हंस दुखावा, केहि भारी भौ शरीर ॥

दूत अंध भय पेल पराने । चल न सके बलहीन तुलाने॥
देख कबीर निरंजन नीरा । धाय कबीरके चरणन गीरा ॥
थरहर कहे चूक नहिं मोरा । अलग हंस बैठारउं तोरा ॥
सतकबीर मुनि कपिलहि पूछा । कहा कपिल कुछ नाहिं बिगूचा॥

दोहा-तब कबीर दाया करि, मोहे ले चलेउ लिवाय ॥
कहे काल मैं चेरो ते ये, तुम राखो मम ठान ॥

तब हम कबीर उर धारा । कहे कबीर भये जमते न्यारा ॥
कहे कपिल मुनि सुन हो भीमा । धन्य कबीर निरंजन सीमा ॥
जहां निरंजन कहँ सब धावे । वहां अंत जीवन झरकावे ॥
कहें कपिल मुनि सुन सहदेवा । बिरले पावे कबीरको भेवा ॥
अब हम लेब कबीर प्रवाना । भज कबीर निज घरकहँ जाना॥
सुने कबीर के महिमा भारी । इच्छा दरश सबन चित धारी ॥
अर्जुन विनाति कृष्णसों करही । हमहूं सतकबीर पग धरहीं ॥
कहे कृष्ण तुम हमहीं चीन्हा । अनही कस साहेब चित दीन्हा॥

हम कहँ तुम मानुष कर जाना। तुम नहिं वचन हमारा माना ॥
अर्जुन कह तोहे मोहन छूटा। मोह मार सिद्ध मुनि लूटा ॥
जेठा बडा जो कहे सिखाई। मानिये ताको सीस नवाई ॥
राय युधिष्ठिर कबीर गुण कहा। हमहू कहा सो चित नहिं रहा ॥
हम सब कहँ कबीर सिखावा। मनसे मोह प्रगट सब भावा ॥
दीन्ह निरंजन कहँ बिलोका। जीवन सुखदे तुमहिं निसोका ॥
सकल जीव औ सतकी दाया। जोंत अष्टंगी पुरुष निरमाया ॥
दीन्ह निरंजन कहँ जागीरा। सोइ पुरुष सोइ सत्तकबीरा ॥
सतलोकवासी अविचल नामा। अविचल नाम कबीर सुखधामा ॥
सतकबीर हम सबहि सिखावा। राम निरंजन जगहि दृढावा ॥
राम निरंजन प्रगट विस्तारी। कृष्ण अज औ हर संसारी ॥
इन सब कहँ लूटवे हर साजा। क्षौर असवारी पछि राजा ॥
जो निरगुणकी सब महिमा पावे। तोसरगुणके कोइ निकट न आवे
निरगुण कबीर त्रिगुणते न्यारा। निरंजन त्रिगुण सरगुण पसारा ॥
निरंजन कहँजग निरगुण कहता। निर्गुण तो जोइन नहिं बहता ॥
निरंजन तो जोइन मह आये। तन घर कृतम नरक भुगताये ॥
कीतम सखा त्रिगुण कियो कर्ता। कर्ता हर्ता भर्ता नहिं मरता ॥
जो कर्ता आपहि मर जाई। तो तेहि कीतम कहिये भाई ॥
निरंजन तो तन धर २ मूवा। आदि कर्ता कहु कैसे हूवा ॥
आदि कर्ता सो सत्तकबीरा। जो नहिं गले न जरे शरीरा ॥
अकह अगह छाया तन नाहीं। स्वासा से तस रंग लखाही ॥

स्वासा पूंजी सबके भाई। सो स्वासा कबीर निरमाई॥
स्वासा देह लिये संगे चले। निकसत स्वासा देह महि मिले॥
देहीं त्रिगुण राय निरंजन। स्वासा अंस कबीर दुख भंजन॥
स्वासा आद पवन है भाई। नासिका वाट सो आवहिं जाई॥
नासिका निकट सो दरसे आतम। आतम दरस दरसे परमातम॥
छत्तीस नीर और पवन पचासी। ताते न्यारा सोहंग अविनासी॥
सोहंग जीव सुखसागर केरा। तन धर भुगते दुःख घनेरा॥
केदली ब्रह्मके नाम सोहंगा। जाको मूल सो शब्द विहंगा॥
जीवके नाम केदल ब्रह्म कहिये। विहंग भचै कबीर मिल लहिये॥
रोरा नल कुमत अठ गांठी। गुरुके ज्ञानन भिमके साठी॥

दोहा—अर्जुन भीम सकल मिलि, कीन्ह कबीर प्रणाम॥
सतकबीर जीवरक्षक, जै २ कबीर सतनाम॥

निरंजन दरबारकर दूता। पाती ले आव अवधूता॥
विष्णुहिं धाय पाती तिन दीन्हा। विष्णु बांच विहसे प्रवीना॥
फुरमाई राजाके आई। विष्णु बांचके सबहिं सुनाई॥
पत्री निकसा चहिय जलपाना। पुण्यमान औ जिव बलवाना॥
श्रीप्रभु तबहीं भीमकहँ हेरा। दूत धाय गल गहा भीमकेरा॥
घेंचेउ लट पाछे करि आना। मुस्क बांध ले कीन्ह पयाना॥
भीमको अकल सबहीं भूला। मूसहिंले मंजार जस झूला॥
कहें कृष्ण सुन भीम हठीला। कहां गयो बलरंग भयो ढीला॥
कहें कृष्ण सुन भीम गहीरा। गाढे रक्षक सत्तकबीरा॥

सत्तकबीर कहहु मनमाहीं। बहुरि प्रगट कहु काल नसाहीं ॥
सुनके भीम कबीर कहि बोला। सतकबीरको आसन डोला ॥
छिनमें समर्थ पहुँचे आई। कबीरसुनत यम चला पराई ॥
छांड भीमकहँ भागेउ काला। सत्तकबीर मेटा जंजाला ॥
कृष्ण उठाय भीम कहँ लीन्हा। तब कबीरके स्तुति कीन्हा ॥
सकल देव उठ ठाढे भयऊ। सत्तकबीर कहँ सीस नवायऊ ॥

दोहा–पशु छूवन सब चाहे, काहु न आवे हाथ ॥
जापर दया कबीरके, जिन पशु देहीं माथ ॥

योगयज्ञसे सैर न कामा। जबलग भजै न सद्गुरुनामा ॥
सद्गुरु सत्यकबीर दयाला। शरण कबीर मिटे यमजाला ॥

दोहा–सत्यकबीरके स्तुति, करे निरंजनराय ॥
विष्णु व्यास सुख गरुर कहत है, भाग दरश सतनाम॥

अधर विवान ध्रानमें सोहा। अद्भुत चंद सूर नख मोहा ॥
स्तुति आप २ सब करहीं। जै २ सत्यकबीर उच्चरहीं ॥
कोटिन चंद सूर उगआये। अद्भुत लीला कला दिखाये ॥
विष्णु व्यास जै स्तुति सारा। सत्यकबीर जै सब उच्चारा ॥
जै २ नमो २ सब कहही। अधर स्तुति सब एकटक रहही ॥
जै २ सत्यकबीर सुखदाई। विष्णु व्यास पंडौ गुण गाई ॥
जै २ सत्यकबीर दयाला। कबीरकृपाते जीतेऊं काला ॥
जै जै समर्थ सत्य कबीरा। सब घट व्यापक अजर शरीरा॥

सत्यकबीर संसार तेहि दीन्हा । जै जै सत्यकबीर प्रवीना ॥
जै जै अकह सो नाम कबीरा । पुष्पवास घृत घ्राण शरीरा ॥
जै जै कृपालु कबीर गोसांई । गऊ कपिलहिं ले यमते छुडाई ॥
जै जै अमर नाम कबीरा । लखा घर जरत खंभ महँ चीरा ॥
थाके भीम खंभ नहिं आना । बाचा बंध व्याकुल भगवाना ॥
तबहीं कृष्ण कबीर पुकारा । जै पतालते खम्ह उखारा ॥
जै जै कहि बहु बार कबीरा । जै राम लक्ष्मण एक शरीरा ॥
जै भरथ शत्रुघन सीता सती । जै दशरथ दाया सो क्रांती ॥
जै कबीर अमोलख भाई । जै पुष्पवास प्रति रहे समाई ॥
जै काया दल बीर कबीरा । जै अधर धजा फहरात शरीरा ॥
जै एक स्वास बहु मूंदे आंखी । भीतर सबके कबीर सुतसाखी ॥
आप आप मन ध्यान औराधे । दसों द्वार मन पवन कस बांधे ॥
प्रेम भक्त बस साहेब सोई । माया चहे सो प्रभु नहिं होई ॥
सत्तकबीर आप निरमाया । आप न्यारा माया जग छाया ॥
माया बस पर जीव कहावे । निहमाया सतकबीर रहावे ॥
जहां अभिमान कपट चतुराई । तेहि नहिं सत्यकबीर दरसाई ॥
तन मन धन जोवन बन फूला । मन भौंरा ताके रस भूला ॥
जब वन्सपती बन गई सुखाई । भौंरहि भूख लाग अधिकाई ॥
जेहि बन देखत भौंर भुलाना । तेहि बन बरस अंगार सयाना ॥
तब भौंरा सरवर दिशि धांसा । पुरइन कंबल जाय अलवासा ॥
कहे कंबल भौंरा बनवासी । विपत परेउ आयउ मम पासी ॥

जब बन उगठा आग धंधाना । तब बनते मधुकर बिलगाना ॥
जैसे बिन निरास अल भयऊ । तैसे माया लोभित पछतयऊ ॥
चरण कमल गुरु प्रथम न सेवा । काल वश्य तब भयउ बहेवा ॥
बिपत परत को समर्थ चीन्हा । होय सुशील उपकारसो चीन्हा ।
अनचीन्हे बिपत जो होय सहाई । तो तेहि जानिय समर्थ सांई ॥
दोहा-सत्यकबीर मोहिं अनचीन्ह, सियरे परिचय नाहिं ॥
कपिलमुनि भज गाढे कबीर,छोडाय लीन्ह जमपाहीं
बाघ निरंजन काल कसाई । तेहि मुख ते लिय कपिल छोडाई
कपिला गऊ कपिल मुनि कहहीं । सतकबीर सो समर्थ अहहीं ॥
उतर बिवान आव सत सीसा । विष्णु व्यास सुख कपिलसिरदीसा
स्तुति कीन्ह सिंहासन सारा । कंचन भर ले चरण पखारा ॥
महाप्राण कहँ दीजे अज्ञा । निराधार कबीर कहु सज्ञा ॥
पूछहिं ज्ञान विष्णु अरु व्यासा । छोटे बडे सुनहिं विश्वासा ॥

विष्णुवचन ।

कहैं कृष्णगीता मत सारा । पाठ कीय सुख लहे सो चारा ॥
पाठ करे समुझे पंथ चाले । सचदयासो जिव प्रति पाले ॥
आप जीवके रक्षा करई । ताके संकट साहेब हरई ॥
अपनी रक्षा औरकी हानी । ऐसे चाल ब्रह्म अघखानी ॥
कहें कृष्ण सुन व्यास प्रवीना । सुनो कथा निरगुणको चीन्हा ॥

दोहा-कहें कृष्ण कबीरसे, होय अधीन कर जोर ॥
कहिये कथा आदि उतपतकी,सत कबीर बंदीछोर ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर निर्गुणकी कथा । निर्गुण सर्गुण प्रगट जथा ॥
प्रथम सत्पुरुष निर्गुण सोई । तिनके निर्गुण सर्गुण होई ॥
त्रिगुण न्यारा निर्गुण सो जानी । सो सत्यपुरुष अमृतन खानी ॥
रचा लोक अमृतकी काया । देह हिरंमर सुवास सुहाया ॥
अमृत अग्रको लोक संवारा । इच्छा सुर्त सकल विस्तारा ॥
प्रथमहिं सुरत अंस प्रगटाये । सुरत विहंग सकल निरमाये ॥
शब्द अजर सतनाम बखाना । तासु अंस सुरति उतपाना ॥
प्रथमहिं ज्ञान अंस सुखदाई । द्वुतिय विवेक विचार निरमाई ॥
त्रितय सहजशील निरबाना । चौथे क्षमा संतोष बखाना ॥
पंचय निरंजन छठयें भवानी । सतयें जोगजीत जम हानी ॥
अठयें धीरज नवें शुचि भाऊ । दसयें दया दीनता आऊ ॥
एकादसे सत सुकित नामा । द्वादश दुरमत नाम निहकामा ॥
त्रेदस आद कुम निरमाऊ । चतुर्दश जलरंग झलकाऊ ॥
पंचेदस सो प्रेम प्रमारथ । षटयेंदस अचिंत पद सारथ ॥
अवदास कहनकी छोटा । सत्रह सुतसें काल अटोटा ॥
सोरह सुत एकपुत्री वामअंगी । देख निरंजन प्रेम उमंगी ॥
जाहे सुत जो दीयदिय स्वामी । पुरुष आज्ञा बैठे सब धामी ॥
निरंजन धरहिं अकुलाने । चौंसठ जुग छिन सेवा ठाने ॥
देख अष्टंगी काल ललचाने । होय अधीन बहु विनती ठाने ॥
दीन्हो लाय संग अष्टभुजी । मानसरोवर राज करोजी ॥
अस जिवरा ताहीं कहँ दीन्हा । पारस स्वास विस्तार जोकीन्हा ॥

दोहा- उठी अवाज पुरुषकी, मानसरोवर जाहु ।
बांये दहिने जिन हेरहू, सन्मुख होय सुख लाहु ॥
अमर चोलना जीवको दीन्हा । बिसरहिंनहिंजिवपुरुषपरवीना ॥
चले निरंजन आज्ञा पाई । मानसरोवर बैठे जाई ॥
मानसरोवर हंसनि रहहीं । अद्भुत चंद्र सूर्य छवि लहहीं ॥
गावहिं सब मंगल अति प्रीती । होय झनकार अनाहद रीती ॥
एक २ हंसनि छवि अनलेखा । अमरचीर काछे बहु भेषा ॥
पग अंगुली नख चंद्रकी खानी । तरवन रवि शशि जुथ्पलोभानी ॥
जंघ नाभी कटि चंद्रकी रासी । उरसर कंमल नाल बिनु भांसी ॥
चंद्र सूर्यकी खान हंसनी । मुखछविनिरखअकहसुखहंसनी
शोभा कौन हंसनि छवि कहऊँ । उपमा सरिस न कुछजगलहऊ ॥
नित आरती समान सरोवर । लोककी नार नर्क न्यारा घर ॥
तहां हंसनी सुबुद्धि सयानी । शोभा अमल चंद्रकी खानी ॥
मांग टीका पटवासी सुंदर । चंद चौथ विधु अद्भुत दिनकर ॥
निरख हंस सब एक टक लाये । पुरुष कला छविरूप सुहाये ॥
एक कामनि सेंदुर रवि कोटी । सेंदुर सद्गुरु नाम अटोटी ॥
सोहे बेसर हंसनि नाका । उगे चंद जुथ्थप बांका ॥
बांका सोइ जेहि कौन नवावे । सो कबीर सब जगगुण गावे ॥
कबीरनाम भये अस सोभा । सोभा सुनत सबन मन लोबा ॥

व्यास उवाच ।

कहैं व्यास देखे विन स्वामी । कस पतिआव सो अंतर्यामी ॥
कलउ भक्त गुरुवचन विश्वासी । तीनों जुग देखे विन रासी ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर देह धर देखो । आप माहिं तुम सबहिं परेखो ॥
कोट चंद्रके सोभा जिवके । नर्क देह धर सुध नहिं पिवके ॥
ऐसे समय हंस एक पूरा । सत्तकबीर जपे सो सूरा ॥
ठांका देंह पूरा घट जाईं । पुष्प बिमान हंस बैठाईं ॥
हंस सहस्स सठिहार बहुता । आसपास लागे सम जुगता ॥
परिछन हंस बिवान चढि आये । अधर धजा फहराय सहाये ॥
दोहा-बाजत बाजत सरस अति, होत अंजोर अपार ।
उतरे हंस बैकुंठ तब, नाम कबीर उचार ॥
आये हंस बैकुंठ को जबहीं । अद्भुत चंद्र सूर्य उगे तबहीं ॥
चला हंस कबीर पगु पारा । मस्तक पग दीन्हा बलभारा ॥
सकल हंस परिक्रमा करहीं । कबीर चरण रज शिरपर धरहीं ॥

हंसवचन ।

कहे हंस कबीर यम बांचे । बिना कबीर काल घर नाचे ॥
सद्गुरु मोकंह दीन्ह परवाना । सत्तकबीर सम गुरूकँहँ जाना ॥
यम त्रिण तोड काल सुख भूका । पाय प्रवाना झगरा चूका ॥
सरगुण त्रिविध झगरा लागा । तैतिस कोट देव सब भागा ॥
जेहि पूजहु सो कछु भल माने । बिन पूजे सब झगरा ठाने ॥
ताते निर्गुण भक्त अधारा । जप कबीर यमराजहिं छारा ॥
दोहा-धन्य कबीरको नाम है, धन्य कबीरको शरण ।
जो कबीर लौ लावे, ताको जरा न मरण ॥

चरण टेक चले हंस सुजाना । सत्यकबीर कहत घर ताना ॥
पुन वैकुंठ भये अंधियारा । बोले कृष्ण धन्य करतारा ॥
सत्यकबीर जन गुप्तहोय फिरहीं । तिनके दास ऐसे सुख करहीं ॥
सबे देव विनती अनुसारा । ले चलहू जहां अस उजियारा॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सत्यलोक जो जाई ।अस उजियार जो तोहिं मिलाई॥

दोहा--कर्म भर्म सब त्यागे, त्यागे जगके आस ।
सबमहँ एक ब्रह्म लखि, कबीर भजन सुखरास ॥

सबे कहें मोहिं दीजे पाना । यमसे जीव बचजाय ठिकाना ॥
कहें कबीर सुनो सब कोई । सद्गुरु सेय मुक्तफल लेई ॥
कहौं सो करौं सबहिं तब तारौं । जन्ममरण दुख दारुण टारौं ॥
सबे देव सुमरो रामके नामा । छांडो भूत प्रेत अघ कामा ॥
जो जाको गुरु रामसो ताही । गुरुबिन राम न तारेउ काही ॥
करहु भक्त दाया सत ठानी । अंस पृथ्वी तन घर भर नामी॥
करु नित संतनकी सेवकाई । हृदय कबीर नाम जौलाई ॥
निरगुण सरगुण एक समाना । बीज वृक्ष विस्तार बखाना ॥
सुखमंडन पितु मातु जथाई । हृदय प्रीत पिव सद्गुरु सांई ॥
जो कोइ भक्त करे गुरुसेवा । सेवा भक्त सार पद लेवा ॥
अमृत सेवे अमृतफल लेई । विषतरु सेवे विष मिल लेई ॥
अमृतफल गुरुराम कबीरा । आगे तारब पुण्य शरीरा ॥
बिन कौडी सौदा मिल नाहीं । गुरु बिनको गहिहै पुन बांहीं॥
गुरु सोई जो अंतहु मीठा । जन्ममरण सब लागे सीठा ॥

दोहा-जन्ममरण सरगुण गुरु, निरगुण अजर कबीर ।
शरण कबीरके जो गहे, सो बहुरन धरे शरीर ॥

कथा प्रसंग कहा मुनि व्यासा । भक्ति मुक्ति महिमा प्रकाशा ॥
भक्त मुक्त पंथ सत दाया । सत्यनाम भज अम्मर काया ॥
कहें कबीर सुनो विष्णु प्यासा । सत्यकबीर जपो हर स्वासा ॥
आद अनादिको नाम कबीरा । कल प्रगटहिं अघ नासन हीरा ॥
अब तोहिं अंत खोल हम कहा । सत्यकबीरजपकलिनिरबाहा ॥
ताहि न देउं मैं पान प्रवाना । जोजीवघातआमिष भषजाना ॥

दोहा-महापुनीत पवित्र जिव, गुरु भक्ता सोइ संत ।
पर आपन जिव एक लखे, ताहि कबीर मिल कंथ ॥

विष्णु-व्यासवचन ।

कहें सो विष्णु व्यास सिर नाई । कलयुग सुनिये जो आमिष खाई ॥
कहें कृष्ण कलयुग व्योहारा । कोइन करि है सत्य विचारा ॥
झूठहिं जगलग लेपवे साही । अतीत ब्राह्मणको धका दिवाही ॥
गुरुसे शिष्य सरवर करि बोले । तेहि दोष मरकट होय डोले ॥
गुरुके धन चोराय जो खाई । ताके घर फांसी सब जाई ॥
गुरुसे सरवर पितहिं दे गारी । साधुद्रोह जिवघात खुवारी ॥
जीवदयामय दाया जानो । जीव घात मम घात बखानो ॥
काया विष्णु कंवल दल सोहा । भज कबीर गुरु पद मोहा ॥
सत्यकबीरको चाल निनारी । सुर नर मुनि गण जानेनहारी ॥
कलिमें होइ हैं पापत राजा । नृप बिगरे परजा अघ छाजा ॥

कलिके ब्राह्मण काल सुभाऊ। अजिया सुतबध झख परखाऊ॥
प्रथम मीन भयेँ विष्णु सरूपा। पैठ पताल जला अंधकूपा॥
कुर्मके नखसों मृतुका आना। राई भवान मृतुका सो जाना॥
सो मृतुका हरसुख विवलाई। फेनसमान उठा जब काई॥
लै फेन पवन जल लाया। क्षीर साढी तस पृथ्वी जमाया॥
पृथ्वी सात औ सात अकाशा। कदलीखंभदल पृथ्वीपर चासा॥
विष्णु जल थलमाहिं समाना। विष्णु अन्न पान पकवाना॥
जो मीन देंह पूरण कर सेवे। जलमह भात डारि कर सेवे॥
ताके संतत भक्त गर होई। पूजे कछु सुख पावे सोई॥
विठल ब्रह्मरूप है मोरा। बावन नरसिंह राक्षस बल तोरा॥
परसरामचंद्र सो हमही। कृष्ण बौध निहकलंकका जबहीं॥
नारद व्यास औ सबमें वासा। रजगुण तमगुण सद्गुण वासा॥
चौथा स्वासा कबीरको दासा। स्वासा पार सतपुर बासा॥
पंचयें निरंजन जिव घटवारा। कबीर मोहर लख पार उतारा॥
जो नहिं भये कबीरके दासा। ता कहँ काल निरंजन ग्रासा॥
पुण्य लीन्ह रस चूस जिव केरा। पुन्यमान जस तरे घिव भेरा॥
पापिहिं डार दिये यम खाई। जार खोर चौरासी भ्रमाई॥
पाप पुण्य महँ नाहिं उबारा। दया सत्त परमारथ सुधारा॥
नाम कबीर प्रताप उबारा। कीतम नाम जपेउं यम मारा॥
आद नाम कबीर दुखहरना। कीतम त्रिगुण नाम तप मरना॥
जन्म मरण दुख बडे जंजाला। जन्म मरण झरकावे काला॥

तेहि दुख कबीर गुरु पगु गहा। सत्यकबीर जप हंस निरबहा ॥
सरगुण श्रेष्ठ विष्णु अधिकारा । निर्गुण सत्यकबीर जिव तारा॥
निर्गुण भक्त बिना जमलूटे । निर्गुण बिना न संशय छूटे ॥
नकल निर्गुण कहिये निराकारा। तिन जो जीवहिं कीन्ह खुवारा॥
दूजे निर्गुण मन यम अंसा। तीजे धरती साध निहसंसा ॥
चाथे निर्गुण नीर लखाया। पंचयें निर्गुण पवन बहाया ॥
छठयें निर्गुण गगन बखाना । सतयें सत्यकबीर निरबाना ॥
आतम पवन और तन आदी । सो राम कबीरका नादी ॥
नांद निरंजन नांद अष्टंगी । नांद सुरति सोहंग तरंगी ॥
नांद पुत्र शिष्य गुरु मुख जाये। विना शिष्य कस सुख कहाये ॥
सीखे सुने शब्द कहँ खोजा । जहां सांच ताके भये सोजा ॥
असल सांच एक कपटी दूजा । असल बोलता तज भ्रम पूजा ॥

दोहा—असल सुरति साहेब का, नर सुरत अनुहार ॥
सबै रूप तन भासे, जोत पुंज उजियार ॥

नख सिख विमल सुठ अति लोना। अधर सिंहासन अंकित भवना॥
सिंहासनके अधर सकल सब । अधर सिंहासन सत्यकबीर जप॥
जाके दरस पयाना लहजीऊ । कहे कबीर ताके सोइ पीऊ ॥
पुरुष सरूप मह हंस कडिहारा। पहुँचे हंस पुरुष दरबारा ॥
कंचन पृथ्वी हंस सब रहहीं । निज२दीप सबे सुख लहहीं ॥
जेते अंस प्रगट होय आवा । धर सरूप सो नाम धरावा ॥
पुरुष अमान सीलके खानी । समर्थ नाम अकह सो जानी ॥
सबे नाम है साहेब केरा । अकह नाम सो हंस निबेरा ॥

अकह नाम सो सद्गुरु भाषा । सद्गुरु सब पूरण अभिलाषा ॥
जासों डोरी पुरुषकी पावे । सत्पुरुष सम तेहि चितलावे ॥
केते गुरुवा कपट कराहीं । सीखहिं शब्द सिखावत नाहीं ॥
कपटी गुरु जो शब्द न देई । पूजा पाठ लेख पुन लेई ॥
पूछे शिष्य तब ज्ञानके बाता । पूजा थोर क्रोध गुरु ताता ॥
गुरु सो जेहि अस कत सिष भाऊ।पूजे बिन पूजे एक ताऊ ॥
पूजा लेय पुनि राह बतावे । अमरलोक ले जिव पहुँचावे ॥
अकह कथाको गम न पावे । सो सद्गुरु कबीर समुझावे ॥
जे शिष्य बहुत गम्य कर बोले । गुरुकी सेवा करे दिल खोले ॥
मात पिताको सेवक जो सुत । सोइ सपूत जो गुरु सेवा जुगत॥

दोहा–सेवा देवा लेवा करे, पखलधार तब जान ॥
गुरु सोई जो ज्ञान दे, सेवक सेवा ठान ॥

सेवक होय करे गुरु निंदा । ज्ञान पाय कहे गुरु दाहनबिंदा॥
चेला गुरु पूंजी दे खोई । गुरु बिन सेवा लाभ न होई ॥

कबीरवचन ।

दोहा–कहें कबीर सुन देव मुनि, कृष्ण कपिल मुनि व्यास।
तुम सब सेवो साधु गुरु, छोड धर्म विश्वास ॥

धर्म विश्वास कालकी फांसी । प्रेत भूत आस दुखरासी ॥
गुरु तज सकल आस दुखखानी । गुरु बिन नर्क परे अभिमानी॥
गुरु सोई जो अंतहु मीठा । जन्म मरण गुरु लागे सीठा ॥

सकलदेव वचन।

सकल देव उठ चरण मनावा। श्रीहरिविलख गलताव सुनावा॥
हम सब परे निरंजन फांसा। सत्यकबीर काटे यम त्रासा॥
जन्मत मरत बहुत दुख पावा। अब कबीरके चरण चितलावा॥
यमसे एक तुम राखन हारा। कबीर बांचे सब यमके चारा॥

कबीरवचन।

कहें कबीर तुम सब तन धरहू। क्रितम देंह हरि सेवा करहू॥
अमृतदेंह अमर घर जाई। क्रितम देह घर छार समाई॥
सत्य देंह हंसके संगा। सत्य देंह विदेह प्रसंगा॥
अब सुनो ज्ञान पान परचाई। थित पान दे लोक पठाई॥
उठे कुबेर हरिपद लपटाने। सत्य कबीर गुरु लरन सो ठाने॥

कृष्णवचन।

कहें कृष्ण पुलकित होय वाणी। सत्यकबीर सद्गुरु सुखदानी॥
कोट जन्म तप पुंज जेहि होई। सतकबीर कहँ सेवहिं सोई॥
उठे हर्षित हरि आज्ञा पाई। कबीरके सन्मुख महिपर धाई॥
कहें कुबेर सीस महि लाई। आद पुरुष कबीर प्रगटाई॥

कबीर वचन।

कहें कबीर तुम हरि गुरु भजहू। तजहु कुपंथ आमिख भष तजहू॥
देवता आमिख लेय मधुवासा। और आमिख बहु देव गरासा॥

कुबेर वचन।

कहें कुबेर मोहिं आपन करहू। दे परवाना कर्मज हरहू॥
तुमही कर्ता मूल सकलके। तीन लोककर भक्त न कलके॥
तुम्हरे अंस जीव सब स्वामी। निरंजनके मूल तुम अंतर्यामी॥

कबीर वचन ।

सत्तकबीर विहस कह बाता । सहि कुबेर शरण मम आता ॥
आरती साज अब आन तुरंता । नीरयर पान मिष्टान्न भुगंता ॥
बहुत सुगंध फूल बहुताई । सुरत सुवास सेत फललाई ॥
मेवा वस्तर पटंबर छाजा । लोक प्रभाव उदे मनु साजा ॥
अनहद शब्द सो मंगलचारा । सानंद सद्गुरु भक्त अपारा ॥
सबे देव मिल मंगल गावहिं । जै २ सतकबीर उचारहिं ॥
साजेउ थार जोत प्रकाशा । अधर थार सिंहासन स्वासा ॥
भोग लगाय पुरुष सतनामा । लियो छोर यम फंदते प्राणा ॥
यमराजा सो त्रिण तोडाई । काल भूतके मुंह भुकाई ॥
शब्द वाक्य कह दीन्हों बीरा । सुरति समानी सत्य कबीरा ॥
चरणामृत तुलसी माला । दीन्हें तिलक सर्व सुखचाला ॥
कहहिं सिखावन दंडवत गुरुसाता । तीन दंडवत साध पितुमाता ॥
रहिय गुरुके चरण लौलीना । रामनाम गुरु साधुहिं चीन्हा ॥
केतो पढके निडर रहई । गुरुकी भक्ति सबे निरबहई ॥
पढा देवता दया जेहि हिये । दयाहीन यम कातर हिये ॥
गुरु सिवायकछु आस न करिये । सद्गुरु भज सतलोक पग्र धरिये ॥
सद्गुरु सत्यकबीर निज नामा । जहां प्रेम तहँवा गुरुनामा ॥
बिना प्रेम जग होत बिगाना । तात मात बिन प्रेम बिगाना ॥
आन सो प्रेम करे सो मुरखा । कबीर कृष्ण तरे सब पुरषा ॥
कबीर बिना कोइ तारे नाहीं । त्रिभुवन सब परपंची आहीं ॥

एक सत्यकबीर सत्य बोलहीं । और सबे माया बस डोलहीं ॥
धन्य सो सत्यकबीर कंडहारा । नरक परत बहु जीवहिं तारा ॥
दोहा-सर्वमई है साहेब, सबे रूप सत्यनाम ।
गुरुसरूप चित ध्यान धर, और ध्यान बेकाम ॥
धाय विष्णु धर चरण कबीरा । गही हर्ष कर कबीर मिल हीरा॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण मैं नाती तोरा । पिता निरंजन भक्षक मोरा ॥
दोहा-हमरी कौन बतावे, खाये सबे पितु काल ।
आज तारु मेरे आजा, देहौ मोहर टकसार ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर कृष्ण धर धीरा । कोइ दिन गति तोहिं देहौं बीरा ॥
पान प्रसाद नरियर मिष्टान्ना । दीन्ह कबीर कृष्ण कहँ पाना ॥
सुनहु विष्णु प्रगशरगकी बाता । सत्त सतोगुण मम अंस विधाता॥
पारसपान प्रसाद यह खाहू । उपजे दृढ अंकुर गुरु पाहू ॥
पान प्रसादके अस प्रतापा । जन्म २ को मिटही पापा ॥
रहे भान कन्या वर जैसी । मनीह मनावे सेंदुर चढ तैसी ॥
विना लिखा सोइ मानद आना । चरणामृतसे हंस निरवाना ॥
जब लिख बीरा दीन्ह पुन जाहीं । पूरा शिष्य सद्गुरु पंथ माहीं ॥
दोहा-सबे देवता दसकत, मोहर सत्यकबीर ।
विना मोहर सुलतानको, माल न लागे तीर ॥
जिन वनजारे लीन्ह प्रवाना । मोहर देख घटैत भय माना ॥

दोहा--कहैं कबीर कृष्णसे, मनमो राखो धीर ।
आगे बीरा देंव तोहि,हमार अंस तुम बीर ॥

व्यासवचन ।

कहैं व्यास कबीर हर वंसा । सबके मूल कबीर निहसंसा ॥
अपने मन सब सद्गुरु चेला । सद्गुरु शिष्य जेहि नाम मिला ॥
हम सब सद्गुरु निंदे मुनि जेते । सबके सद्गुरु कबीर गति देते ॥
रवि प्रकाश भौ तिमिर नासा । कीतम त्रिगुण तिमिर तन भासा ॥
निर्गुण भक्त प्रकाश रवि जाना । निरगुण सरगुण माहिं समाना ॥
निर्गुण स्वासा सरगुण देहीं । यमसे बांचे कबीर सनेही ॥

कबीरवचन ।

दोहा–कहैं कबीर हम सब घट, राम रूप तन स्वास ।
स्वासा पुरुष नार तन, स्वासा विकसत न नास ॥

व्यास सुखदेव वचन

कहैं व्यास सुखदेव कर जोरी । मम तन कांच जीव बंदी छोरी ॥
यह तन बिनसत वार न लागे । ना जानो स्वासा कब वागे ॥
कपिलमुनि गाय सो तुमहि बचाया । जो बांचे सो कबीरकी दाया
दीजे मुक्त पान मोहिं आतुर । मुये प्रथम चेते सो चातुर ॥
वाघ निरंजन सब जिव गाई । सवा लाख नित खाय कसाई ॥
सो जिव बांचे काल तुम आसा। नाम कबीर जाहिपर वासा ॥

दोहा–एक ठांव बन कपिल मुनि,दूसर स्वास सुखदेव ।
सब जिव ग्रासे वाघ यम, तुम कबीर लख लेव ॥

तब कबीर जिव उपजी दाया । मानिद पान सो सबहिं खवाया ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर निःशंक अब होहू । निरंजन बाघ न ग्रासे तोहू ॥
अब तुम सुनहु और एक बाता । प्रथम गुरू हैं पिता औ माता ॥
रज बीज माता पिताके चोला । पुरुषअंश तेहि तेज अमोला ॥
पांच तत्व प्रकृति पचीसा । चौदह यम त्रिगुण तैंतीसा ॥
रोम २ सब आरि तन जिवके । तन मन काल मार बल पिवके ॥

दोहा--चालिस सेरको मन भयो, चालिसमहँ एक सार ।
एक सांच सब झूठा, स्वास सार तन छार ॥

गुप्त प्रगट दस इंद्री लखहू । पचीस प्रकृती तैंतीसा भाषहू ॥
गुणभा तीन मिले अठतीसा । अद्धा अंस एक मन दीसा ॥
भाउं न चालिस चालिस जीऊ । जीवके सत्यनाम है पीऊ ॥
जीव अमर सो अमर कबीरा । सत्यकबीर मुक्त मन हीरा ॥
मरे तत्व औ गुण प्रकृती । अमर सो हंस पुरुषको रीती ॥
पांच असीके काया बाहर । अमरलोक आसन तेहि ठाहर ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश जग अघपत । अघपतकी मत कीतम मलगत ॥
निरंजन पुनि तन घर मरऊ । ऊंच नीच बहु कीतम कियऊ ॥
अजब दिल निरंजन नांऊ । नाना रंग बसाये गाऊं ॥
अहंकार बस राहु अलाहू । ताते कोइ न पावे थाहू ॥
कुमत कुसंग क्रोध अघ चाली । ये सब विकट निरंजन माली ॥
आप निरंजन अल्लह कहाये । अजाजिल्ल एक और बनाये ॥
दुनिया अजजिल्ल जग जानो । असल अजाजिल्ल प्रभुको मानो ॥

तुरक अजाजिल्ल हिंदू धर्मराई । है भक्षक रक्षक नहि भाई ॥
आप अजाजिल्ल अल्लह कहलावा । अलह अल्लाहकी रूप छिपावा ॥
जीव का करे काल छल कीन्हा । जीव भुलाने खसम न चीन्हा ॥
जीवके खसम सो अमर कबीरा । बिन परचे धरे धर चीरा ॥
देवा देवी जार गवारा । सद्गुरु खसम सो अमर भतारा ॥
असली सद्गुरु सत्य कबीरा । नकली सद्गुरु बहु भौ भीरा ॥
बोरहिं शिष्यको नरक मंझारा । कहहिंके भौजल पार उतारा ॥
बेद पुराण कुराण पढैं सब । गुरुमत त्याग मनमत गहैं सब ॥
बोर छोर गायत्री माहीं । सत्य दया तेहि माहे ढढाहीं ॥
पंडित काजी यमके अगुवा । आप घाल घालैं पछ लगुवा ॥
द्विजके कहे चले संसारा । सो द्विज मनमत घात अपारा ॥
कलयुग आवत है चल भाई । ले २ पान लोक चलि जाई ॥
करिहै निरंजन कलिय विचारा । घट२ कुमत उपजहिं संसारा ॥
ब्राह्मण कलिमें मछरी खैहैं । विष्णु देह धर नरके जैहैं ॥
धरिहैं निरंजन रूप मलीक्षा । गऊ विप्रहिं दुख देहिं अदीक्षा ॥
बडा प्रपंच करि हैं जिव लागी । अनंत रूप धर नट बट पागी ॥

दोहा–चोरी और छिनारी, आमिष भष जिव घात ।
यह सब करिहैं निरंजन, जीवन वड उतपात ॥

काजी रूप निरंजन पांडे । एके काल दोऊ घर भांडे ॥
एके विष्णौ दुतिय दूबे । त्रिविध तिवारी पांडे चौबे ॥
छठयें सतयें अठयें नौवें । दसयें दस प्रकार द्विज सोभे ॥

नौवें नौ नारी प्रमोधा । दसमें दस द्वार जिन सोधा ॥
अठवें अष्ट कमल जो भिन्ना । सतयें सत्य वाक गहि लीना ॥
षटये षड्रस त्यागे भाई । पाडें पचयें वेद पढाई ॥
चौबे चार वेद जो राता । तिवरी त्रिगुण देव मग्नु माता ॥
दूबे दुबधा दूर बहावे । एक असल सत्यनाम समावे ॥
एक सो जन कबीर विष्णो मत। दयाशील पतिपाल अगतगत ॥

व्यास सुखदेव वचन ।

कहे सुखदेव व्यास कर जोरी । कहहु चौरासी केतिक खोरी ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सुनो सब कोई । चार खान चौरासी लक्ष होई ॥
नौ लख जलमो जीव समाना । चौदह लक्ष पंछी परवाना ॥
कृमि कीट सत्ताइस लाखा । तीस लाख स्थावर भाषा ॥
चार लाख मानुष तन जाना । मानुष देंह परमपद जाना ॥
चार खान अब सुनहु व्यासा । चौरासी चार निरंजन फांसा ॥
अंडज पिंडज ऊष्मज अंकूरा । चार खान जिव एकहिं पूरा ॥
पुरुष दीन्ह जिव अम्बर चोला । इच्छारूपी उडुगण खोला ॥
सौ चोला को निरंजन पैन्हा । नरक कलमा काया जिव दीन्हा ॥
भये असतो निरंजन जबते । आनके आप लियो अब जबते॥
कुमत असत जिव घात निरंजन। जिव पालक सतनाम सो सज्जन॥
आपन जनमल ताहु दुखदाई । त्रियसुत निराकार निज खाई ॥
कहो जीव कैसेके बांचे । सत्यनाम विन यमघर नाचे ॥

विष्णुवचन ।

उठके कृष्ण केहं कर जोरी । कल्ठ भखमीन कौनगति मोरी ॥
मीनरूप है विष्णुके स्वामी । जीव भक्षकके कस गत कामी ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो भगवाना । मीन भक्ष गउघात निदाना ॥
परनारीरत नरक अघोरा । लोहू पीव भिष्टा मह बोरा ॥
द्वादश तेहि योजन भौसागर । भिष्टा मूत्र कृमि दचागर ॥
नरकको कुंड सात यम कीन्हा । घोर नरक भौसागर चीन्हा ॥
भिष्टाकुंड ॥ १ ॥ मूत्रकुंड ॥ २ ॥ राधीकुंड ॥ ३ ॥ रक्तकुंड ४
खरवारकुंड ॥ ५ ॥ नासिकामलकुंड ॥ ६ ॥ धातुकुंड ॥ ७ ॥
सुनहु आठे अग्निकुंड ॥ ८ ॥ पांचसौ ते रे बडे मुंड ॥
पांचसौ योजन चकराई भाई । लक्ष योजन के हैं गहराई ॥
भौसागरका भंवर भयावन । बूडे पापी अधिक अपावन ॥
राम चीन्ह पुन चीन्हे नामा । सत्यनाम सो सुखके धामा ॥
सत्यनामको वेद न जाने । निराकार कह वेद बखाने ॥
निरंजन के स्वासा ते आये वेदा । आगे कैसे जाने भेदा ॥
वेद नीत बहु विमल बखाने । तांत्रिक घात मुनी मन जाने ॥

दोहा—वेद मते वैकुंठ मिल, दया भाव सतसंग ।
तांत्रिक नरक बुडावे, वैदिक रामप्रसंग ॥

परे बाढ मछरी जस भाई । सलिता बूड मीन उतराई ॥
पलटत पानी चले जो मीना । परे सलिल नीको तिन कीन्हा ॥
दोहिं लोभ चारा बहुताई । परे फांस मन मति अरुझाई ॥

यह विध सिरजन बढ जिव आये। यहां निरंजन कीर बझाये ॥
छिन सुखदे सब सुख हर लीन्हा। अम्मर जन्म जीव नहिं दीन्हा॥
कहा करों जो काल नसायो। विना पेयादा दाम न पायो ॥
कहें कबीर जो संतका द्रोही। निश्चय काल गरासे वोही ॥
कोटिन जीव वधे कर पापा। तेहि जो अजिया सुत एक सापा॥
अजियासुत दूध भाई दोई। सो सांचा जिन शब्द विलोई ॥
सद्गुरु शब्द लखे आरि हीता। सब भक्षक एक सद्गुरु मीता ॥
जो जेहि काटे सो तेहि मारे। मारन छल तेहि काल सुधारे ॥
कोट बालक वधे एक त्रिया घालका।कोट त्रिया वधे पाप एक गायक
कोट गाय वधे एक झख खाई। झख मछरी कोटिन बुधताई ॥
कोटिन पाप बसे तेहि माहीं। विप्रघातसम पातक ताहीं ॥
कोट विप्र वधे विष्णव एका। विष्णव वध होय पाप अनेका ॥
जीवत महितन भरत प्रतमाला। तब तक नरक भोग बस काला॥
मानुष तन धर भक्त न कीन्हा। भक्तही बूडे कमीना ॥
सद्गुरु भक्त प्रापत जिव होई। कहें कबीर सतलोक गये सोई ॥
सद्गुरु भक्त प्रापत बडभागी। बडे भाग्य बैरागी अनुरागी ॥
जन्म अनेक तब पुण्य कमाई। होय मास बासी सो जन्मे आई॥
वनवासी न करे विवाहा। काहु पुरुष मुख दृष्टि न बाहा॥
सात जन्म जो सततन राखा। तब सो सत्व पुरुष पत भाषा ॥
सात जन्म सो पियासंग जरई। तब सो पतिव्रता औतरई ॥
सात जन्म पतिव्रत कमावे। सत्तभक्त कर सद्गुरु पावे ॥
सात जन्म करे गुरुसेवा। तजे आस सब देवी देवा ॥

तीरथ वरतका तेजहिं आसा । गुरुके चरण केवल विश्वासा ॥
घात द्रोह तजे परनारी । आमिष तजे ले बिसम विचारी ॥
हंसहि रंमर लोकहिं जाहीं । विष्णु सतगुन गुरु तारहिं ताही ॥
सतकबीर हंसन गते होई । सत्यकबीर निज सद्गुरु सोई ॥
गुरु सद्गुरु परमगुरु लोई । कहैं कबीर अब गुप्त हम होई ॥
प्रगट होउं जब इच्छा तोही । मैं तो जात अबहि जग सोई ॥
एक बेर अब पृथ्वी जाऊं । यम सिर तोंड जीव मुक्ताऊं ॥
सब मिल सुमरो सद्गुरु नामा । छांडहु कीतम देय सो बामा ॥
रामनाम सद्गुरु परवाना । सद्गुरु सत्यकबीर निरवाना ॥
सद्गुरु गये काल अरहेरा । ज्ञानधनुष कर ध्यान पवेरा ॥
मारेउ मन माया अभिमानी । तारेउ साधु संत गलतानी ॥
तीन लोक बनकाया भयऊ । तेहि मह बाघ सिंह ठग रहेऊ ॥
सत्यकबीर जो होंय सहाई । तौन जीव यम जीत बनाई ॥

व्यासवचन ।

कहें सुख व्यास कृष्ण सो रोई । सत्यकबीर सम और न कोई ॥
दया करेहु तम कृष्ण गोसांई । सत्यकबीर कहँ लेहु बलाई ॥

कृष्णवचन ।

कहैं खनंग अरि व्यास समेता । कहैं कृष्ण अर्जुन समहेता ॥
कहैं कृष्ण सतनाम कबीरा । न्यारा व्यापक सकल शरीरा ॥

दोहा–तुमहिसे सब प्रगटे, तुमते सब विस्तार ।
निराकार सिर मर्दन, सो कबीर औतार ॥

देहु दरश सत्पुरुष अनादी । तुव दरशन विन जरों ब्रह्मआदी ॥

प्रगट सत्यकबीर देहु दरशन । कहैं कृष्ण मोहि पर होहु प्रसन॥
कबीर दरश बिन कृष्ण अधीरा । प्रगट भये तब सत्यकबीरा ॥
भौ वैकुंठ महा अज्ञानी । पुष्प विमान चढि पहुँचे आनी॥
भये सुवास वैकुंठ अंजोरा । सत्यकबीर देख चहुं ओरा ॥
अधर विमान उतर नहिं नीचा । आवत अमी सबनपर सींचा ॥
स्तुत २ बोले सब देवा । अष्टांग दंडवत आशिष लेवा ॥
कहैं गरुड हरि होहु सवारी । उठ कबीरके चरणन पारी ॥
कहैं कृष्ण सुन गरुड सुजाना । अपना योग्य बात नहिं आना ॥
हम सेवक कबीरके आही । स्वामीसे सरवर नहिं चाही ॥
समर्थ अधरते करिहैं दाया । इतना कहत आप प्रभुराया ॥
आय विमान वैकुंठ तेहि ठयऊ । स्तुति सकल देव मुनि कियऊ ॥
कृष्ण व्यास पंडो पगु लागे । चरण पखार सकल मिल पागे॥
पूछहिं ज्ञान कपिलमुनि देवा । सत्यकबीर कहु सत्यको भेवा ॥

दोहा–श्रोता वक्ता कौन घर, जब नर आवे नींद ।
शब्द विराजे कौन घर, पूछहिं कपिल मुनींद ॥

कबीरवचन ।

सिद्ध जाहि दरबार महं, ब्रह्मरंध्रके तीर ।
श्रोता वक्ता एक शब्द सुतसंग, मुनिसो कहें कबीर ॥

कपिलमुनिवचन ।

कहें कपिलमुनि मोकहँ तारो । निरंजन वाघसो मोहि उबारो ॥
हृदय जपिहों तुम्हरो नामा । जेहि दिन यमसों छोरेहु प्राणा॥

अब मोहिं करहु निकटक स्वामी। देहु पान प्रभु अंतर्यामी॥
आरती पान शरण लौलाई। आदि अंत डर देहु छोडाई॥
मोहि उबार सबनको तारो। काल मेट निज हंस उबारो॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर कपिलमुनि सेती। दैके छोड लेय बदनेती॥
कोइ दिनके आगे होय ऐसा। तुम कपिल मुनि भाखेहु जैसा॥
अब तुम पान लेहु त्रिण तोरी। लेव कालके मुखसो छोरी॥
तारों सब जिव सहज सहज ते। सो पशु पंछी भृंग नर जेते॥
सहज आरती कर दीन्हो पाना। भयउ मुक्त कपिलमुनि जाना॥
चरणामृत सीत प्रशादी। लियो कपिलमुनि भक्त अराधी॥
मगन भये सब संशय नाशी। सत्यकबीर मिले अविनाशी॥
कहैं कबीर सुनो कपिलमुनि। हमरे नाम सुरत लायो धुनि॥
हमरे नाम जप काल न पाई। हमरे नाम बिन काल चवाई॥
जैसे रावण तप नित कीन्हा। दशशिर काट शिवहिं नित दीन्हा॥
मगन भये सेवा वश रुद्रा। दियो लंकागढ खाही समुद्रा॥
कीन्हो कैद रावण सब देवा। सबै देव करैं रावणकी सेवा॥
रावणके मन गर्व सुहाती। एक लख पुत्र सवा लख नाती
दश शीश बीस भुजा लख गाजा। कहे रावण मोहि समको राजा॥
करता गर्व करे सो छाजा। सो करता संतन पग्र माजा॥
कहैं कबीर जिन कियो गर्व छल। सत्य भक्त बिन परे नरकमल
रामचंद्रसो ताहि हताये। सब परवार रिष नगर रिताये॥

बांचे भक्त ठांव विभीषन। हंकारी मले भो सब जन॥
तस छल गर्व निरंजन कीन्हा। जोग जीत तबहीं शिर छीना॥
ताते भक्त करो मन लाई। सत्यनाम भज सब सुखपाई॥
रामचंद्रके हृदय कबीरा। कृष्णके शीश गंभीर कबीरा॥
ताते राम कृष्ण जग जीता। नाना रंग जुगन जुग कीता॥
सतयुग त्रेता द्वापर माही। थोडे पाप बहु पुण्य कमाहीं॥
कलयुग पाप करिहैं बहु लोगा। सुख किंचित् ताते बहु रोगा॥

दोहा–ब्राह्मण औ संन्यासी, काजी प्रजा झार।
सब होइहैं आमिषभष, कोटि माहिये न्यार॥

कलिके भूप कहें गउ वंदा। प्रजा दुख दे आप अनंदा॥
राजा तबलग भोगहिं राजु। जबलग दान पुण्य व्रत साजू॥
पुण्यहीन नृपत जड जुडा। पुण्य घटे राजा बिन सुढा॥
पुण्य कीन्ह बहुते एक साकट। गुरु बिन सकल पुण्यभौकरकट॥
कलिमहँ पतिव्रता बहु नाहीं। सती यती गुरुभक्तविरलाआहीं॥
पतिव्रता विश्वा कलि गारी। विश्वा सो जो बहुत भतारी॥
दुनियाके पतिव्रता पत भजी। साधु सो जो पतिव्रत सजी॥
गुरु सोई सो अंतहु मीठा। जन्ममरण गुरु लागहिं सीठा॥

दोहा–पतिव्रता सोइ जानिये, जो अपने पतिरात।
अपना पति सोइ जानिये, जो कहे अमरपुरवात॥

अम्मरदुलहिनअम्मरवरचाही। जीव अमर सत्पुरुषके व्याही॥
सत्यपुरुष अम्मर अमरापुर। तहँवा काल जंजाल दुख दुर॥

सोई पुरुष सत्यनाम कबीरहम । हमरे डर डरें निराकार यम ॥
कहे कबीर हमरे सब कीन्हा । ताकर तोहि बताऊं चीन्हा ॥
जाकर अंस दरद तेहि होई । गुरु बिन राखनहार न कोई ॥
गुरु सोई जो भौते न्यारा । नहिं कुछ जातपात व्योहारा ॥
पूजे बिन पूजे सुख माने । पूजा परम भक्त रत जाने ॥
कृष्ण सुनो गुरुमतकी बाता । गुरु संत करता पितु माता ॥
सबके गुरु अमरापुरवासी । कलिं प्रगटहिं डासातनकासी ॥
दास कबीर सोई सतनामा । कहें कबीर हमरे सोइ कामा ॥
कहें कबीर बडा जो होई । होय गलतान प्रेम बस सोई ॥
पेते गर्व करे छूंछेपर । गर्वके सीसा वा देखे घर ॥
छूंछे गर्भ ब्रह्म शिव कीन्हा । सत्यनाम लखि सुरतन दीन्हा ॥
विष्णु सतोगुणकछुलखि पावा । ताते हमसों प्रेम बढावा ॥
बिन कबीर जिव कोइ न तारे । श्रीकृष्ण यह वचन उचारे ॥
कहें कबीर सब जीव है मोरा । करिहों जीवन बंदीछोरा ॥
सब जिव अहिं हमारीव्याही । बिन परचे यमके मुख जाहीं॥
पिया तज भये जार जम जारी । जार भजे बूडहिं भ्रम भारी ॥
जगकरजीवन नामसो सांचा । सोई नाम विदेह सुख राचा ॥
सरगुण पांच तीन बस देहा । तासु परे है नाम विदेहा ॥
देंह विदेह सकलको मूला । सोई सत्य कबीर हर बोला ॥

व्यास सुखदेव कपिल वचन ।

कहेंव्यास सुखदेव कपिलमुनि । पतिव्रता सद्गुरु सेवक धनी ॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर सुन विष्णु व्यासा। सुनहुकपिलमुनिपतिव्रतभासा॥
पुरव कुण्ह होय पतिवरता। पूरव कुर होय बहु भरता॥
बहु भरता बेविचारी नाऊं। पतिवरता शुभ चार कपाऊं॥
राजा एक रहो दुगपाला। ताके गृह जन्मे दोइ बाला॥
कीन्ह व्याह दोनोंके ताता। बेविचारीकेमनस्वामीनहिंराता॥
बेविचारीके स्वामी अनारी। कोहवर कछु न दीन्ह चिन्हारी॥
सुभिचारी पतिव्रताके स्वामी। मनमो तर्क कीन्ह गुरु ज्ञानी॥
पतिवरताके स्वामी मन कहा। मैं जैहों देसंतर जहां॥
तिवइ कीन्ह देहु कछु आजू। तब पुन होइहै दंपत काजु॥
दंपति स्त्री पुरुषहिं कहिये। गुरुविनमुक्तिकबहुँनहिंलहिये॥
गुरु सोई जो अंतहु मीठा। जन्ममरणगुरु विननहिं छूटा॥
कहैं कुंअर सुन त्रिय पतिवरता। चलि हैं दिसंतर तुम्हरे भरता॥
अपने हांथ खवावहु मोही। भोजन चीन्ह देउं मैं तोही॥
मोर नाम ले वहु नृप अइहैं। हमार नाम ले तोहि भुलै हैं॥

दोहा--ताते कछु प्रशादके, मोकहँ आन कराव।
जो आवे सो पुनि तेही, पूछिहो भोजन प्रभाव॥

सुनतहिं दुलहिन विकल भई मन। स्वामीके पग गिर करुणाकर॥
बहुरि जोर युग कर युग रोईं। तुम विन मोहि रक्षक नहिं कोई॥
मोहि तजि पिया कितहु जनि जाहू। तुम विन मोर करे को निबाहू॥
मात पित बंधु परिजन जेते। पिय विन करकटदुर्जन भये तेते॥

मोहि त्रियहि गाडेहि चाहे डारी । केहि कारण पिय दिसंतर सारी
व्याह करन चाहे सब कोईं । नारि निबाह करे कोइ कोईं ॥
कहें कुंअर सुभ्रचार बेविचारी । सुनहु सुरत धर सीख हमारी ॥
कच्चा कली बन मधुकर योगू । तबलग मधुकर चिंताहि वियोगू ॥
हमरी तुम्हरी सुरत एक जानो । पिय गुरु वचन हृदयपर आनो॥
नर होय नारीके रँग राता । तिनको कोइ न पूछे बाता ॥
नार सोइ जो कान न छोडे । मर्द सोइ जो एकोन न छोडे ॥
और काज हमरे कछु नाहीं । गुरु खोजन दिसंतर जाहीं ॥
गुरु विन काज कबहुँ नहिं होईं । ब्रह्मा विष्णु महेश्वर सम कोईं॥
करता आप जो तन धर आवे । तो गुरु बिन नहिं जग यस पावे
ना जग यश ना यमते छूटे । गुरु विन निराकार यम लूटे ॥
गुरु सोईं जो निरंजन मारा । सो गुरु भौजल तारनहारा ॥
अमरलोक ले जिव पहुँचावे । त्रिगुण त्यागले चौथे मिलावे॥
सोईं गुरु जो अंतहू मीठा । गुरुते जन्म मरण सब छूटा ॥
ताते अब चित धीरज धरहू । मानहु वचन तुमहु गुरु करहू ॥
यह जीव है कहे सुघ घरकेरा । कहे वेद सतलोक जिवडेरा ॥
सत्यलोकते सब जिव आया । निरंजनके डहन समावा ॥
निरंजनसो अधिक जो होईं । ताके सुमरण बांचे लोईं ॥
जाके डर डरे काल निरंजन । परम जोत सो काल शिर भंजन॥
करुणा मैं कहाय जग प्रगटे । तिनके त्रास निरंजन हटे ॥
सोईं अचिंत सत सुकृत सद्गुरु । सोईं मुनींद्र त्रेता शुभ पग धरु ॥

दोहा–सोइ समरथ सत्यनामहै, तेहि प्रथम नाम कबीर ।
कलिके जिव तारन कारण, प्रगटहिं दास कबीर ॥

दास कबीर कलिमहँ कहाई । सत्यपुरुष जग प्रगटहिं आई ॥
तब यम सो छूटा हम भाई । जो कबीरके शरण समाई ॥
सुन पतबरता स्वामी कहई । गुरु विन मिथ्या सब जग अहई ॥
मात पिता सुत संपत् दारा । स्वामी तन धन जोवन छारा ॥
जीवके स्वामी सांचा सोई । सो कबीर सद्गुरु दुख खोई ॥
हमहू लेव कबीर पंथ सीखी । तुमहू लेव कबीर हिय लीखी ॥

पातिव्रतावचन ।

कह पतिव्रता सुनो प्रभु स्वामी । कतहुँ स्त्री कहे पियसे दुरबानी ॥
स्त्रीके गुरु पुरुष जग कहई । पिया प्रताप निरभैं निरबहई ॥
पतिव्रता गुरु स्वामी सिखावा । और सबन गुरु भक्त दृढावा ॥

कुंअर वचन ।

कहैं कुंअर हम तनके स्वामी । तुम अरधंगी व्याही वामी ॥
जीवके स्वामी सत्यकबीरा । तास शरण जिव व्यापे न पीरा ॥
करुणा मैं कबीरकी कला । कबीरके भक्त आद जे भला ॥
जो कबीर कलियुग ना प्रगटे । चले ना भक्त काल न हटे ॥
काल दोहाइं कबीरके माने । और काहु यम नाहिं गुदाने ॥
बलि हरिश्चंद्र मोरध्वज राजा । जिनके सदा धर्म वरत साजा ॥
पांचो पंडव नरक गक्षौ चाको । दानी करण महा अति बांको ॥
कहँलग कहों तिहुपुर धर्मधारी । छलके सबहिं निरंजन मारी ॥

जो कोइ शरण कबीरके लागा । ताकर दुख संकट सब भागा ॥
जिमि जग पतिव्रता शुभचारी । आदि पतिव्रता सद्गुरु व्रतधारी ॥

दोहा—सत्यकबीर विना जीव सब, कतहुँ संच न पाय ।
कहें स्वामी सुन गुरुमुखी, पिय सत्यकबीर लौलाय ॥

स्वामीके सिखापन ठियमहँ गुना। क्षुधावंत पिये लिखा दुख दूना ॥
पिया पशु टेक उठी गृह ताका । रंगमहल मिल उरदक फांका ॥
जेहरकेर चुलह तिन कीन्हा । प्राणदानरूप घृत दीन्हा ॥
दीपक अग्नि वस्तर चूलह बारी । बिनबर थार राख दल हारी ॥
ले स्वामीके सन्मुख ठाढी । सलिता दृगते वार अति बाढी ॥
आज्ञा पाय धरेउ पिय आगे। बराबर दुइ भाग किहु कुंअर सुभागे ॥
एक आप लिय एक त्रिय दीन्हा। अर्पण कर पुन भोजन कीन्हा ॥
दे खरचा पुन बीरा दीन्हा । मुख जूठन कुल्ला तब कीन्हा ॥
भये संतुष्ट जूठन देव दासी । हर्षित लेहु जो मिलि अविनाशी ॥
चरणोदक पुन प्रथमहिं लीन्हा । महाप्रसाद तब भोजन कीन्हा ॥
सुखसागर पिय दरश सुजानी । पिय विरहिन पिय दरश लुभानी ॥
लौंग जायफल पान मिलाई । बीरा रच देइ पियहिं खवाई ॥
कहा कुंअर अब आज्ञा देहू । हम गवने तुव प्रतिव्रत लेहू ॥
यह सुन कुहकी मार धन रोई । कुहक सुनत धाय सब कोई ॥
मात पिता कह कुँअर नवेली । गरे हार करु कुँअर चवेली ॥
रोई आन दुख बूझ सयाना । कहैं कुंअर नृप बोलिय आना ॥
हम कह परि और कछू धंधा । तुम सबके मन पापके संधा ॥
कुंअर सो बुध जान सब बूझा । कहा बुझाय तबे सब सूझा ॥

दोहा-ठांव २ सब सैना कहु, कुंअर सोइ अलसाय ।
पहिला भिन्न सार अगम पंथ, कुंअर धरे उठ पांय ॥

निकसा कुँअर सत्तगुरु भाषी । गुरु कर फिर आयो अस भाषी ॥
निसरा कुँअर दिसंतर भारी । कुँअर जाग एक सर सेज पारी ॥
उठि अकुलाय अंगना भइ ठाढी।पियकी प्रीति अंतर्गत बाढी ॥
माय बाप कँहँ डांक जगावा ।मम अभाग पिय तरिथ सिधावा॥
रोर करे दुलहिन पिय लागी । पियके बोल हिये उठ बृह आगी॥
सबे विकल होय रोवन लागे । कहें नृपत कस रोवहु अभागे ॥
पठवहु मानुष पर आती । कुँअर होय पितु बंधु जमाती ॥
धाय बहुत खोज नहिं पाये। नृपत समोघ कुँअर समुझाये ॥
पतिवरताके स्वामी पूरा । सर्वस माग चेताय तेहि सूरा ॥
बेबिचारी कर स्वामी कांचा । चीन्ह कछू नहिं बोलिस बांचा॥
वहां दिसंतर गयो कौने काजा । बेविचारी लिहे गौ दुतिय राजा॥
बारह वर्ष बीत जब पूरा । आन कुँअर आवत बाजे तूरा ॥
कियो नृपत सन्मान बहूता । कस तन ठहरे ताके पूता ॥
पहिले पहर तेहि कुँअर बुलावा । पतिव्रता पट अंतर दिखावा ॥

दोहा-पतिवरतासुं दुहि कहा, पूंछ कुंअरकी बात ।
कौन वस्तु तुम खावो, पतिव्रता संग रात ॥

भगली कुंअर कहे भष भाता । बराबरी झकमास सुहाता ॥
कहे पतिव्रता यह नहिं मम स्वामी।विदाई नहिं कहुँ लसकर जाही॥
यही भांति भूप बहु भगली । पतिवरतहिं ठग सके न नकली॥

भूप अनेक कांक्ष बहु आये । हांथ न लगी जाहि पछताये ॥
नृपत पद पतिव्रता राती । पिय आज्ञा किया चहे पिय माती
गुरु करेको अंकुर कीन्हा । पुन पिये प्रति अबोझा दीन्हा ॥
जब पिय आवें देखों आंखी । तब गुरु करों कबीर सत भाषी॥
गुरु प्रतीत तुरंत मिल स्वामी । धन्य सद्गुरु गुरु अंतर्यामी ॥
बाजत गाजत आव बराता । सुनके क्रोध भयउं तब ताता ॥
तब पुत्री कहँ गारी दीन्हा । धन सर्वस नाहक खर्च कीन्हा॥
सुना कुंआरि पिय करे अवाई । अधिक प्रीत कब पिय पद पाई॥
पिता पहां दुलहिन चलि गयऊ । पूछ पिता पुत्री कस आयऊ ॥
कहे पतिव्रता संभाषण करहू । नहिं तो द्रव्य मम गहना धरहू ॥
सुन पितइ पठय नौबारी । किहुं सनमाने जेता धारी ॥
बहुरि दीप बार कुंआरि बुलाये । माला तिलक झलक झलकाये ॥
सतकबीर करुणा वे बोले । तब पतिव्रतते श्रवण खोले ॥
पूछे सुंदरी कहु नृपबारा । कोहवर जैबे कौन प्रकारा ॥
परदा सात चदर देहु अंतर । निज पिया नाम जपहिं उरमंदर॥
कहें कुंअर जानहिं अरधंगा । दुइ बरा पायऊं एके संगा ॥
यह सुन पतिव्रता पगु लागी । परदा सात भरमपट त्यागी ॥
परे चरण पिय छुये न ताहीं । पूछे विष्णव भये कि नाहीं ॥
कहे पतिव्रता यह मन आऊ । जिहि पियसों पग हो तेहि पाऊ॥
कहे कुंअर साकट जेहि नारी । तेहि संग बूडे पुरुष अनारी ॥
यह कहि कुंअर चला अपना दल । साकट हांथ न उचित लेन जल॥

पीछे लाग चली पतिवरता । बहुर उत्तर दीन्हा तेहि भरता ॥
हम अब जात आह बरिआता । गुरु करब तो होन तुव साथा ॥
कहे कन्या गुरुदेव बोलाई । हमहू शरण सत्यनामके जाई ॥
कहे कुंअर गुरुबंधु संग मोरे । तुरत पान लेहु तिनका तोरे ॥
भये जो मंगल अधिक उछाहा । तन गउवा मन जीवके व्याहा ॥
पतिव्रता कहे पियपद लागी । चल मंदिर मोहि करहु सुभागी ॥
तबलग मोर छुवा जिन खाहू । जो लगि मोहि गुरु शरण दिवाहू ॥
सुनत वचन पतिव्रता केरी । पाऊं परे कुँअर पगु वारी ॥
पतिव्रता गृह चल भौ स्वामी । हर्ष चले पाछे पिय बानी ॥
मंदिर जाय पलंग सुभ डासा । फूल विछौना अधिक सुवासा ॥
पलंग बैठ पिय वचन उचारा । परआतम कह दीन्ह अहारा ॥

दोहा–राजा कीन्ह सन्मान सब पुन, कीन्ह आरती साज ।
आरती होत सो मंगल, अनवन बाजन बाज ॥

सिंहासन बैठे कड़िहारा । नरिअर मोर हंस निस्तारा ॥
तिनका जमते वेग तोडावा । दे प्रवाना जीव मुक्तावा ॥
पुन दे तिलक चरणोदक दीन्हा । कागते हंस रूप कर लीन्हा ॥
चरण टेक कीन दंडवत साता । सद्गुरु दियो सीस तब हांथा ॥
दीन्ह प्रसाद नारियर गरी । बहुर प्रसाद नवहु देहु फेरी ॥
पुन सद्गुरु तेहि सिखापन दीन्हा । सदा रहहु पिय चरण अधीना ॥
पतिव्रता सुन शब्द सिखापन । गुप्त प्रगट एक ब्रह्म पुरातन ॥
सत्यनामप्रति पिय गुण जानी । पतिव्रता पिय पद लपटानी ॥

चरण टेक पियसो कह बाला । हमहु देहु पिय तुलसीमाला ॥
दीनदयाल दिय भेष गुरुसेती । कहा करहु प्रसाद सुनेती ॥
पतिव्रता प्रसाद बनावा । सतसुकृत कहँ भोग लगावा ॥
सद्गुरु कहँ पकवान पवाई । राजा निज कर बाव डोलाई ॥
पतिव्रता पुनि स्वामि जिमावा । नाना व्यंजन थार भरावा ॥
हर्ष नृप प्रसाद पुन कीन्हा । सत्यनाम सुखसागर चीन्हा ॥
अचवन कर कुंअर असनादा । गुरुमुख किनका लेहु प्रसादा ॥
सद्गुरु कहें सुनो पतिवरता । गुरु नारायण सम पिय भरता ॥
पतिव्रता पिय जूंठ अहारा । औ चरणोदक सम वसु धारा ॥

दोहा—सब सुख पुर रहा तेहि, जेह घर पिय तन कंथ ।
वेबिचारी नष्ट गई, तेहिना मिले अघ अंत ॥
बालापन पिय ब्याहके, पिय जो गये विदेश ।
पतिव्रता पिय पाइया, विभ्रा नरक प्रवेश ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर यह जीवके लेखा । ज्ञानी होय सो करे विवेका ॥
तैसे जीव कहँ जार भुलावा । काल निरंजन जार लखावा ॥
सत्यनाम सब जीवके पीऊ । निज पिय ताहि न चीन्हे जीऊ ॥

कृष्णव्यासवचन ।

विष्णु व्यास विनवें कर जोरी । सत्यकबीर अगम मत तोरी ॥
सबके मूल तुमहि सतनामा । सब जीवनके तुम सुखधामा ॥
कहें कृष्ण मैं कबीर बल गाजों। सद्गुरु चरण प्रताप विराजों ॥

अब ऐसी दाया प्रभु करहू । सब दिन तुम मम हृदय संचरहू ॥
जो तुम मम हिय करहु प्रकाशा। तब छूटे मम यमके त्रासा ॥
तुम बिन को जिव राखन हारा । निरंजन जीवहिं करे अहारा ॥
कहा करौं यमके डर दरपों । काल निरंजनके डर कंपो ॥
अब मोहिं देहु मुक्तके पाना । यम त्रण ताडे करहु निरवाना ॥
हम सब तुम्हरे जाप पोथे । तुम जागे औ सब जग सोथे ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुन कृष्ण मुरारी । निर्गुण भक्त करे तेहि तारी ॥
निर्गुण आद अजर सतनामा । सद्गुरु सत्यनाम सुखधामा ॥

अर्जुनवचन ।

कहैं अर्जुन सुन श्रीभगवाना । सत्यकबीर कर्ता निरवाना ॥
ीव कबीर साहेबके ठाहर । तेहि यम खाय जो कबीरसे ठाहर

कृष्ण वचन ।

कहें कृष्ण अर्जुन सुन वाणी । सतपद गहो कबहुं नहिं हानी ॥
सबसों कहों कबीर है पहली । कबीरसो लगु सो रंग गहिली ॥

अर्जुनवचन ।

कहैं अर्जुन हम हैं अज्ञानी । जेहि अघ कर्म सोई अज्ञानी ॥
सोइ अज्ञानी शुभ पंथ न आनी। भ्रमत फिरे सदा अज्ञानी ॥
श्रीयदुपति मोहि दीन्ह चिन्हाई। तब हम कबीर पुरुष लख पाई॥

दोहा--अर्जुन भीमहि औ गले, भये युधिष्ठिर ठाढ।
सबदेवन कुल औ कृष्ण मिल, विनती कराहिं अति गाढ ॥

युधिष्ठिरकृष्णवचन ।

कहैं युधिष्ठिर कृष्ण समेता । सत्यकबीर तुम कृपा निकेता ॥
अब मोहिं सब कहँ तारहु स्वामी । सत्यपुरुष तुम अंतर्यामी ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुन सांचा सोई । मोहि विन जीव तरे नहिं कोई ॥
जाकर अंस ताहि दुख व्यापे । आनके अंस आन पहुँचोपे ॥
कहैं कबीर जीव अंसहि मोरा । छलके जार निरंजन चोरा ॥
जो सुमरे सत्यनाम गोसांई । ताके निकट काल नहिं जाई ॥

युधिष्ठिरवचन ।

कहैं युधिष्ठिर दोइ कर जोरी । मुक्त पान दये जिव बंदीछोरी ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर निज अंस प्रगट करु । सोई अंस विष्णु अंसमे लयधरु ॥
आद अंत औ निर्गुण सरगुण । पांच पचीस औ चौदह त्रिगुण ॥
अजर अमर सो सबके मूला । जासु अंस सोहंग अंकूला ॥
केदल ब्रह्म सोहंगम जीऊ । रमिता सोहंग पै तन धीऊ ॥
क्षीर मथे सो करे सुवासा । सो सुवास पर आतम पासा ॥
परआतम आतमके करता । सो सब मूल सकलके भरता ॥
सो सत्यनाम अमरपुर माहीं । सब जिव सत्यनामके आहीं ॥

युधिष्ठिरवचन

कहैं युधिष्ठिर तुम सत्यनामा । सत्यकबीर संतन सुखधामा ॥
देहु परवाना अधम उधारो । पांचों पंडव कहँ तुम तारो ॥

कबीरवचन ।

दोहा-कहैं कबीर सुन धर्मसुत, आनहु आरती साज ।
देव प्रवाना मुक्तको, वेग करो जिवकाज ॥

जाहु कुबेर पहँ तुम राजा । आनहु साज करो तुम काजा ॥
जाय कहा नृपपांह कुबेरू । आरती साज कबीरहि हेरू ॥
लाय कुबेर सकल विध नामा । नृप साजले आय तुलाना ॥
आये समर्थ चरण मनावा । साहेब कीन्ह सबहिं सत भावा ॥
कृष्ण कुबेर सो चौका सँवारा । जोत प्रकाश सिंहासन सारा ॥
शब्द उचार अनाहद गाजा । ताल मृदंग झालरी बाजा ॥
सत्यकबीर तब नरिअर मोरा । पांचो पंडवके बंद छोरा ॥
मगन भये प्रवाना पाये । आद सुरत सतलोक पठाये ॥
कीतम सुरत संसारे राखा । पुष्ट पुन घर गवन सो भाषा ॥
कहैं कबीर प्रसाद बतावहु । समदृष्टि पतिव्रतक मनावहु ॥
रजगुण तमगुण भोजन तजहू । सद्गुरु भोग नाम सत भजहू ॥
सतकबीर सिखवन दे सबहूं । सुमत विना कोइ तरे न कबहूं ॥
प्रेतभक्ष तज देव भक्ष लीजे । सद्गुरुके चरण चित दीजे ॥
सद्गुरु भक्त साधुकी सेवा । सकल आस तज देवी देवा ॥
जाहि भजा चाहे जो कोई । तेहि पंथ गुरु हर लखे सोई ॥

भगवानोवचन ।

कहैं युधिष्ठिर सो भगवाना । तुम्हरी घरी शुभ आय तुलाना ॥
सोई संत जो सद्गुरु सेवा । सद्गुरु सब देवनके देवा ॥
एकादश कोट देव विष्णु अंगी । हरसमेत भये सद्गुरु संगी ॥

दोहा–आगे पीछे सब मिल, लियो मुक्तको पान।
ठीका पुरे सुखघर गये, सत्यकबीर व्रत ठान॥

सत्यकबीरके सेवक पतिव्रता। सतकबीर सब अघके हर्ता॥
कोटि २ जिन किये अपराधा। गौ द्विज हत्या अगम अगाधा॥
केहु प्रकारकी हत्या होई। कोट तीर्थ किये छूटे न सोई॥
जो जिव सद्गुरु शरण समावे। सतकबीर सुमरे सच पावे॥
जन्म २ अघजार नसावे। यम त्रिण तोड प्रवाना पावे॥
धन्य सराहिये ताकर भागा। जो सतनामके शरणहि लागा॥
कहें कृष्ण सतनाम कबीरा। मेटे जीवको भौ दुख पीरा॥

कबीरवचन।

कहें कबीर हम लोकहिं जाहीं। जो सुमरे मोहिं हम तेहि पांही॥
यह कह सद्गुरु गुप्तभे तहां। विष्णु व्यास सब स्तुति माहा॥
सत्यनाम कहि सीस नवाई। सत्यनाम सुमरे सच पाई॥
सत्य गहे बांचे सब कोई। सत्यनाम जप सब सुख होई॥
सत्यनाम स्मरण सुखमूला। सत्यनाम प्रति उभे न तूला॥
प्रतिस्वासा सुमरे सतनामा। विष्णु व्यास सतनाम विश्रामा॥
महाविष्णु सतनाम अधारा। सत्यनाम ते आय निराकारा॥
सत्यनाम सो सतपुरवासी। सतपुर अमरलोक सुखरासी॥
विद्यावेद पढहिं नर लोई। सत्य अमर कहँ लखे न सोई॥
सत्य सुकृत जाके घट पूरा। सत्यनाम तेहि रहत हजूरा॥
सबके घट महँ अम्मर स्वासा। सो सतनामको अंस सुवासा॥

जीव सोहंग रमता थिर करता। भंरा खाली कर खाली भरता ॥
सत्यनाम सब महँ सोइ न्यारा । सोइ परम गुरु भो कंडहारा ॥
सत्यनाम सद्गुरु कहाये । पुन गुरु तात मात बंधु भाये ॥

दोहा--सकल समाये रहे सो, प्रगट होहिं जहँ सांच ॥
विष्णु व्यास सुखदेव कहें, सांच बिना जिव कांच॥

सांच सोई जो विनशे नाहीं । जठर योनि नाहिं आवे जाई ॥
जब यम जीव कहँ सांसत कीन्हा । जीव पुकारे सद्गुरु लीन्हा ॥
कस जिव अघ पतसे बहु जामी । अमरलोक अम्मरपति स्वामी ॥
कहि जो कियऊं ताहुपर जारे । सत्यनाम सो जरत उबारे ॥
तत्क्षण प्रगट भये सतनामा । कालहिं मार बिंधसेउ धामा ॥
स्वास निकस तन सुन्य कहाया। काल मेट सुन्यकार बसाया ॥
दाना भीर राखेउ यहि लागी । बिना पयोद दाम न पागी ॥
सत्यनाम सोइ सत्यकबीरं । जोगजीत है काल बधीरं ॥

दोहा—बंदीछोर कबीर प्रभु, राम अल्लाह कबीर ।
प्रथम विष्णु मिल धायके,कबीर राज दिये थीर॥

ब्रह्मा पत्री कर द्रुम साली । सत्यकबीर कुल विष्णु अमाली॥
शब्दवेदके मते जो चलि है । ताके त्रास काल महि खिलि है॥
वेद पुराण कुराणकी बाता । विरला सैल निरख मग जाता ॥
गुरु साधु सो होय अधीना । सेवा सबके स्वामी चित दीन्हा॥
सबन मथनके देख परेखा । स्वामी सत्यकबीर अलेखा ॥
विष्णु व्यास अज कृष्णउचारा। सत्यकबीर जिव तारन हारा ॥

दोहा–सबके मटुक कबीर गुरु, बिन कबीर कुछ नाहिं ।
सुरत स्वास सुख संतत, सो कबीरके छांहि ॥

अविचल स्वामी परख कबीरा । महाकालको मस्तक चीरा ॥
कहें कृष्ण कबीरसे बैना । निस दिन दरश देहु भर नैना ॥
गुप्त प्रगट हरदम देहु दरशन । सबहि पदरस प्राप्त गुरु प्रशन ॥
दरश परस मम हिय रहु भीनी । कृष्ण कबीर कहँ बिनती कीन्ही ॥
आये कबीर कृष्णके सीसा । ताप गई शीतल हर दीसा ॥
जबलग रहे कबीर डर माथा । तबलग कृष्ण सो रहे सनाथा ॥
जबहिं कबीर गुप्त होय जाहीं । तब गोपाल पथ पितु जे माहीं ॥
पितु जननी धर्मराय भवानी । ताके छाया अनित चलानी ॥
चलहिं अपंथ जो विष्णु सयाना । तब पितु काल बांध सिरहाना ॥
बार अनेक विष्णुहिं ग्रासे काला । तबहिं विष्णु औ सब बेहाला ॥
तब कबीरके शरण समाये । कबीर शरण जग त्रास नसाये ॥
नगद पंथ निरगुण कबीरा । सरगुण जानहु भर्म खोगीरा ॥
सरगुण तीरथ व्रत भ्रम पूजा । पुन सरगुण काया यह दूजा ॥
निर्गुण एक कबीर अविनाशी । ब्रह्म बोलता सब घट वासी ॥
बहु निर्गुण बरणो अब नीरा । दुखित निरवान सकल शरीरा ॥
नीर कबीरको अंस बखाना । शीतल नीरसो साधस ज्ञाना ॥
नीर बिना नहिं जीवे प्राणी । नीर सकल शरीर निसानी ॥
अन्ननेत औ तरवर त्रीना । कंद मूल फल दल बिनहीना ॥
दल पानी करुनाम बखाना । दल देव भाषा जल नर जाना ॥

पानी नीर उदक अंबु वारी । जल कह जले नीर संसारी ॥

दोहा-नीर कबीरहिं मिल गया, अंतर रहा न रेख ।
तीनों मिल एकै भया, नीर कबीर अलेख ॥

जाके होय सत्तके जोरा । सो गुरु करे कबीर बंदीछोरा ॥
जो पुन दया सत्तके हीना । तिन भज त्रिगुण देवी पंथ लीन्हा
त्रिगुण मता देवी सरगुण संसारी। निर्गुण सत्यकबीर जिवतारी ॥
नीर विना नाहिं पग पछली । महि विना कोइ बैठे न चली ॥
सो महि मीन रूप स्थापा । मीन भषहिं बड लागहिं पापा ॥
मीन एक गौ द्विज शत कोटी। तिल भर मीन नरकके कोटी ॥

महादेववचन।

क्रोध महादेव वचन उचारा । विनामीन नहिं मातु अहारा ॥

अष्टंगीवचन ।

उठ अष्टंगी सबहिं बुझावा । कक्षप सूकर महादेव खावा ॥
मैं तो आद निरंजन बामी । हमरी प्रत को श्रवण प्राणी ॥
एक दिन जो कोइ तिलभर खाई। पुरुषा सहित सो नरक सिधाई ॥
हम तो विष्णु ब्रह्मा शिव माता । एक दिन मम कामन राता ॥
ब्रह्माहु मम वचन नसाये। तुमहु शिव नीके बरताये ॥
विष्णु भागि गो साधुन संगा । खाहिं मीन हम तेहि नहिं संगा ॥
हमहू मीन खाय अघ बूडे । मांस खाय अघ मुडे बूडे ॥
मल शिव सभा माहिं हम हारा। तुरत भस्म होहु श्राप हमारा ॥
भयउ भस्म शिव बहुरि जियाय।। सर्व जीवके तेहि मीन खवाया ॥

मीन खवाय ज्ञान हर लीन्हा । प्रेतक ईस महादेव कीन्हा ॥
ब्रह्मा कहा जननी परखावा । औरहिं ब्रह्म ज्ञान बतलावा ॥
ब्रह्माहि बधुपुन तुरत जिआवा । मीन मांस भर सुरा खवावा ॥
ब्रह्मा कहँ तब कीन्हेउ प्रेता । द्विज तन जगत भेष धर केता ॥
प्रेत अंस औ नौ गृह अंसा । भषि हैं सखा तुव मांस परसंसा ॥
विष्णु जननी कहँ सीस नवावा । मैं बालक माते बरतावा ॥
भई विष्णु पर मात दयाला । कबीरके हांथ देवाइव माला ॥
कहे अघा कबीरसे रोई । विष्णुहिं चांप सके नहिं कोई ॥

दोहा—ब्रह्मा शिव एक मत भये, विष्णुहि करिहै उदास ।
तोहि शरण कबीर हरि, राखि लेहु यहि पास ॥

तुमका अघा सौंपहु आजू । हरिकर कीन्ह प्रथम हम काजू ॥
विष्णु साधुकी संगत कीन्हा । ताते हम विष्णुहिं चित दीन्हा ॥
साधु सनेह औ गुरुके सनेही । कबहुँ दोष नहिं आवे तेही ॥
तुमहू अघा सेवहु साधू । गुरुकर मिटे काल उपाधू ॥
सहस्रमुखी सिखवन मान हमारी । हमरी सुरत ध्यान चित धारी ॥
एक काल निरंजन राई । बांचहि हमरे हुकुम चलाई ॥

अष्टंगीवचन ।

कहे अष्टंगी हम तुव चेरी । तुम्हरे शरण जीव सब केरी ॥

दोहा—सुरतके चौका सबांरके, दीन्ह अष्टंगी पान ।
आद कला सो लोक गई, क्षीतम अंस सब जान ॥

सत्यकबीर प्रमारथ बोले । कबीर प्रताप सबे पक्ष खोले ॥

जापर दया करहिं सतनामा । सत्यनाम सो कबीर सुखधामा ॥
सत्यकबीरकी जापर दाया । सत संतोष दया तहँ छाया ॥
कबीर सुवास फूल तिल संसीरा।सत्यकबीर घृत जग तम हीरा ॥
कबीर अमी विष राय निरंजन । तारहिं कबीर काल शिरभंजन॥

दोहा-कैसो अधीन अगाध होय, जो गुरु करी कबीर ।
विष्णु व्यास सत कहतहैं, तेहि छूटे भौजलपीर ॥

कबीरके सुमरे पाप नसाईं । कबीरके भजे यम निकट न जाईं ॥

अजहरवचन ।

अजहर विनवे दोइ कर जोरी । श्रीकृष्ण सुन विनती मोरी ॥
कहु सोहंग कर मूल बखानी । कासो भये सोहंग उतपानी ॥
निराकार अब्बा पितु माता । तिनतो कीन्हा सोहंग घाता ।
मात पिता घाती नहिं होईं । गुरु साध घाती नहिं कोईं ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण सुन रुद्र वियोगी । तुव समान नहिं जगमा जोगी॥
सो तुम आद सोहंग न चीन्हा ।हम तो आद सतनाम गहि लीन्हा॥
सत्यनाम जग प्रगट कबीरं । स्वासा सोहंग अंस सत धीरं ॥
अमर कबीर अमर सतलोका । अंस सोहंगम कबीर निहसोका ॥

शिववचन ।

कहें शिव जो कबीर करतारा । मम बल जीतहिं तो हम हारा॥

दोहा-बाढे शिव आकाश लहि, कीन्ह कृष्ण पर धाव ।
विष्णु कबीर पुकारहीं, कबीर प्रगटे तेहि ठांव ॥

भयउ सुगंध महा घन घोरा। भयउ अंजोर भाग चल चोरा॥
लिंग समेट गदहा होइ भागा। तबहिं विष्णु शिव गोहने लागा॥
फिर शिव देख कहा बल भयऊ। कबीरके त्रास गदहा होयगयऊ॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर हरि आव सिंहासन। विष्णो द्रोह हीन भक्ष डासन॥
प्रेत पिशाच भूत रखवारे। तासो बंजनी कहा हमारे॥
हमरे साथ भजन सतनामा। भूत पिशाच घोर अघकामा॥
साधनका जो दुखावे आई। आपन बल करे नाम सुहाई॥
हमरे नाम सुरत चित गहहू। सकल समस्तो निर्भय रहहू॥
प्रथमहिं सिंध मथन तिहुं लरऊ। कबीर प्रताप तहां निस्तरऊ॥
ब्रह्मा शिव देवी कर दूता। कहैं विष्णु मोहि दुखावे बहूता॥
सत्यकबीर एक तुव प्रतापा। कालहिं जीत भक्त स्थापा॥

दोहा—कहैं कबीर कृष्ण सुन, हम तोहि सदा सहाय।
सुमरे नाम जो मेरो, और सतपंथ चलाय॥

त्रिगुणके पिता निरंजन ऐठा। पुनहिं पाप करावे बैठा॥
पुण्य पाप नहिं नाम समाना। साधुसेवा गुरु भक्त प्रणामा॥

दोहा--कहैं कबीर कृष्ण सुन, साधु सरूप है राम।
विष्णु साधु सरूप गुरू, गुरु सरूप सतनाम॥

बहुरि शंभु सनकादिक आये। ब्रह्मा अध्यागन समुझाये॥
यहां कबीर कृष्ण सतरूपा। अंतर दीन्ह दरश नहिं भूपा॥
एक वार शिव बरस अंगारा। सब अंगारपर रुद्र कपारा॥

जरा जरे बांच लट तीनी । बहुर कबीर भस्म तेहि कीन्ही ॥
तब अज सनकादिक चल भागी । तबहींके तन लूक सो लागी ॥
तब सनकादिक विष्णु पुकारा । विष्णु कहा सुमरहु करतारा ॥
कबीर बख्से तो बांचहु झारा । सबके मूल कबीर करतारा ॥

सनकादिकवचन ।

कहैं सनकादिक राख कबीरा । ज्वाला छुटा भौ निर्मल शरीरा ॥
तब सनकादिक स्तुति कीन्हा । सत्यकबीर कहा सब चीन्हा ॥
सनकादिक तन तपके पूजा । हीरा विष्णु रुद्र अज गुंजा ॥

दोहा—सत्यकबीरके पगु परे, सनकादिक बिलखाय ।
अब तो बख्शहु चूक प्रभु, रुद्रहिं देहु जिआय ॥

सराजिव कीन्ह कबीर दयाला । चक्षुहीन जपु मुंडके माला ॥
रुद्र आंखके भा रुद्राक्षा । आपन चक्षु आप शिववाक्षा ॥
बहुर चक्षु कबीर कर दीन्हा । आद सिखापन देवे लीन्हा ॥
तुम तीनों महँ हर सरदारा । रहियो विष्णुके आज्ञाकारा ॥
तबते रुद्र कबीरहिं चीन्हा । रहियो सेवा विष्णु अधीना ॥
छांड धुरत मत जोग अराधा । भांग धतूरा माहुर साधा ॥
गगन ध्यान मन जोत प्रकाशा । परम जोत बिन सुक्क निरासा ॥
परमजोत सत्यनाम कबीरा । जोत निरंजन काल अहीरा ॥
सत्यकबीर गुप्त होय गयऊ । सनकादिक हर पूछे लियऊ ॥
कहिये विष्णु कबीरके माहिमा । हम बहु माना कबीरके सीमा ॥
कहैं हरि तुव मानिक होई । सत्यकबीरके यम डर रोई ॥
सुनहु आदके बात गोसांई । जबते हम कबीर लखि पाई ॥

प्रथमहि सतयुग यम मोहि जारो । निराकार यम पिता हमारो ॥
तीनों देव औ कोट तैंतीसा । सबकहँ जार भस्म कर पीसा ॥
जीवहिं कष्ट दीन्ह बहु काला । तहां प्रगट सतपुरुष दयाला ॥
जिन सब जीव सौंप धर्मराई । सो सत्यनाम कबीर सुखदाई ॥
महाभयंकर काल निरंजन । धर्म अजाजिल बंस अंजन ॥
अजाजील धर्मराय लखाये । आप काल करता कहलाये ॥
कहइ रक्षाके भक्षक ताहीं । ध्रुव प्रह्लाद अजहु पछताहीं ॥
भक्ष करे जिव चांपे काला । जार बार करे निपट बेहाला ॥
राम कहे सत कहे नरेशा । सत्यनाम विन कागके भेषा ॥

दोहा–धुनकट कैसे अंस भरी, समरथ सत्यकबीर ।
पतिव्रता गंगा गती, विष्णु व्यास रघुवीर ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण प्रगटे सतनामा ।सत्यकबीर जोगजीत सुखके धामा॥
हने सीस मम पितुके अनंता । जार भस्म किय यमहिं तुरंता॥
सत्यकबीर आजा मैं नाती । कबीर दुलहा हम सबहि बराती॥
कालहिं जार भस्म यम साखा । दान कदसा अंस भर राखा ॥

दोहा–धुनकट कँस अंस भरि, बहुरे काल बरिआन ॥
जाय स्वर्ग गे लागा, देवतन देख रिसान ॥

सकल देव तेहि त्रासन धावा । भाग सबे कबीर पहँ आवा ॥
तत्क्षण सत्यकबीर जोगजीता । कालहिं भस्म कीन्ह भये रीता ॥
लक्ष वार तेहि जार निकंदा । पुनि सजीव कीन्ह कहे मैं बंदा॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर वंदा तैं काकर । जाकर दास नाम ले ताकर ॥

निरंजनवचन ।

कहे काल कबीरको दासा । जिन मोहि छिनमा सिरज विनासा ॥
कहें कबीर तैं कासो डरसी । काकर भक्ष विहुन भक्ष करसी ॥
कहे काल मैं पुरुषके अंसा । पुरुष कबीर एक परसंसा ॥
सत्यकबीर सो हमरे श्रेष्ठा । और न करे छिनक महँ नष्टा ॥
बहुर सहस्र बेर तेहि जारा । सिरजेउं बहुरि काल तब हारा ॥
पूछहिं जोगजीत सुन काला । कासो डरस कहु यम व्याला ॥
बोले काल रोप सिर धुनिया। तुम्हरो दास तुव मेरे सिर मणिया॥
तुव सत्यपुरुष हम तुम्हरे चेरा । तुम्हरे दास मकुट सिर मेरा ॥
जो लेहि सत्यनाम परवाना । तोहे सम ताहि गिनो निरवाणा ॥

दोहा—सत्यकबीरके दास, जो मैं पुन ताके दास ।
जो जिव विलग कबीरसे, यम तेहि घाले फांस ।

धन्य सत्यनाम कबीर अटोटा । जिन महाकाल बांध यम कोटा॥
यमके कोट कर्म भ्रम धोखा । सत्यकबीर विन पावे नहिं मोषा॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सुन काल निरंजन । अजाजील तुम साकटभंजन ॥
हमहिं गोय कस पाया चोरा । आपहि पुरुष थाप कस भोरा॥

कालवचन ।

कहे काल मोहि व्यापेउ ऐसा । पुरुषहिं मेट राज करों वैसा ॥
जब मन महँ अस चितवन कीन्हा । दस बीस सीस टूट परभीना॥

बहुर कीन्ह मैं सुमरण साईं । सीस मोर धड लागे आईं ॥
तब मैं जाना पुरुष दयाला । सेवक चूक न मन महँ चाला ॥
निशि दिन धरों मैं पितु पशु ध्याना । पै कछु मन महँ भौ अभिमाना
तब तुम मोहिं भस्म कर डारा । कबीरते आद अंत यम हारा ॥
जो सतनाम राखे तो रहऊं । डाहे तो बिन अगिन डहाऊं ॥
दोहा–सत्यकबीर जो सुमरहीं, तोहि मैं निकट न जाऊं ।
कबीरके भक्त विहून जो, कहे काल तेहि खाऊं ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण सनकादिक सुनहू । आद पुरुष कबीर चित गुनहू ॥

सनकादिकवचन

कहें सनकादिक अब हम चीन्हा । सब मूल कबीर गम कीन्हा ॥
अब हम सत्यकबीरके शिष्या । कबीरके सुरत हृदयमो लिखा ॥
ब्रह्मा सुत हम सहस्र अठासी । कबीर बिना सब परे यमफांसी ॥
अब जिव सत्य कबीरहिं दीन्हा । कबीरके अगुवा विष्णुहिं चीन्हा

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण जब लेहो परवाना । यम त्रिण तोर संहाय सतनामा ॥
यह सुन सनकादिक धर ध्याना । कृष्णके स्तुति आप बखाना ॥
सत्यलोकके हंस संग आये । झलकत झलझल सुवास बसाये ॥
कोटिन रवि शशि एक न तुलहीं । एक हंस सासि अर्बन तुलहीं ॥
शोभासिंधु राससुख मूलं । ताहि सुख जेहि कबीरसम तूलं ॥
सत्यकबीर जग दास कहाये । साधरूप धर भक्त दृढाये ॥
इह हम कहँ यमसुखते बचावा । जगमहँ हमरे नाम खिडावा ॥

कहें कृष्ण पग समर्थ नाई । कहँ लग कहों मैं समर्थ बडाई॥
सतकबीर मेटो मम दुःखा । सनकादिक सुन प्राण पियूषा॥
यम त्रिण तोड कालमुख थूका । आरती मंगल यम घर लूका ॥

दोहा-दियो पान सनकादिको, मग्न भये सब साध ।
कहे सनकादिक सुख भये, मिटा काल आध ॥

कहें सनकादिक धन्य सतनामा । क्षण महँ हम सबको भो कामा ॥
जै जै सत्यकबीर दयाला । सनकादिक जप कबीरको माला॥
मग्न भये सब तन मन शोधा । पांच पचीस मन सहज समोधा॥
चौदह यम त्रिगुण जेहिथाकी । अरिहित सम लघु दृग एक ताकी
धन्य सो सतकबीर सत्यनामा । मैं लघु सेवक कबीर सुखधामा॥
सनकादिक बहु स्तुति कबीरा । सुरति निरति गहि तन मन थीरा
व्याघ्र श्वान हर अज बिग कागा । चारों झोहर करने लागा ॥
सब हेरे सनकादिक कांती । मिल सनकादिक साधुके पांती॥
एक बारके हुकार सब गजी । आप आप कह अज हरी तजी॥
तब कबीर सनकादिक आगे । सतकबीर आवत यम भागे ॥
कछु पग जाय भये चक्षुहीना । बहुर कुष्ट होय चुये अमीना ॥
पशुके हीन भये सिर कूटा । जारि भो चिता केर जस खूंटा ॥

दोहा-चारों मूढ नर पूछे, कहे आप महशोय ।
जो कबीर ना आवते, तो सब खात बिगोय ॥

ऐसो भौ पुन चारों वेदा । स्तुति करहिं कबीरको भेदा ॥
कहा कबीर वेद समुझाई। धर तन भक्त करहु मनलाई ॥

चारों वेदके तारन हारा । पंचयें सुसम वेद सोहंगम तारा ॥
सतकबीरको अंस सोहंगा । स्तुति वेद कबीर प्रसंगा ॥
आज्ञा मान भक्त चित दीन्हा। चार वर्ण भये भक्त अधीना ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य औ शूद्रा । कोइ करे भक्त कोई तपमुद्रा ॥
भक्त विना धन वित सब छारा। सतकबीर विनती यम धारा ॥
सत्यकबीर सत्य सो राजी । काम क्रोध मिथ्या यम बाजी ॥
सोहंसा सारपद चाही । अजर अमर जिव अम्मर व्याही॥
भजहिं कबीर सो जाहिं अमरपुर । सब सुख विलसहिं कर्म कालदुर
भजे सो सत्यकबीर पतिव्रत छवा। तिमिर मिटै जब उदे ज्ञानवा ॥
तिमिरत्रिगुणमनमतसबचारा ।सोतहवांअंजोरकबीरमत सारा ॥
विष्णु अबरण तुलसी भूषण । मृतुका तिलक काहु नहिंदूषण॥
अंकुर कंद मूल गुर घीऊ । पान फूलपट सेत सोइ लेऊं ॥

दोहा–मीन मांस जो भखे, तासु अन्न जल नाहिं ।
साकटको घर भात ताजि, छूठ साधको खाइ ॥

एक दिन महाकाल रिसियाना । तीन. लोकमो परा भगाना ॥
सहस्त्रमुखी तक्षक होइ उडा । जाय इंद्रासन इस इंद्र मुडा ॥
भागे देवता अखिल पताला । वहां सहस्त्रमुखी जहँ ज्वाला ॥
दौरे काल कैलासहि आवा । शिव कंहँ डंक कीन्ह बहु भावा॥
बहुर काल धाये वैकुंठा । जै औ विजय सांस धर उठा ॥
खैंच उरधके डसेउ बनाई । विष्णूके ढिग दीन्ह गिराई ॥
मृतुक साथ तक्षक गिर तहां । विष्णु व्यास सुखदेव सब जहां॥

कै महापे अहि धाय विष्णु पर । सतकबीर तब कहा मुरलीधर ॥
सहस्रमुख सन्मुख कबीरा । पुन कबीर धर अमित शरीरा ॥
रूप कबीर देखत यम हारा । आपन विष औ आपहिं छारा ॥
लीन्ह उबार विष्णुहिं सतनामा । जै कबीर कह विष्णु प्रणामा ॥
जै २ सत्यकबीर अरिघालक । काल मर्दन रक्षक सतपालक ॥
सत्यकबीर सबे गुण आगर । पतित तार देहीं मुक्त उजागर ॥
इंद्र रुद्र सब देव जिआये । सब देवन मिल स्तुति लाये ॥
सहस्रमुखी तब विष्णुहिं कीन्हा । महाविष्णुकी पदवी दीन्हा ॥
वेद विदित जाने संसारा । सहस्रसिरषा पुर्ष बिचारा ॥
सहस्रसिरषापातिआनंदसिषासो । सो सतपुरुष कबीर दिखासो ॥
एक अनंतकी कौन बतावे । कोट अनंत पार नहिं पावे ॥
जाके खोजत सब पचहारे । सो सतनाम कबीर पुकारे ॥
जासु अंस एक रोम निरंजन । सो सतनाम कबीर दुखभंजन ॥
जिन प्रभु इच्छाते सब कीन्हा । सो सद्गुरु कबीर हर चीन्हा ॥
महाविष्णु औ विष्णु व्यासा । सत्यकबीर सुमरो हरि स्वासा ॥

दोहा—सत्यकबीरसत्यनामप्रभु, दुखनासिकासुखधाम ।
सर्व मई सो रम रहे, संतनमें विश्राम ॥

जहां सांच तहँ प्रगट आही । दयाहीनके निकट न जाही ॥
गुरु भक्त सबते अधिकारी । साध भक्त गुरु भक्त सुखारी ॥
कोटिन देवी देव अराधे । विन गुरु भक्त काल घर बांधे ॥
कोट अनंत कर्म संसारा । गुरुके भक्त विनसवे असारा ॥

इहां वहां गुरु भक्त सुहेला । गुरु आज्ञा कर सोई चेला ॥
गुरु कहँ आद ब्रह्म कर लेखे । गुरु सरूप संतन कहँ पेखे ॥
गुरु सोई जो तिहुँलोकते न्यारा । सद्गुरु अमरलोक विस्तारा ॥
विष्णु अंस सद्गुरुके आहीं । सद्गुरु सर्व मई बरताहीं ॥
सद्गुरु सत्यकबीर अविनाशी । रहे निरंतर सब घटवासी ॥
जिमि चंदा नभ कुंभक दीसा । पुनि जिमिरविप्रकाशपद ईशा ॥
एके साहेब सद्गुरु आदी । कीतनउपजी विनासिषटस्वादी ॥
तीन लोककेहँ विष्णु श्रेष्ठा । विष्णुते सत्यकबीर गरिष्ठा ॥
सत्यकबीर सबके सुखदाई । सुरति सुमतिते वे भल पाई ॥

दोहा—सत्यकबीर सुखदाया, जो सुमरे एक चित्त ।
विष्णु व्यास कहैं सब, ते सुख कबीर प्रतीत ॥

जै जै जै सतनाम कबीरा । सत्य सुकृत सो अजर शरीरा ॥
पुष्पविमान सतलोकते आवा । सकलआयचरणनशिर नावा॥
निज सिंहासन ठाकुर दीन्हा । चरणपखारचरणामृतलीन्हा ॥
विष्णुव्यास सुखदेव सतव्यासा । सतकबीर पग परस हुलासा ॥
कर जोरे जै हरखित कहहीं । सतकबीर कहत सुख लहहीं ॥
जो सुमरे सतनाम सुखधामा । सत्त २ सो सद्गुरु नामा ॥
सत्यलोक अम्मर सुचकाया । तहां सो सत्य पुरुष रहाया ॥
बेहंग सोहंग वोहंगके मूला । ओंकार मकारके मूला ॥
कालके कारण करण गोसांई । रक्षपालक सब जिव सुखदाई॥
तीन लोकते न्यारा रहहीं । सर्व मई पुन सबसों कहहीं ॥

धरणी अकाश पवन औ पानी। चंद्र सूर्य जेते नप खानी ॥
सबके आद सोहे सतनामा। सत्त दया मिल जीवको कामा॥
सर्वमूल अविनाशी रामा। सोई सतकबीर सुखधामा ॥
जो सुमरे सतनाम कबीरा। ताके काल न आवे नियरा ॥
कीन्हो स्तुति विष्णु बहूता। कहा कबीर बैठहु पूता ॥
तुम स्तुति जब बहुते कीन्हा। तब हम आय दरशतोहि दीन्हा॥
कौन काज तुम सुमरेहु मोही। टोरो सब संकट जत तोही ॥
१रहिं कालमुखझरकहिं जबहीं। सतकबीर कह चितवे तबहीं ॥

कृष्णवचन।

कहे कृष्ण पलकन पग झारे। मैं नाती तुम आजा प्यारे॥
धन्य भाग्य मम शुभ दिन मोरा। दीन्हो दरश कबीर बंदीछोरा॥
कबीरते अधिक और नहिं कोई। आद अंत सब जिनते होई ॥
हम सब हैं कबीरके अंसा। सतकबीरके सब निज वंसा ॥
सिद्ध साध मत वेद पुराना। सतकबीर गुण सबहिं बखाना॥
कबीर निरवान मुक्तके दाता। जाको अंत न लखे विधाता ॥

दोहा—सब करताके करता, सब दाताके तार।
सकल मूल सतसाहेब, सो कबीर औतार ॥

सत्त २ सत्त हर गाई। सतकबीर जिव रक्षक भाई ॥
मै कबीरको महिमा जानो। और सब मनमत बौरानो ॥
गरुड चरण हरि शीस नवाई। महिमा कृष्ण कबीर परवाई ॥
अस शोभा नहिं देखो काहू। करता कृष्ण राम तुव आहू ॥

दोहा-सोई पुरुष कबीर है, जेहि हम कीन्हो खोज ।
सबे कहें मोहि वाउर, कहें भसुंड बनराज ॥
त्रेता रामचंद्र मोहिं जांचा । नागफांस परिचित भो कांचा ॥
तहां पहुँच अहिनास उबारा । तब मैं करतातेहिनावबिचारा॥
करता निरबंद योनि नहिं आवे । नागफांस तेहि बांधको पावे ॥
तब हम चीन्ह कौसिल जाये । भक्तवत्सल क्षत्रीरूप धर आये॥
दोहा-क्षत्रीरूप राजसी, सातकी सद्गुरू रूप ।
तमगुण तामस सकल सब,त्रिगुण बिक्त तेहि भूप॥
अब हम सत्यपुरुषको चीन्हा । कबीरकेस्तुतिगरुडबहुकीन्हा॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण गरुड तुम जानहु । कबीरकेअंस सुपच पहिचानहु॥
जिनके भोजन घंट जो बाजा । अधर अकाशजो धजा विराजा॥
सो कबीरके सेवक रहई । जेहि समनाकोउतिहुँपुरअहई ॥
उग्रसेन भक्त बंद मै छोरा । ताते मोहि संत कहँ बंदिछोरा॥
कबीर छोरहिं चौरासी यम फंदा। निर्गुण नाम कबीर निर्द्वंद्वा ॥
जापर दाया करहिं सतनामा । सो देखे सतलोक सुखधामा ॥
कहें कृष्ण सुन आसन मोरा । महा सुज्ञान गरुड बल जोरा ॥
हमहीं रहे त्रेता रघुवंसा । तबहीं कबीर मेटे मम संसा ॥
सतकबीरके अंस एक राऊ । सो पूंजी मम पितहिं दियाऊ ॥
राय रमिता राम सोहंगी । ताके नार देह अर्धंगी ॥
रामचंद्र अर्धंगी सीता । रावण चोर संधि सिर दीता ॥

तेहि प्रति रामचंद्र दुख पावा । बन २ रटत वचन पितु पावा ॥
वचन सरूप धरे सब देवा । डासन त्रिण भोजन फल मेवा ॥
सिंधु सेत बांधे हरि ताका । पर्वत सबे सिंधु महँ राखा ॥
बांधन लगे सिंधु गंभीरा । तब हरि सुमरे सत्यकबीरा ॥
आय कबीर तुरत दरसावा । कबीर रूप हरि हृदय समावा ॥
रामचंद्रके हृदय कबीरा । आद ब्रह्म कबीर गंभीरा ॥
कबीरके अंस हैं लक्ष्मण बाला । लिखा मेर पर अंक रिसाला ॥
लक्ष्मण अंक सेतु लेहु बांधा । रामचंद्रका छूटा धंधा ॥
उतरा सैन लंकागढ टूटा । सकल देवका बंदी छूटा ॥
दीन्हो राज्य बिभीषण थापी । कोइ न बांचे राक्षस पापी ॥
सिय बंदिछोर राम लियो संगा । सत्यकबीर प्रताप सुरंगा ॥
सुन खगपति सब देव मुनीसा । सृष्टि कबीर सबन कहँ दीसा ॥

दोहा–कहैं कृष्ण सुनु देव मुनि, रक्षक नाम कबीर ।
हमहिं औसर सुमरहीं जब, गाढे परे शरीर ॥

जीवके सुख देवे कारण । पुरुष कबीर प्रगट कलि सारन ॥
रामनाम गुरु महिमा भाषा । सत्संगतके इच्छा राखा ॥
सत्संगत गुरु मारग पाई । गुरु सद्गुरु मिल प्यास नसाई ॥
खरा खोटा परख दिखाये । सद्गुरु सो जिन सत्य चिन्हाये ॥
निर्गुण एक कबीर बखाना । सर्गुण सकल देव मिल जाना ॥
निर्गुण बोलता कबीरको अंसा । रमता राम सकल घट हंसा ॥
कहैं कृष्ण कबीर परजाई । सद्गुरु सत्य कबीर गोसांई ॥

दोहा–सद्गुरु सत्य कबीर हैं, निहचल अजर शरीर ।
भौसागर तारन तरन, समर्थ सत्य कबीर ॥

व्यास सुखदेव समेता । अज हरि हर प्रभु कृपानिकेता ॥
नारद ऋषि इंद्रादि सनकादी । सके न कोई कबीरसंवादी ॥
कहें कृष्ण सुन व्यास सुखदेऊ । कबीरहिं मानुष कहे जनि कोऊ ॥
कबीर सर्वादिक करताके करता । भरी ढरे फिर खाली भरता ॥
भक्तरूप धर प्रगट दिखाये । गुरुकी भक्ति ढिग दास कहाये ॥
युग २ रक्षा हमरी कीन्हा । भक्त रूप होय दर्शन दीन्हा ॥
रामरूप संग लक्ष्मण सीता । सत्यकबीर वन दास पुनीता ॥

दोहा–कहें कृष्ण सब कोइ सुनो, इत उत दास कबीर ।
सतकबीर सत युग २ सुमरे, दोउ दीन गुरु पीर ॥

व्यासवचन ।

कहें व्यास सकल मिल वाणी । धन्य कबीर जेहि कृष्ण बखानी ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण सुन व्यास सुख देऊ । हमहु न लखा कबीरका भेऊ ॥
जब कबहूं हम त्रसित निरंजन । तहां कबीर काल शिर भंजन ॥
कबीरको चरणोदक जब लीन्हा । जबते अगम गम्य हम चीन्हा ॥
हमरे कहे के पिता निराकारा । हम कहै ये कबीर प्रतहारा ॥
कबीरके पांव निरंजन लागे । और जीव कहा कस आगे ॥
निरंजन एक दिन ग्रासन धाये । कबीर नाम जप जीव बचाये ॥

दोहा-एक हंसके पाछे, + आद नाम सर देख।
अद्भुत शोभा अकह छवि, कबीरको कला अनेक॥

कबीर है अमरलोकके माहीं। यहां दरद देख जीव बंचाही॥
जब हम बैठे सप्त पताला। नाथे कालीनाग निसाला॥
तब नागिन मोहि विष संचारा। तहँ कबीर गये प्राण उबारा॥
संगहि आये बलभद्रके भेसा। बालबच्छ राचि मेटेउ अहेसा॥
जब हरनाकुश कीन्हेसि बरिआई। तहँ कबीर पुन भये सहाई॥
रामरूप त्रेता हम जांचा। परम जोत कहि बोलेहु वाचा॥
परम जोति कहि कियेउं पुकारा। तहां कबीर आय दुख टारा॥

दोहा-कबीर सुखदाता जीवके, अमरलोक विश्राम॥
सो जिव सुख घर पहुँचे, जो सुमरे कबीरको नाम॥

कलि हमरे जो बोध शरीरा। देवल थापेउ दास कबीरा॥
तट देवल सिंधु तर गाडा। तब कबीरको ध्यान हम माडा॥
तुरत कबीर प्रगटे तुलसी चौरा। विप्ररूप मैं दर्शनको दौरा॥
तुलसी चौरा जाय मैं दासा। हंस कबीर अंकम लै परसा॥
सिंधुतीर गये आसंन कीन्हा। सिंधु त्रास भये चरण अधीना॥
बोइल द्वारिका दे मंडप राखा। सत्यकबीरके हम सब साखा॥
चारों युग भो वार अनेका। सब दिन सत्यकबीर मोहि टेका॥

दोहा-कहैं कृष्ण गुरु गुप्त रासि, कबीर सबनके मूल।
हम कबीर कहँ सुमरहीं, भक्त मुक्त समतूल॥

सकल देवता सुन थर हरेऊं। धाय कबीरके चरणन परेऊ॥
चरणोदक लै मुखमहँ लीन्हा। चरण परसि प्रदक्षिण कीन्हा॥

कबीरवचन।

कहें कबीर सुनो मुनि व्यासा। गुरुके भक्त कटे यम फांसा॥
गुरु विन राम न आवे हांथा। गुरु विन डोलहिं जीव अनाथा॥
गुरुकी भक्त साधुकी सेवा। हरषि गोपाल मिले यह भेवा॥
हमहू गुरुको करता जाना। काउ जीत गुरु नाम बखाना॥
गुरु सोई जो अंतहु मीठा। जन्म मरण गुरुलागे सीठा॥
दोहा-योग यज्ञ तप तीरथ, प्रतिमा भूत मसान।
कहें कबीर सद्गुरु विना, जीव जात यम थान॥
उठके गरुड ठाढ बये आगे। हरिसों विनती करने लागे॥
आज्ञा देहु मोहि त्रिभुवननाथा। हमहु जीव निज करहु सनाथा॥
हम कबीर कहँ सद्गुरु करहीं। सेवा तुम्हार ध्यान उर धरहीं॥
कृष्ण विहँस कहबे अस लीन्हा। सुनहु विहंग सबन चित दीन्हा॥
यहिते श्रेष्ठ अमर कछु नाहीं। धन्य सो जो गुरु शरण समाहीं॥
हमहू गुरुके शरण समाने। सद्गुरु कर कबीर कहँ जाने॥
कबीरके आस सबनको भाई। कहहि कृष्ण पुन गरुड बुझाई॥
दोहा-खगपति गये कबीर पहँ, शरण देहु सतनाम॥
यमसे त्रास निवारहु, देहु भक्त सतधाम॥

कबीरवचन।

कहें कबीर सुनो खगराई। बडे भाग गुरु शरण समाई॥
गुरुकी आज्ञा शिष्य जो माने। शिष्य सोईजो गुरु सुरति समाने

चरण टेक विनवें नभगामी । आज्ञा करहु सो मानो स्वामी ॥
कहो तो सीस कल्प भुंइ धरऊं । कहो निजहु तासन परऊं ॥
हमहू गुरुकी महिमा जाना । गुरुते श्रेष्ठ और नहिं आना ॥
हम त्रिभुवन पतिके सुखपाला । हमरे पीठ जो सदा गोपाला ॥
जब हम देख गोपाल तेहि सेवा। परेउं चरण तर लीन्ह तुव भेवा॥

दोहा-कहे तक्षक अरि जोर कर, विनय सीस पग राख।
काटहु यम कर फांस प्रभु, गरुड दीनता भाष ॥

कबीर वचन ।

कहे कबीर सुनो खगराया । मिले ना समर्थ सद्गुरु दाया ॥
आपन जीव सम सब कह लेखे । एके राम सकल घट पेखे ॥
सुर असुरारी चाल निहारे । नीर क्षीर बिलगाइ सुधारे ॥
ज्ञान औ मनकी दशा विचारे । सतपद गहि गुरु सुरत निहारे ॥
जेते आमिष मीन मद मांसू । परधन परनिंदा उपहासू ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सुन गरुड सुजाना । अंकुर सुगंध पवित्र फुलपाना ॥

दोहा-गुरु कहँ करता जाने, साधन गुरु कह लेख ।
कहें कबीर सुन खगपति, राम सकल घट देख ॥

गरुडवचन ।

गरुड कहे तब सीस नवाई । सत्यकबीर तुम समर्थ सांई ॥
तुम्हरे सिखापन हृदय मानो । शरण देहु कहे श्रीभगवानो ॥

कबीरवचन ।

श्रीकृष्ण तुम त्रिभुवन राऊ । गरुडहिं बोधे कहहु सुभाऊ ॥

दोहा-शब्द हमारे शीतल, अमृत मोद सो भाव ।
भक्तपंथ समिता ज्ञान दृढ, अभे मुक्त पद लेव ॥
भले गरुड जाय आनहु साजा । गह २ वैकुंठ बाजन बाजा ॥
कहे गरुड भाषहु प्रभु साउज । सत्यपुरुष कह चढे सब सांउज॥
कहें कबीर नारिअर भरपूरा । सेत गरी मिष्टान्न खजूरा ॥
दोहा-पान फूल चंदन सुचि मेवा, गऊ घृत जोत प्रकाश।
सो अमर प्रत नाम गुरु, चरण सतिहर दास ॥
सेत सिंहासन क्षत्र चंदेवा । ध्वजा पताका सेत सजेवा ॥
गुर मिष्टान छान जल झारी । थार जोति धर पंच मुख बारी॥
आज्ञा मांग गरुड उठ धाये । तैंतिस कोट देव हकराये ॥
सवा लाख नरिअर ले आना । सवा सो मन मिष्टान प्रवाना ॥
कृष्णहिं नेवत दीन्ह कर जोरी । तुव प्रताप गुरु मम बंदछोरी॥
शिव सनकादि ब्रह्मादि विष्णवादी । देवऋषी मुन सुखसे सादी ॥
सब मिल आय कीन्ह धुन ध्याना। भजन अखंड शब्द प्रवाना ॥
दोहा-सकल देव मुनि चक्रित, गरुड शरण सतनाम ।
सत्यकबीर जो सुमरे, तेहि गाढे आवे काम ॥
दीन्ह पान यम त्रिण तोराई । चरणामृत तिलक दृढाई ॥
पाय प्रवाना गरुड अनंदा । जस चकोर पाये निस चंदा ॥
महाप्रसाद सकल मिल लीन्हा । विनवहिं गरुड असीस तब दीन्हा

कृष्णवचन ।

कहैं कृष्ण खगपति बड भागी । तुम सद्गुरुके दास सुभागी ॥
धन्य भाग तेहि प्राणी केरा । शरण कबीर गये दुख फेरा ॥

सरगुण भक्त जो आवा गौना । तन धर दुख सुख पावे पवना ॥
निर्गुण भक्त शरण सतनामा । नाम कबीर भजन सुखधामा ॥
दोहा-कहैं कबीर सुन खगपति, नाम कबीर कंडहार।
निरगुण भक्त सब ऊपर, आवागवन निवार ॥
सकल देव मिल स्तुति लावा । बडे भाग हम दर्शन पावा ॥
व्यासदेव सुखदेव मुनिनारद । विनती करैं सुरपति गण शारद॥
श्रीकृष्णसे पूछे व्यासा । कबीरकी महिमा करहु प्रकाशा॥
तुमते श्रेष्ठ कबीर कस भयऊ । यह चरित्र हम जान न पायऊ ॥

श्रीकृष्णवचन ।

कहैं कृष्ण सुन व्यास सुख जाना।कबीर आद करता निरवाना ॥
निरंजन हमरे पिता ठग काला । जार मार जिव करहि बेहाला॥
सतकबीर काल शिर भंजन। कबीर नाम ते त्रासित निरंजन ॥
दोहा-तीन लोकते न्यारा, अमरलोक विस्तार ।
जो कबीरको सुमरे, सोइ उतरे भौपार ॥
कहैं कृष्ण मैं कहौं परमारथ । निर्गुण भक्त जन्म जुग स्वारथ
जब कलकाल निरंजन कोपिहै । मिटिहै दया धर्म विष रोपिहै ॥
गंगा सती सिद्ध औ साधक । सबके सत घटि है कलबाधक॥
निराकार सब जीव गरासे । भक्तहीन तेहि काल तरासे ॥
निर्गुण भक्तिहीन जो प्राणी । पापी पुनी जार सब सानी ॥
सबकर सत्त काल बिचलाई । कबीरसे संत अडे रहाई ॥
गाढे ताहि कबीर ले राखी । आगे तेहि निजु कबीर हरि भाषी॥

दोहा-अजर मुक्त सो पावे जो, सुमरे सत्यकबीर ।
नरकी देंही त्यागके, हिंरमर धरे शरीर ॥
५ पंडव नारद सुख व्यासा । एक दिन सुन कस भयउ तमासा
जीव एक सतलोक चलि जाई । दूत ताहि नहिं पायउ भाई ॥
गये दूत धर्मरायके पासा । धर्मराय आप मम वासा ॥
हम त्रिय बंधु यम सहित सिधाये।हेरत जीव कितहु नाहिं पाये ॥
सब थाके हम देश देखा जाई । सुन्यके पार मानसर जाई ॥
महासुगंध देश उजियारा । कामिन शोभा अकह अपारा॥
कोटिन चंद सूर्य छवि एका । हंस असंख हंसनि तेहि रेखा ॥
दोहा-जहँ सतपुरुष कबीर निज, सो नहिं देखेउं ठौर।
पुरुषलोकको आभा, मानसरोवर मोर ॥
अपनी कंचन उदित अटारी । हंसनीको लगी गंध हमारी ॥
द्वारपाल एक पठइन वेगी । देश निकार धायो बहु वेगी
मोहिं धर बांह नीकारीस बाहर । मैं सुमरेउं कबीर तेहि ठाहर ॥
तहँ कबीर मोहि लीन्ह बचाई । बार अनेक दया उर लाई ॥
जहांसे गयऊं निरंजन खोदा । कबीरके आद न जाने वेदा ॥
कबीर सबनके आद बखाना । कबीरके आद कोई नहिं जाना ॥
कबीर नाम कायाको वीरा । कदली तन पौनगरसीरा ॥
दोहा-काया कदल दल, गुप्त प्रगट कबीर ।
सबके भीतर बाहर, स्वास निहस्वास शरीर ॥
सत्तलोककी ऐसी शोभा । कहि न सिराय मोर मनलोभा॥
एक हंस तरवन जोती । छिन एक महँ देखऊं ससीकोती॥

एक हंसनी रवि शशिकी खानी । अनंत कोट रवि शशी प्रवानी ॥
निराकार एक तिहुँ पुर जारे । सत्तकबीर सो जरत उबारे ॥
जबते हम देखा अस थाना । तबते मनमें निशिदिन ध्याना ॥
तीन लोक तेहि लेखामाहीं । सत्तलोकको नहिं परछाहीं ॥
तीन लोकमहँ नरककी काया । सब सुगंध सतलोक लखाया ॥
दोहा—काल कठिन परपंची, तीन लोक दुख देय ।
ताके निकट न आवे जो, कबीर प्रवाना लेय ॥
जबहिं कृष्ण अस परचे दीन्हा । तबहिं व्यास चरणोदक लीन्हा ॥
सुखदेव औ सब देव अधीना । सबहि कबीर कहँ सद्गुरु चीन्हा ॥
सत्यनामकी परी दोहाई । सबहिं कबीर कहँ सीस नवाई ॥
विनवें सबे कबीरके आगे । सत्यकबीर कहवे अस लागे ॥

कबीरवचन ।

हम जग भक्त रूप दासा तन । जीवके दरद आये देखावन ॥
हम हैं अजर अमर घरवासी । जहँ सब जीवको घर सुखरासी ॥
जब २ जीव निरंजन ग्रासी । तब २ आय काटेउँ यम फांसी ॥
दोहा—कहें कबीर प्रमारथ, सत्य दया घर धीर ।
दरद पराई जाहि घट, ते घट राम कबीर ॥

गरुडवचन ।

गरुड गमन मन स्तुति लावा । भाग बडे कबीर गुरु पावा ॥
कहें गरुड सुन कृष्ण मुरारी । जीवनकी गति कहो विचारी ॥
कोटिनमें एक कबीरहिं चीन्हा । तिन निज जन्म सुफल कर लीन्हा ॥
औरहिंकी गत कैसी स्वामी । सो कहिये मोहिं अंतर्यामी ॥

श्रीकृष्णवचन ।

सुन खगेश कहे त्रिभुवनराई । सबकी गति मैं कहौं बुझाई ॥
सतकबीरकी भक्ति जो करि हैं। सो सत सत्यलोक पगु धरि हैं ॥
अमरचीर हिरंमर काया । सबी सुवास अमी फल पाया ॥

दोहा–सत्यकबीरके सेवक, बहुर योनि नहिं आव ।
अमरलोक सुख विलसे, निरभे कैल कराव ॥

निरगुण अजर कबीरा जिवतारा । सरगुण भक्त जो दस औतारा ॥
नकली निरगुण निरंजनराई । जिनके हम योहदार कहाई ॥
सकल मूल निर्गुणकबीरा । सरगुण राम कृष्ण मम लीला ॥
हमरी भक्ति जो करे सचेता । सब तज गुरु साधुनसो हेता ॥
ब्रह्म बोलता पूजे सोई । माटी पाथर साधु न जोई ॥
कपिलागऊ भाव धर रहई । भला बुरा ये सबके सहई ॥
जीव मृतक होय मोहिं भावे । सब वैकुंठ साधु तन पावे ॥

दोहा–जबलग मैं वैकुंठ रहौं, तबलग मेरे पास ।
प्रभु आज्ञा मैं औतरौं, मम आश्रित गर्भवास ॥

रहित मुक्त नहिं हमरे हांथा । रहित मुक्त कबीर गुरु दाता ॥
करे मम भक्त देंह मैं तारौं । सत्यकबीर देंह निस्तारौं ॥
सद्गुरु समर्थ रूप हमारा । मोह समान को आन विचारा ॥
एक मैन औ कबीरसे भाई । कछुक निरंजन अस्थान जब जाई
और सब हैं हमरे आसा । शिव अज सनकादिक मम दासा ॥
देंह मुक्तको हम हैं दाता । जीवके मुक्त कबीरके हांथा ॥

देँह मुक्त करे सो पावे । पाप पुण्यमहँ आवे जावे ॥
गाढके हीन सो दानहि पावे । तेहि औसर साकट पछतावे ॥

दोहा—देँह मुक्त यह जानहु, देँह धरे फल पाव ।
सत्यकबीर जो सुमरे तो, बहुर योनि नहिं आव ।
रज तम लक्षण भूत पिशाचा । सतगुण साधु संत प्रकाशा ॥
रज तम चाल परे चौरासी । सतगुण देँह मुक्त विश्वासी ॥
कर्म भ्रमकी छूटे आसा । आवागौन निरंजन फांसा ॥
निरंजन सेवक कबीरको अंसा। कबीर जेमुख तेहि विधंसा ॥

दोहा—खरा खोटा सब पाखे, पारखी निरंजन राय ।
पुरुष प्रवाना देखि सिर नावे, विना छाय धरखाय॥
कहेँ कृष्ण पंनग अरि सुनहू । कहूं ज्ञान अपने मन गुनहू ॥
सतगुरु भक्त पपील चलानी । निरगुण भक्त विहँग बखानी ॥
पंछी विहंग उड जाय अकाशा। नहिं पपील चढ सके बेआसा ॥
जहां इच्छा तहँ जाय विहंगा । चढि सरगुण मता भुअंगा ॥
कोट माहि सरगुण गति पावे । निरगुण भक्त सबे तर जावे ॥

दोहा—निरगुण महिमा अगम है, सरगुण सके न कोय ।
सरगुण उपजन विनसन, निरगुण बिन गति नहिं होय ॥
सतयुत त्रेता द्वापर काली । चहुँयुग निरगुण अजर अमाली
निरगुण सरगुण सबके मूला। सोई सत्यकबीर हरि बोला ॥
दोहा—हमरी तुम्हरी को कहे, कबीर सबनके मूल ।
कहेँ कृष्ण सुने खगपती, को कबीर सम तूल ॥

बोले गरुड बिहसिके वाणी । मम जीवन शुभ सद्गुरु जानी ॥
चरणोदक ले निर्मल भयऊ । सद्गुरु चरण हियमहँ धरऊं ॥
व्यासदेव सुखदेव सिर नाये । बडे भाग्य हम दर्शन पाये ॥
व्यासदेव मुनि नारद पूछा । हमहुको है भक्तिकी इच्छा ॥
पान परवाना हमको दीजे । मुक्तदान हमहूको कीजे ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो सब कोई । जीव दया विन मुक्त न होई ॥
जीवदया धर सद्गुरु सेवे । सबसे प्रीत नाम चित देवे ॥
सबमें सोर मिता अब रामा । स्थिर सत्यनाम निज नामा ॥
विना भक्ति भगवंत न भेंटे । सद्गुरु विना ना संशय मेटे ॥
सद्गुरु कहें कबीर हम आहीं । सद्गुरु अंश विष्णुके माहीं ॥
सद्गुरु अंश जीव सत सबमें । राम कृष्ण मम अस कहो अबमें॥
हमरे अंश निरंजन राया । तीन लोक अधिकार तिन पाया॥
तिन पुन आपन अंस उतपाना । छल छुद्म मान अभिमाना ॥
छल औ क्षुद्र विष्णु बहुरंगा । ब्रह्मा कुमत हंग रुद्रंगा ॥
रजगुण ब्रह्मा विष्णु सतोगुण । काल भले जन रुद्र तमोगुण ॥
अष्टंगी बटपारकी बुढिया । बटपार निरंजन सब जिव लुटिया ॥
एक समै विष्णु सत भाषा । विष्णु नाम तब सद्गुरु भाषा ॥
रजगुण तमगुण लोहु धातू । पुरुष अंस जीव सद्गुरु सातू ॥

दोहा–निरंजन जीव झरकावे, सवा लक्ष नित खाय ।
कहैं कबीर जो मोही भजे, तेहि यम निकट न जाय॥

व्याससुखदेववचन ।

व्यासदेव सुखदेव मिल बोले । देहु शरण यम डर मह डोले ॥
बिलखत वदन व्यास मुनि भाषी । कबीर शरण लेहु मोही राखी ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सोइ यमसे बांचा । निज२शब्द कहा मम सांचा ॥
अब तुम होहु निहसंक यमसेती । देंउ बीरा चल यमसो जीती ॥
दीन्ह भवाना त्रिण तोडाई । व्यासदेव सुखदेव कमाई ॥
चरणोदक महाप्रसाद तब दीन्हा । बहुरसिखापनजीवदयाकोकीन्हा
हमकहँ गुप्त हृदय महँ राखहु । साधु गुरु हरि महिमा भाषहु ॥
साधु गुरु हरिरूप हमारा । हमरे नाम भज यमसो न्यारा ॥
वेदशास्त्र सुभ्रत जहँ ताईं । सबपर ज्ञान सद्गुरुको सांई ॥
कृष्ण अर्जुन गीता तुम भाषहु । ज्ञान पाठ गीता अब राखहु ॥
हम कह इच्छा देहु भवाना । सतकबीर कहें सुना भगवाना ॥
हमरे मेटहु आवा गवना । लेचल निज घरबहुरनअवना ॥
सुनेउ राम वसिष्ठसे रामा । कौन नाम दीन्हो गुरु रामा ॥
जो तोहि पान दे लोक पठाई । तो सतरंजबाजी उठ जाई ॥
विष्णुसयान तिहु लोक न कोई । सतनाम सम वरत न कोई ॥
कितम उपज विनस दुख पायो । आद अजर घर अमर रहायो ॥
जो तुम जैहो अमरलोका । निराकार कहँ होइहै शोका ॥
हम विष्णु जो नाती आजा । बाप तुरक कह कौने काजा ॥
सपूत पुत्र तेहि भोजन देई । विन सुचील सुत पान न लेई ॥

निरंजनके वंश मझारा । एक विष्णु तेहि पुरमें सारा ॥
सांच विना बांचे नहिं कोई । भक्त बेमुख तेहि काल बिगोई ॥
तुम कहँ विष्णु चिंता कछुनाहीं । तुम्हरे पास हम सदा रहाहीं ॥
नरक परे नहिं देहो तोहीं । जो तुम ध्यान राखिहो मोहीं ॥
कि होय सेवक या होय स्वामी । संत गाढ पहुंचे सुरत गामी ॥
जो जेहि नाम न ध्यावे प्राणी । तासु लोक पहुंचे निज गामी ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण कबीर बल मोरा । करताके करता बंदी छोरा ॥
दोहा–मैं कबीर कहँ चीन्हा, कबीर रूप करतार ।
करता निरंजन कितम, कहें कृष्ण निरवार ॥

कबीरवचन ।

यह सुन कबीर कृष्णकंठलावा । सीस हांथ दे निकट बैठावा ॥
कहें कबीर तुम हमरे अंशा । हम चीन्हे बिन काल विधंसा ॥
निराकार कहँ जब उपजाया । स्वास तेज कंथी तन आया ॥
आगम तास होय यह काला । जीवन कहँ यम करे बेहाला ॥
तब पुन पुरुष दीन्ह तेहि श्रापा । योगजीत तेरो सिर खापा ॥
योगजीत तब उतपन दीन्हा । ताके त्रास निरंजन छीना ॥
चौंसठ युग सेवा लव लावा । सेवा वस्य राज तिन पावा ॥
अमरलोक ते गये निकासा । जब अष्टंगी कीन्हे ग्रासा ॥
योगजीत डर काल डराई । नाम कबीर सुनत छिप जाई ॥
वस्तु जीव सब साज हमारा । निरंजन कहँ सौंपाल भारा ॥

पुरुष आज्ञा तज मन मत ठाना। निरंजन तोपे काल दिवाना ॥
जीवन कहँ तिन करे अहारा। जीव विवश हो परे बिचारा॥
तब मोहिं दाद जीवनकी आई। दासा तन धर भक्ति दृढाई ॥
जो जिव भक्ति हमारी करि हैं। ताको काल खूंट नहिं धरि हैं॥
चारों युग जिवलोक पठावा। युग भवान नाम जिब गावा ॥

दोहा--सतयुग सत सुकृत अंचित, त्रेता नाम मुनींद्र।
द्वापर करुणामय भये, कलयुग नाम कबीर ॥

कहें कृष्ण तोहि तबहीं चीन्हा। जब पताल राख मोहि लीन्हा ॥
औ सबके गाढे उपकरहू। प्रेमवश्य तुम ओट न धरहू ॥
अहो साहेब मैं तुम्हरे दासा। अजर मुक्त है तुम्हरे पासा ॥
पिताके उर छल क्षुद्र कछु करहूं। पिता निरंजन डर हम डरहू ॥
बहुर भरोस तुम्हारो सोई। पुण्य धर्मके बात चलाई ॥
निरंजन जाना हमरी बाता। कबीर कृष्ण दोइ एके मतराता॥
जीव दया गुरु भक्त बखानहु। सतसंगति महिमा कथि आनहु॥
रामनाम गुरु साधुसे नेहा। कहें कबीर राम गुरु देंहा ॥
ठाकुर कहँ मानुष जनि जानहु। राम कृष्ण करता पहिचानहु ॥
रामकृष्णके हम लघु जेठा। जैसे फेर जन्मपितु बेटा ॥

दोहा--राम कबीरके अंश हैं, कबीर रामके दास।
स्वामी सेवक होयके, करहिं भक्त प्रकाश ॥

तुम हो व्यास विष्णु औतारा। चौविस महँ तुम भक्त पियारा ॥
हम हरि वंश विष्णु मम अंसा। भक्त रूप हम विष्णु प्रशंसा ॥

विष्णु दया जब कीन्ह पुकारा । तब जानो हमरे संचारा ॥
जबहिं निरंजन विष्णु समाई । तब कर विष्णु कपट चतुराई॥
सबपर श्रेष्ठ जानो सतनामा । कहैं कबीर गुरुपद विश्रामा ॥
गुरुसोई जो यमसो उबारे । जन्म मरण दुख दारुण तारे ॥
कहैं कबीरसो सद्गुरु जानो । राम कृष्णको स्वम बखानो ॥

कृष्ण वचन ।

कहैं कृष्ण हम निहचे जाना । हम सब पर कबीर प्रवाना ॥
निरंजन आद सो अजर कबीरा । स्वासरूप रमे सकल शरीरा ॥
हममहँ तुममहँ सोहंग जीऊ । स्वास रूप तन जीवके पीऊ ॥
जीव सब अंश कबीरके भाई । देह निरंजन राय बनाई ॥
जो जिव लैहो कबीरके पाना । ताके डर निराकार डेराना ॥
कोटिन केर काल मोहि खावा । निराकार अज शिवहिं नचावा
और जीव केहि लेखा माहीं । रहटके घरिया आवहिं जाहीं॥

दोहा-रहटके घरिया सरगुण, रीते भर उतराय ।
भरी उरध भर खाली, निडर कूपके जाय ॥

जब नहिं धरती अकाश पताला। जब नहिं देह जगत क्ति काला
नाहिं निरंजन आद भवानी । वहिं तब त्रिगुण पवन औ पानी
तब नहिं दश अवतार मम भयऊ। गंगा जती सती नहिं रहऊ ॥
तबकी कहैं कबीर सहिदानी । जबकी काहु मर्म न जानी ॥
कबीर बडाई हम कह दीन्हा । आप भे दास करता मोहि कीन्हा
कहैं कृष्ण सुन आद कहानी । जाके आद बेद नहिं जानी ॥
निर्गुण आद पुरुष अविनाशी । कबीर कहाये प्रगट भये कासी॥

दोहा-निर्गुण मूल सकलके, निर्गुण मता अगाध ।
कहें कृष्ण सुन व्यास मुनी, कबीर भजे सो साध ॥

कबीर वचन ।

कहें कबीर सुन कृष्ण सुजाना । तुम सब देवन महँ प्रधाना ॥
श्रीमुखसे तुम मोहिं बखाना । तुम त्रियलोक धनी हम जाना ॥
सेवक कहँ स्वामी पत देई । स्वामी सेवे सेवक सोई ॥

दोहा-कबीर नाम हरि गावहीं, गुरुके ध्यान अधार ।
गुरु गोविंदके लेखहीं, साधराम रूप अधार ॥

कृष्णवचन ।

कृष्ण कपिल कबीर पगु गहा । सुन स्वामी तुम कैसे कहा ॥
तुम्हरे समान न देखों काहू । हम सब कर तुम हांथ निबाहू
और सबे सरिता चौमासा । जेठ झुराय सिंधको आसा ॥
सिंधुको जल संसार बिडाई । मेघमाला छप्पनकोट बरसाई ॥
सरिता सिंधुको सेवक आही । स्वामी सरवर कबहुँ नहिं चाही
निरगुण बास फूल भये सरगुण । सरगुण देह बोलता निरगुण ॥
कहें कृष्ण मोहि देहू पाना । तब डर काल मोहि नहिं जाना।
जो २ जीव शिष्य सब तोरा । तुव बल जाहिं लोक बल जोरा।
हमहू कहँ इच्छा यह आई । तुव प्रताप लोक हम जाई ॥

कबीर वचन ।

कहें कबीर तुम हमरे आहू । राज करहु तुव रक्षक साहू ॥
जो तुम होहु प्रगट मम चेला । निराकारको मिटि है सेला ॥
गुप्त हृदय महँ हमकहँ राखहु । प्रगट निरंजन महिमा भाषहु ॥

जासो प्रीत हृदय बस जीवा । अंतकाल आपत सोइ पीवा ॥
सबसो प्रीत खसम सो सेजू । सत पग हिय विषै कित तेजू ॥
मुखसों प्रीत सबहिं प्रभु जानी । गुप्त प्रगट पिया व्रत चित ठानी
भली छांड नहिं करिय सदाई । भली भला सुरत संतन गाई ॥
कोई मदवारे सो मदफल पावे । बिजधर भे मद माद समावे ॥
दोहा-कहें कबीर श्रीकृष्णसों, जानि छांडहु सत व्योहार ।
सत्तहिं ते गत पाईये, झूठहिं नरकमें डार ॥
कोटिन काल निरंजन आवे । जो मोहि जपे ताहि नहिं पावे ॥
युग २ नाम हमारो गावे । यम त्रिण तोड प्रवाना पावे ॥
हर स्वांस सतनाम समावे । गगन मगन सतनाम सुहावे ॥
अधर सधर दृग दश प्रकाशा । भीतर बाहर राम निवासा ॥
यंत्र मंत्र औषध तप योगा । तीर्थ व्रत देव चंदन भोगा ॥
सबे आस तज भज गुरु साधू । कहें कबीर सब मेर उपाधू ॥
डरे न यमसो बल कै मोरा । सुमरे नाम कबीर बंदीछोरा ॥
पूजे बोलता सब जिव रामा ।मन वच कर्म सतनाम विश्रामा ॥
राधे ध्यान तो जियत तेहि भेंटे ।विश्वासी जियहिं अंत दुख मेटे॥
सुन आतुर हरि साज मँगावा । नरिअर पान मिष्टान्न सुहावा ॥
सबे साज आनेउ बहुताई । घृत पकवान सुवास बसाई ॥
सकल देवतन भोजन कीन्हा । तेहि पाछे हरि बीरा लीन्हा ॥
यम त्रिण तोर काल मुख थूका। दीन्हो पान मेट सब चूका ॥
सतगुण देवता कोट इकादस । सदन पान लीन्हा हरि पारस॥
रजगुण तमगुण पेल पराने । विष्णु व्यासको निंदा ठाने ॥

कृष्णवचन।

महा आनंद कृष्ण मन भयऊ। मन हम राज निकंटक पायऊ॥
जेहि रक्षक भये सत्यकबीरा। बार न बंके तासु शरीरा॥
कृष्णके दुरवासा ऋषि गुरु हैं। सत्य कबीर सबके सद्गुरु हैं॥
सत्त मिले सतकबीरके हाटा। सत्त विना जिव बारा बाटा॥
तीन लोक महँ डंका परिया। सबते श्रेष्ठ कबीर ठहरिया॥
जीव उबारन ताके सब दासा। विष्णु व्यास सतनाम प्रकाशा॥
कहैं कृष्ण सेवक जत वाणी। हम तुम सेवक सेवक जानी॥
जगमहँ कौतुक पंथ चलाई। निज पंथ इस ताहि बलताई॥
दूत हमार तासु रह दासा। जो कोइ होय कबीर गुरु आसा॥
सबीर नाम प्रति स्वास जप प्राणी। कबीर नाम भज लहे सुखधामी

कबीरवचन।

कहैं कबीर सुन कृष्ण सुजाना। तुम हमरे महँ सकल समाना॥
जब तुम चाहो दरस मम किया। नाम सरूप प्रेम चित दिया॥
जाके नाम सरूप चितलावे। गुप्त प्रगट ते दर्शन पावे॥
अब तुम इच्छा हमरे हांथा। हमरे दास कहँ देहौ साथा॥
धर्मदास मम अंस औतारा। थापेउं ताहि जम्बूद्वीप कडिहारा॥

दोहा-धर्मदासके अगुवा, जाग्रित चूरामनदास।
हम जग होय जगाइब, करव पंथ प्रकाश॥

जा गुरु नांद पुत्र धर्मदासा। व्यालिस वंश धर्म दास प्रकाशा॥
पुन एक सुरत गोपाललेव नाऊ। तुम्हरो प्रीत गोपाल सुन भाऊ॥
तुम्हरी सुरत रहे मम अंगा। हम तुम व्यापक सकलो संगा॥

राम कबीर कबीर सोइ रामा। अविनाशी सेज संत विश्रामा॥
सब पर दाया करहु गोविन्दा। एक मजूरी भक्त अनंदा॥
निरंजनके मुख टेके रहे। सत्यनामके रहनी गहे॥
सती पतिव्रता सतपंथ सुरा। आपा मेटि मिलै सर्व हजूरा॥
राजयोग छवि गृह विश्रामा। तनसे उद्यम मनसे नामा॥
जो जिव जपे कबीर धर्मदासा। औ जो सुरतवंश ब्यालिस आसा
हमरे पंथके टीका इत जागू। धर्मदासके मिलै मोहे लागू॥

कृष्णवचन।

कहें कृष्ण जंबूद्वीप धर्मदासा। जागूदास वंश सुरत पासा॥
औरो कौनो दीप तुम सेवा। सो कंडहारा नाम कह देवा॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर कृष्ण सहिदानी। करनाटक बंकेज बखानी॥
दरभंगा दक्षिण चत्रभुज राऊ। सीलदेश सहते जी सुभाऊ॥
हम सब ठौर भक्त तुव गाऊं। तुम हमरी महिमा परचाऊं॥
अपनी महिमा आपहि लाजा। कोइ कहे हम मिथ्या काजा॥
आपहि आप बडा किये होय पापा। गुरुकी महिमा कहि मिलै आपा

कृष्णवचन।

कहैं कृष्ण अब पायऊं जानी। एको जीव तुव गहिं अघखानी॥
सांचे भजिहै सत्यकबीरा। भज कबीर टेरै औ पीरा॥

दोहा–कहैं कृष्ण सुन व्यास सुख, औ गऊरस सबकोय।
सत्यकबीर मुक्तके दाता, सब जीवहिं गत देय॥

काल निरंजन बड सुख देई । जार झरकाय पापा खोय लेई ॥
धन्य विष्णु जो कछु सुखदाता । तुम सब कृष्ण कबीर विधाता ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सबहिं जिव तारों । कालहिं बांध रसातल डारों ॥
अघपत सो राजा कँहँ भावे । जो परजाहिं सुख देय न सतावे ॥
कहा करों निज शब्द हिताकी । नातो छिनमहँ मेट देवे पापी ॥
अब याहि भला बुरा नाहिं लेखा । कपुत सपूत मात पितु एका ॥
सब सुत पर पितु करे जो छोहा। निकट अबुध भक्ष देय तोहा ॥
ऐसे निरंजन हमरे बंसा । महाकाल जग घालक संसा ॥
ताते विष्णु तुम मम सिख लीन्हो। प्रगट निरंजन मम चित दीन्हो॥
हम डर यम थरहर अब कांपे । जो मोहि भजे ताहि लख आपे॥
कबीरके भक्त विहून जो प्राणी । ताहि काल झरकावे आनी ॥
विष्णुकी भक्ति संपूर्ण करई । एक रोम तब यमके डरई ॥
और देवनको भक्षे काला । एकहि सत्तकबीर रसवाला ॥
सब मिल भक्ति कबीरके मानी । सत्यनाम महिमा विध आनी॥
कहें कृष्णसे सत्यकबीरा । मम वचन सुनहु यदुवीरा ॥
अब हम पंथ जगत विस्तारा । धर्मदास कहँ थापब कंडहारा ॥
जीवलोक कँहँ जाय हमारा । ताहि न पकडे काल लबारा ॥
भजब जीव सकल कल लोका । सब जीवन कर मेव सोका ॥
ठीका पुन्य सती औ गंगा । सबके सत्त करे निरंजन भंगा॥
असि है सकल जीव धर काला । तब हम प्रगटे रूप दयाला ॥

गुरु सद्गुरु साधु दुखभंजन । कबीरनाम ठर डरे निरंजन ॥
कालहिं मेट सकल जग तारों । आवागवन दुख सुख निवारों ॥

कृष्णव्यासशुखदेवगरुडवचन ।

कृष्ण व्यास सुखदेव खगराया । चरणटेक सब विनती लाया ॥
हम सेवकपर दाया करिये । पल २ छोह हमारो धरिये ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर हम निकट प्रेमते । नाम भजे भौ तरे क्षमाते ॥
प्रेम बैन कहि गावे बीरा । संग सबनके स्वास शरीरा ॥
बहुर ध्यान विनति प्रकाशा । बरणहु कृष्ण चाल हरिदासा ॥
संसारी जिव कैसे तरि हैं । सत्यनाम बिन भौजल परि हैं ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण जिवको निस्तारा । बिन कबीरको जीवहि तारा ॥
पूर्ण पुण्य जब जीवहिं होय पूरा । तबसों नाम कबीर भज सूरा ॥
कबीर नाम प्रताप बड भागी । मुक्त होय सो संत सोहागी ॥
कबीर शरण तब प्रापत होई । परम पुनीत कबीर भज सोई ॥
कोट जन्म पुण्य प्रकासा । पूरण पुण्य होय सद्गुरु दासा ॥
सत्यकबीरको सद्गुरु जाना । सद्गुरु अंश मोहिं पहिंचाना ॥
हमहू सत्यनामकी आसा । बांचहि काल निरंजन फांसा ॥
जिम जगकी इसलता नहिं सेवा । खातिर चढै न पाइक देवा ॥
तैसे शरण कबीर प्रतापा । होय निश्चित छूटे तिहु तापा ॥
जो लगि बनि जीवको निस्तारा । बिन कबीरको जीवहिं तारा ॥

पूर्ण पुण्य होय जिव पूरा। तब जिन नाम कबीर भज सूरा॥
कबीर नाम प्रापत बड भागी। संत सोहागिल सो अनुरागी॥
कबीर शरण तब प्रापत होई। परम पुनीत कबीर भज सोई॥
कोटिन जन्म पुण्य प्रकाशा। पूरण पुण्य होय सद्गुरु दासा॥
सत्यकबीरको सद्गुरु जाना। सद्गुरु अंश मोहिं पहिचाना॥
हमहूं सत्यनामकी आसा। बांचहि काल निरंजन फांसा॥
जौलग बनिज न हीरालाला। तौलग संग्रह घोंघी रिसाला॥
जौलग पारस हांथ न आवे। रती हेम दुर्लभ कहँ पावे॥
जौलग अमी वृक्ष सुध नाहीं। तौलग ताड खजुरहिं खांही॥
अस कबीर बिना सब धर्मा। कबीर बिना जिव मिटे न भर्मा॥

गरुडवचन।

कहें गरुड सुन त्रिभुवन राई। तुम अंतर करेहु गोसांई॥
तुम कबीर मिल जीव बचाहू। समय परे कस जीव नचाहू॥
तुम यम दिशि होय बोलत अहहु। दुर्बल जीव लख दृष्ट न खोलहु।

श्रीकृष्णवचन।

कहें कृष्ण सुन गरुड सज्ञानी। बातकी जड तुमहु नहिं जानी॥
हम हैं निराकारके बेटा। पितु आज्ञा जाय नहिं मेटा॥
कहा निरंजन मोहि बुझाई। चित्र गोपित्र औ जहां रिसाई॥
काहिन केहैं निरगुण दासा। दूतन जायहु तिनके पासा॥
तिनके दास छुयेहु जिन कोई। निरगुण भक्त कबीर निज सोई॥
कबीर प्रताप राज हम करहीं। कबीरके द्रोह किये जरि माहीं॥
सत्यकबीर सो अलगहि जीऊ। तेहि तर लावहु कर हद धीऊ॥

निरंजनवचन।

दोहा-कहैं निरंजन कृष्ण सुन, निर्गुण भक्तहिं छांड।
निर्गुण भक्त बिहून जो, ताहि नरक लै डार॥

कृष्णवचन।

कहें कृष्ण सुन पन्नग ग्रासी। यह विध जीव भ्रमें चौरासी॥
उत्तम भक्त कबीरको आहीं। महिमा जीव बिरल लख ताहीं॥
आद अनाद निरगुण कबीरा। स्वासरूप रम सकल शरीरा॥
जब कबीर तब और न कोई। कबीरके किये सृष्टि सब होई॥
सबते उत्तम सत्य कबीरा। तिनके निकट विष्णु धर धीरा॥
विष्णु निकट ब्रह्मा ठहराये। ब्रह्मा निकट रुद्र चल आये॥
देवी निरंजन ऊपर नीचे। सत्यकबीर न्यारा सब बीचे॥
सत्यकबीर प्रसंग सतोगुण। सद्गुण विष्णु देव सो निरगुण॥
निरंजन अंश ब्रह्मा मन रूपी। अष्टंगी अंस रुद्र अंधकूपी॥
एक भाव जग बरते कैसे। ताते पृथक् २ भौ ऐसे॥
सद्गुण बसो रजतमके माहीं। ताते विष्णु सत्य बिरथाहीं॥

दोहा-सत्यकबीरके शिष्य सुत, ताते सद्गुण विष्णु॥
दस चौबिस विष्णु तन तामो, सृष्टि राम विष्णु।

रजगुण तमगुण देह बनाई। सतोगुण अंस जिव आन समाई॥
रजमता अष्टंगी भवानी। तमगुण पिता निरंजन जानी॥
सत्यकबीरके अंस सतोगुण जीऊ। कहैं कृष्ण जिव सब जग पीऊ॥

दोहा-जीव जगमें पीउ है, जीव कबीरके आहिं।
कबीरसो आप सत्पुरुष हैं, अमरलोक रहाहिं॥

जब जिव डेह निरंजन राई । तबै जीव रोवे चिल्लाई ॥
जाकर जीव ताहि दुख व्यापे । कबीर कहाय प्रगट प्रभु आपे ॥
जीव जरत उबारेउ कबीरा । करे भक्त जब धरे शरीरा ॥
जीवहिं धोखे परे भुलाई । सार असार चीन्ह नहिं पाई ॥
देह धरे बिसरे सब ज्ञाना । देहसे न्यारा भये सब जाना ॥
जगको वेद शास्त्र अरुझावे । कबीरके भक्त नहिं विप्र दृढावे ॥
कुसहा ब्राह्मण अगुवा काला । कर्मवश्य जिवपरे बिहाला ॥
दे विश्वास जो पुण्य करावे । मृतक आस जो पूर्व फल पावे ॥
जियत कर्मफल नेक न दृष्टा । पूर्वल आस मरे सो भ्रिष्टा ॥
सौदा सोई जो दीखे दृष्टा । फल औ फूल दृष्टि सुख चिष्टा ॥

दोहा--उपजन विनसनको मता, ब्राह्मण काजी भाष ।
स्थिर घर जो पहुँचे जो, सत्यकबीरि व्रत राख ॥
षोडश रवि शशि भाल छवि, अग्र अमी रस चाख
अस सुख सत्य पुर महँ, शब्द भेद मत भाष ॥

रजगुण तमगुण जोत सतंगी । सतगुण विष्णु कबीर प्रसंगी ॥
सत्य कबीरके पारस सेती । सतोगुण राम कृष्ण विष्णु केती॥
फिर २ जीव भ्रमें चौरासी । निरगुणको निंदक त्रिगुण उपासी
धन्य एक जासो भय तीनी । माय बाप गुरुते सब चीन्ही ॥

दोहा--माय बाप गुरु सद्गुरु, साध संत द्विज एक ।
पवन एक बाजा बहुत, कहें कृष्ण सत देक ।

विनय विष्णु जो परम सुहाई । आज्ञा करहिं कबीर गोसांई ॥
आज्ञा सब जिव दियो मुक्ताई । ऐसी करब हमसों किम भाई ॥
तात माततै गुरु अधिकाई । सद्गुरु शरण बिना जिव खाई ॥
बिना कबीर न बांचे भाई । कबीर साहेब सद्गुरु सांई ॥
कोटि माहिं कोइ जीव पुनीता । संत साध संग पाठ कृत गीता ॥
गीतामाहिं बहु संध कबीरा । मिले ताहि जो मथे अर्थ क्षीरा ॥
मथे क्षीर ले माखन तावे । तब घृत वास सुवास बसावे ॥
तिम कबीर सतघृत कुल वासा । और पंथ बिन आसातिक आसा ॥

दोहा-वेद मथके गीता कीन्हा, गीता मथके सार ।
सार सो सार कबीर बखानहि, भाषे कृष्ण मुरार ॥

जिमि सब तनमें चक्षु नाका । तस तनमें स्वासा जिव ताका ॥
सबे कबीर कहि २ गोहरावा । तत्क्षण सत्यकबीर चलि आवा ॥
सबे कबीर घ्राणमें होतहिं पहुँचे । परे सबनमें दृष्टि कबीरके ॥
थरहर उठे सबे भहराई । चरण पखार सिंघासन बैठाई ॥
चरणोदक ले विनती कीन्हा । कहँ गयउ साहेब दरश बिन दीन्हा ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर गये जिवके खोजा । दयावंत मिले मुनींद्र इन सोझा ॥
दया सत्त जहँ बास हमारा । राम कबीर एक चटसारा ॥
का हिंदूका तुरक सब जाती । तारों नाम भक्त मिल पाती ॥
जात पात है त्रिगुण पसारा । विष्णु अवरण चौथे निसतारा ॥
चौथे कबीर तिनते श्रेष्ठा । सद्गुरु भक्त बिना जिव नष्टा ॥

दोहा- विष्णु देह धर खेले, अलख निरंजन कृष्ण।
सब लहुरे हैं कबीरते, राम कृष्ण शिव विष्णु॥
गुप्त प्रगट निरगुण वो सरगुण।
व्यास उक्ति मति श्रेष्ठ सो निरगुण॥

कहैं कबीर व्यासकी वाणी। गीता मता सार सब ठानी॥
करहु प्रकाश भागवत गीता। सुने ज्ञान जिव मिटे मन चीता॥
हम कबीर जिव दाया दृढावे। जहां सत्त ताके ढिग आवे॥
सत्यकबीर हमारो नाऊं। दया सत्यके निकट रहाऊं॥
तुम पूछेहु कब गवनेहु स्वामी। मक्का पहुँचेउ सुन नभगामी॥
रायअमोलिक कहँशिष्यकीन्हा। नाम पानदे मुक्त कर लीन्हा॥
जम्बुदीप धर्मदास कंडहारा। ताके अगुवा जीवन कंडहारा॥
जागु प्रगटके जगत जगैहैं। कबीर धर्मदासके भक्त दृढै हैं॥
जागू कहायब सत्यकबीरा। लहुरा कबीर जागु गंभीरा॥
कहैं कबीर हम जगमें नासक। दासातन धर दास हो दासक॥
सो सुनिये त्रिभुवनपति राई। कबीरधर्मदासजीवजीवतरजाई॥

व्यासवचन।

कहैं कृष्णसों व्यास सुजाना। जब भगवान कहो कछु ज्ञाना॥
अगले जीवन शब्द सहाई। परख शब्द पंथ ज्ञान चलाई॥
ऊंच नीच तन सब जिव तरई। बहुरिन योनी संकट पाई॥
बेर अनंत पूछहु मोहिं भाई। मुक्तदाता कबीर ठहराई॥
कबीरके भक्त बडे तप पावे। त्रिगुण कर्म भर्म अरुझावे॥

जहँ कबीर समर्थ गुरु आपे । मुखपे पान नाक किम थापे ॥
पूछहु सत्यकबीरसे जाई । कबीर कहें सोइ बीज ठहराई ॥
कहें व्यास तुम करता स्वामी । कबीर समर्थ करता सुखखानी ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण व्यास निज दासा । गुरुके एक रोम प्रति आसा ॥
करता हरता दाता भुगता । गृह बैरागी योगी जुगता ॥
कौनहु पंथ गुरु सम नहिं कोई । सबपर श्रेष्ठ कबीर गुरु सोई ॥
सुन सतनाम कबीर गोसांई । गृही विरक्त गत देहुं चिन्हाई ॥

गरुडव्यासवचन ।

गरुड व्यास हरि चरण लपटाने । कबीर चरण गहि विनती ठाने ॥
कबीरसे पूछहिं व्यास निरुवारा । रमता बैठा भाव विचारा ॥
स्थिर रमता भेद बताऊं । ग्रेही औ बैराग सुनाऊं ॥
तुम कहँ प्रिय रमताकी बैठा । बैरागी प्रिय औ गृह गूढा ॥
धर्मदास तुम्हरे कंडहारा । नाम बोहित तुव नाम अधारा ॥
और सबके तुम हो सुखदाई । मुक्त पंथ मोहि कहो समुझाई ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर गरुड सुख व्यासा । कृष्ण समेत सुनहु सब दासा ॥
कहें कबीर सुनो मुनि व्यासा । भो मोहि प्रीत भजे मोहि दासा ॥
ग्रेही भक्त सो उत्तम आही । बैरागी उत्तम गृह माही ॥
ग्रेही भक्त आपन कुल तारे । बैरागी औरन निस्तारे ॥
ग्रेही भक्तसो ना कर भाऊ । बैरागी पारस निरमाऊं ॥
साकट आमिष अहारी प्रेता । खोवे हीरा जन्म अचेता ॥
धन्य भाग जो राघेव नामा । नाम भक्त प्रीत सुखधामा ॥

बिन सतनाम तरे नहिं कोई। कीतम नाम ते काज न होई ॥
सत्यनाम सद्गुरु लख पावे। यम फंद काट मुक्तावे ॥
अमरलोक ले राखें हंसा। छूटे जन्म मरणकी संसा ॥
सद्गुरुकी आसा चित राखे। सोई करे शिष्य जो गुरु भाषे ॥
केते शिष्य गुरुको तज भागे। तीर्थ व्रतकी आसा लागे ॥
तीर्थ व्रत कोइ तारे नाहीं। सबे मुक्त गुरुसेवा माहीं ॥
एक लाभ दिसंतर होई। साध दरश गुरु लाभ है सोई ॥
औ तन मन दृढ रहे गुरुसेवा। ते फल सब घर बैठे लेवा ॥
अथवा जो मन होय उदासा। देखिय संतनकेर विलासा ॥
तो गुरु सेवा महँ कोइ राखी। करहु दिसंतर दीन्हेउं साखी ॥
गुरुकहँ अकेला तजे न भाई। कल्पे गुरु तेहि दोष बहु भाई ॥
गुरु आज्ञा जो करे दिसंतर। नाम सुरत गुरु ध्यान निरंतर ॥

दोहा—सात पांच संमत भरी, गुरु सेवा चित राख।
तब गुरु आज्ञा लेयके, करे दिसंतर जाय ॥

करे दिसंतर देखे देशा। देखे राजा रंक नरेशा ॥
ज्ञानीके दशा विचारे लेखे। काम क्रोधका मुरचा पेखे ॥
मनकी दशा चीन्ह विसरावे। मन मायाका रंग न भावे ॥
जहँलग कुपंथ धोखा भ्रमा। तहँलग आय मन माया कर्मा॥
नागिन नारका चोंट बचावे। नाम ध्यानसो दशा जुगावे ॥
आपा त्यागे रहे दीनता। शब्द प्रकाशे नाम लीनता ॥

सत्यनामकी महिमा भाषे । तृष्णा लोभ न मनमें राखे ॥
रहे असोच सो आपन कामा । पल २ निशि दिन आठहु यामा॥
पर पोषण भिक्षा नहिं लाजा । नित्त पित्त करहिं बहु समाजा॥
बेगमी रहे भरोसे साहेब । सोई संत सब माहिं मुसाहेब ॥
आवे सहज विचार सो पावे । परिहरि आमिष अंकुर फल पावे
सत्यपुरुष कहँ भोग लगावे । महाप्रसाद संत मिल पावे ॥
कोइ जीव वचन नहिं पावे । सबमें राम कबीर कहावे ॥
कोई फकीर होय पाले देहा । मकरा तजि गोहसो नेहा ॥
जो साहेब भेजें सो पावे । रूखा सूखा नहिं बिलगावे ॥
क्या पाटाम्बर क्या टाटम्बर । क्या चिंतामणि क्या पीतांबर॥
जो साहेब भेजे सो सही । कलपत भिक्षा लेना नहीं ॥
बिन मांगे कोइ कोट चढावे । सो लीजे कछु दोष न आवे ॥
सहज अजाची भिक्षा आवे । आप चुगे औ सबहिं चुगावे॥
गुरु पूजा संतन सेवकाई । सबसो प्रीत सुमत सुचिताई ॥
वह माया कहु कौने काजा । जो नहिं परमारथ पथ साजा॥
एक जो माया जोगवहिं भाई । बिलसहिं आप औरन डहकाई ।
यह माया है यमकी फांसी । नाम विना भरमें चौरासी ॥
दोहा–माया है दो भांतिकी, जो कोइ जाने खाय ।
एक मिलावे नामको, एक नरक ले जाय ॥
आसुरी माया आपहिं पोषे, गाढे परे न हूठ ।
सातकी सो परमारथ, संतन घाले मूठ ॥
माया जुगवे कौन गुण, अंत न आवे काज ।

सत्यनाम जुगावहु, माया परमारथ साज ।
संखपद्म ले माया, भक्तिहीन जो होय ॥
ता तेहि यम ले ग्रासे, नरक परे पुन रोय ॥
रंक जीव जो सोई, सोई महि धनवंता ।
धनवंता तो हरि भजे, तो हरष मिले भगवंता ॥
रंक धनीको नहिं चाहे, चाहे प्रेम प्रतीत ।
गुरुभक्ता मोहि भावे, कहें कबीर अतीत ॥
गुरुभक्ता मम भक्ता, साध भक्त मम दास ।
हरिभक्ता सोऊ हम, कहें कबीर हरि व्यास ॥
आतमपूजा जिव दया, परआतमको सेव ।
कहें कबीर सत्यनाम भज, सहज परम पद लेव ॥

पांचहुको लखे परपंचा । नाम भजे जिव पावे संचा ॥
पांचों परपंची तन भुगता । पांच तीन साधे अवधूता ॥
सुर नर अज हरि हर मुनि जेते । तन धर पांच तीन घर तेते ॥
बिरला गुरु गम परखि भये न्यारा। सो वांचे जिन शब्द विचारा॥
जो राजामहँ थाको माना । शब्द महंत महातम जाना ॥
शब्द विना जग बाउर अंधा । शब्द विना जग परे यमफंदा ॥
सद्गुरु शब्द परख पंथ चाला । जो जीते जग वरवस काला ॥
मन काल निरंजन अंसा । अज्ञानीको करे विधंसा ॥
ज्ञान प्रवेश होय मन सांचा । नाम बचे जिव यमसों वांचा॥
भजे नाम जो मन चितलाई । पांच पचीस तीन थक जाई ॥
प्रगट होय कला सतनामा । शब्द परख चले तेहि शुभ कामा॥

दोहा-नैन नासिक जिभ्या, श्रवण इंद्री स्थान ।
पाचों आने सहज घर, सोई सिद्ध प्रवान ॥

जिभ्या बंका घाट जुगावे । मिथ्या चुगल आमिष न भावे॥
जो बोले सो अक्षर सूंचा । नाम भक्त सतसंगत ऊंचा ॥
जो साहेब देय धार घृत मेवा । सहज भाव कर दोनों लेवा ॥
जैसा मीठा दधि घृत खोवा । फिरका साग ताहि संजोवा ॥
जिभ्या अग्रवास रस मीठा । रसना उतर कंठ तर फीका ॥

दोहा-जैसा मीठा घृत पक, तैसा फीका साग ।
सत्यनाम सो राचे, कहें कबीर बैराग ॥
ग्रेही साध सेवा करे, भाव भक्त आनंद ।
कहें कबीर बैरागी, निरवानी निरद्वंद ॥
शब्द विचारे पंथ चले ज्ञान गली दे पांव ।
क्या रमता क्या बैठा क्या गृह कंदल छांव ॥
सुरत सोहागिल सो सही, जो गुरु आज्ञा माहिं ।
गुरु आज्ञा जो मेटे, ताहि कुशल हो नाहिं ॥
पिय सन्मुख सेवा करे, जो पतिव्रता जान ।
पिय तज जो जित तित रमे, वरत भंग तप मान ॥
गुरुआज्ञा ले आवे, गुरु आज्ञा ले जाय ।
कहें कबीर सो संत प्यारे, बहुविध अमृत खाय ॥
कहें कबीर गुरु प्रेमवश, क्या नेरे क्या दूर ।
जाको चित जासों बसे, सो तेहि सदा हजूर ॥

गुरुआज्ञाते जो रमे, रमते तजे शरीर।
ताके मुक्त हजूर हैं, सद्गुरु कहें कबीर ॥
गुरुके सन्मुख जो रहे, सहे कसौटी दुःख।
कहें कबीर वा दुःख पर, वारों कोटिन सुक्ख ॥
सद्गुरु अधम उधारन, दयासिंधु गुरु नाम।
गुरु विन कोई न तर सके, क्या जप अल्लह राम ॥
गुरु मुक्तावे जीव कहँ, चौरासी बंद छोर।
मुक्त प्रवाना देहिं जो, यमसो तिनका तोड ॥
वेद पुराण साधु गुरु, सबन कहा निज बात।
गुरुते अधिक न दूसर, क्या हरि क्या पितु मात ॥
ताते शब्द विवेक कर, कीजिये सो साज ॥
जोहि विध गुरुसो प्रीत रह, कजि सोई काज ॥
गुरुसो प्रीत निबाहिये, जेहि तत निवहे संत।
प्रेम बिना ढिग दूर है, प्रीत निकट गुरु कंथ ॥
सोइ नाचना नाचिये, जेहि निबहे गुरुप्रेम।
कहें कबीर गुरु प्रेम बिन, कितहु कुशल ना क्षेम ॥
तन मन सीस निछावर, दीजे सरबस प्राण।
कहें कबीर दुख सुख हरे, सदा रहे गलतान ॥
तब जो गुरु प्रिय बैन कहि, शिष्यहि चितवे दीठ।
तो रहिये गुरु सन्मुख, कबहुं न दीजे पीठ ॥
गुरु मारे झटकारे, गुरु बोरे गुरु तात।
गुरुसों प्रीत निबाहिये, गुरु भो निधि काडिहार ॥

सनेह प्रेम गुरु चरणमें, जेहि प्रकार सो होय ।
क्या नेरे क्या दूर बस, प्रेम भक्त सुख सोय ॥
जेहि विधि शिष्यके मन बसे, गुरुपद परमसनेह ।
कहैं कबीर काफर ढिग, क्या पर्वत बन ग्रेह ॥
सोई साध पतिव्रता जो, सदा जरे पिय आग ।
लाभ हानि बिसराइके, रहे चरण गुरु लाग ॥
जो गुरु पूरा होय तो, शिष्यहिं लेय निबाह ।
शिष्यभाव सुत जानिये, सुतते श्रेष्ठ शिष्य आय ॥
अबुध सुबुध सुत मात पितु, सबहिं करे प्रतिपाल ।
अपनी ओर निबाह गुरु,शिष्य सुख लहे निज चाल
जैसे सती संग जरे, आस पतीकी त्याग ।
सुघर कूर सोचे नहीं, शिष्य पतिव्रत सोहाग ॥
सरबस सीस चढाइके, तन कृत सेवा सार ।
क्षुध पियास सहि ताडना, गुरुकी सुरति निहार॥
गुरुको दोष रतिक नहिं, शिष्य न साधे आप ।
शिष्य ना छोडे मनमता, गुरुहिं दोष दे पाप ॥
जैसी सेवा शिष्य करे, तस फल प्रापत होय ।
जो बोवे सो लुवे, कहैं कबीर बिलोय ॥
कहैं कबीर गुरु सो मिले, नाम होय प्रकाश ।
गुरु मिलिशिष्य भौनिधि तरे,सुनहुकृष्ण मुनिव्यास
सुनियो संतन साध मिल, कहैं कबीर समुझाय ।
जेहि विधि गुरुसो प्रीत होय, कीजे सोइ उपाय ॥

व्यासवचन।

विनती व्यास कीन्ह पग टेकी। तुमसन काहु न देख विवेकी॥
ज्ञान दसा औ मनकी दसा। सत्यकबीर करो प्रकाशा॥

कबीर वचन।

कहैं कबीर निरनै टकसारा। मनमत ज्ञानमता निरुवारा॥
ज्ञान अंग प्रथम गुरु करई। गुरुको शब्द हृदय गह धरई॥
गुरु तो ऐसा कीजे भाई। पूर्ण ज्ञान सत चाल दृढाई॥
सत्तलोकले जीव पहुँचावे। दया क्षमा सुखसिंधु समावे॥
पूछे गुरुसे होय गलताना। जो गुरु कहे सोई सतमाना॥
गुरुमुख ज्ञान विचारे लीन्हा। मन औ ज्ञान भिन्न तब कीन्हा॥
दया क्षमा औ शील संतोषा। ज्ञान दया औ जीवपंथ मोषा॥
विष्णो ज्ञान साकट अज्ञानी। शीतल ज्ञान क्रोध मन जानी॥
असंत औ आतुर ज्ञाना। शील ज्ञान बेशील अज्ञाना॥
निरगुण ज्ञान औ ज्ञान अतीला। धीरज ज्ञान अज्ञान हठीला॥
आप खाय औरहिं देय ज्ञाना। गुरु साधू तज खाय अज्ञाना॥
सेवा ज्ञान न उस अज्ञाना। कामी मन निहकामी ज्ञाना॥
तीर्थ व्रत तप मनको भाऊ। नाम भक्त पुन ज्ञान लखाऊ॥
चंचल मन स्थिर गुरु ज्ञाना। चंद भान ज्ञान अगनित भाना॥
दिवस ज्ञान अज्ञान भौ राती। अवरण ज्ञान अभै नाजाती॥
आतम पूजा ज्ञान बखाना। मनमत सिला धात व्रत ठाना॥
दुबल सुपद ज्ञान भति ठाना। डिंभ धार को पूजे अज्ञाना॥

मात पिता सेवे शुभ ज्ञाना। तात जननी तज त्रिय मन माना॥
डिंभ अहंकार दुती मन छाया। अछत दीन लघु ज्ञान सुभाया॥
पालक ज्ञान घालक यम बाजी। जैसे जग मनमत दिज काजी॥
बोलता ज्ञान तन मन अंकारा। जाग्रित ज्ञान स्वप्न मन चारा॥
ज्ञान परमारथ स्वार्थ मन मूढा। जुवा मनुज ज्ञान पद बूढा॥
अपन पराया एक सम जाना। और तोर मन बुध बिगराना॥
मात पिता सिर देय सो ज्ञाना। अहिव नारी विष खोट अज्ञाना॥
भीख अजाची ज्ञानको अंगा। धूमधाम जांचक मनरंगा॥
देह दाग मनमता कहावा। मन दागे जो ज्ञान सुभावा॥
नाच छाछ विश्वा नट ठाढी। यह मनमता यम चौकी गाढी॥
मीन नास मद भष मन वाजी। कसतुरी मिमयाय असत बन खाजी॥
चाहे वैराग तजे नहिं रानी। सन्यासी संग्रह मन चारी॥
झंखे मन पुलकित होय आना। सरगुन गुरु मन सद्गुरु ज्ञाना॥
चाहे भिरत तजे नहिं मोहा। मोह अज्ञान ज्ञान निरमोहा॥
सतगुण ज्ञान रज तम मन दीसा। मन मलेक्ष गुण पांच पचीसा॥
जागे ज्ञान सोय अज्ञाना। सो जागा जिन राम पहिचाना॥
सोइ अज्ञान गुरु सेवा नहिं कीन्हा। गुरुको सार असार नहिं चीन्हा
ज्ञान अमर मन मरे नसाई। ज्ञान पारस मन सुरत होय जाई
ज्ञान अमर पद सार सो बाहर। सद्गुरु मिल आवे शिष्य ठाहर॥
बाहरसे घट ब्रह्म समाना। सो जिवलोकते न्यारा निरबाना॥
अमी ज्ञान सो सत्य कबीरं। विषे निरंजन नीर सरीरं॥
जीव अमी सो नाम कबीरा। देह निरंजन विषै शरीरा॥

आवत स्वास सो सत्य कबीरा। निकसत मरे निरंजन कीरा ॥
मीर हमीर मन माया जानो। अजर पीर कबीर बखानो ॥
व्यास कहैं कस पीर कबीरा। सत्य कबीर भल दास गंभीरा ॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर कलयुगके आदी। मीन मांस भखिहैं नर बादी ॥
होय मलेक्ष महादेव ऐहैं। गौ द्विज वधि सिरिया नैगी ऐहैं ॥
महादेवहिं महम्मद कहिये। हिंदू केर धर्म नहिं रहिये ॥
तब हम पीर कबीर कहाउब। साधि मलेक्ष गौ द्विजहिं बुचाउब ॥
विष्णु पक्षका भयो प्रकाशा। हमरे विष्णुसों कस दुइ भासा ॥

दोहा–दास कबीर कहाउब, रजब गुरु करब संसार।
सत्यकबीर कहाउब, संतनके निस्तार ॥

जन कबीर भये नरतन धारा। कबीर कहाये जिव तन सारा ॥
हंस कबीर होय भजव सतनामा। अम्बर कबीर अमर सो जामा ॥
गैबी नाम कबीर कहाउब। बहु बंधनते जीव मुकताउब ॥
अविगत कबीर कहाउब तबहीं। स्वपच अधम उबारब जबहीं ॥
अकह कबीर कहे को लीला। अविनाशी नहिं विनस शरीरा ॥
नाम कबीर वास सब देहा। रमैं कबीर रामतन खेहा ॥
रमैं कबीर होय रमता रामा। रमता स्वास जिव तन विश्रामा ॥
दीन दयाल कबीर कहाये। दीन दुखित जिव पालन आये ॥
खसम कबीर कहाये तबहीं। जीव सोहंगदे व्याहेउ जबहीं ॥
काल मरदन कबीर कहाये। यमहिं जीत जिवलोक पठाये ॥

जोगजीत तब नाम हमारा। जब जीते योग माया निराकारा॥
सतसुकित तब नाम हमारा। जब सत्त प्रकाश कीन्ह संसारा॥
बंदीछोर तबहिं कहलावा। जब यम बंदिछोर मुक्तावा॥
मनकहँ जीत मुनीन्द्र कहाये। करुणामय होय दया दृढाये॥
सब फुलवा बोलि हमारी। निरंजन कहँ सौंपा बारी॥
निरंजन पुत्र पुत्री अष्टंगी। मम द्रोही जो ताको संगी॥
हमरे दुष्ट मित्र नहिं कोई। सर्वहिं व्यापक न्यारा सोई॥
साधु द्रोह सोई मम द्रोहा। साधुसेवक मम सेवक वोहा॥
जो मम संतकी सेवा करई। हमहिं जानके गुरुको धरई॥
ताहि मुक्तिका संशय नाहीं। गुरु साध भक्ता मम आहीं॥
गुरुद्रोही सो साधुको द्रोही। अपने राम न भेंटेउ वोही॥
जग महँ चहुं युग गुरु औ रामा। राजा राम गुरू सुखधामा॥
गुरु राम दोय नाम हमारा। राम असोच गुरु भौकंडहारा॥
अगम ज्ञान मन पूछहिं बाला। बहुरहिं पूछेऊं पीर व्याला॥
पीर परा ईसब दिन मेरा। सोई पीर जेहि पीर जिव केरा॥
कहौंकहां लग विकृत कलाजग। निरंजन एक मम रोम तनलग॥

व्यासवचन।

व्यास चरण गहि पुलकितभयऊं। सत्य कबीर मोहिं मानद दियऊ
बडे भाग मम सुखदेवकेरा। और गडुरके भाग बडेरा॥
व्यासदेव कृष्णहिं सिर नाये। धन्य तुम कृष्ण कबीर चिन्हाये॥
कबीर बिना को राखे जिवको। गुरु बिन कौन चिन्हावे पिवको॥
गुरु विष्णु सत सतको अंशा। सोई सत्यकबीर कुलवंशा॥

सबके मूल कबीर ठहराने । कबीरके डर यमराज डराने ॥

कृष्णवचन ।

कहैं कृष्ण सुन व्यास मत धीरा । सब सद्गुणके गुरू कबीरा ॥
लेहु पान सबही मम दीक्षा । सत्यकबीर कहँ अर्पहु सीसा ॥
सद्गुरु कबीर गुरु करहु रे भाई । श्रीकृष्ण सबको समुझाई ॥
जहँलग सद्गुण देवता रहऊ । सबन धाय सद्गुरु पद गहऊ ॥
उभै कहे विष चक्षु नीरा । देहु प्रवाना सत्य कबीरा ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो सब देवा । कृष्णसो पूछहु हमरी भेवा ॥
हम हैं अजर मुक्तके दाता । हमरे शरण यम त्रास निपाता ॥
जो हम कहा शब्द सहिदानी । शब्दकी चाल चले सो ज्ञानी ॥
सबन कहा अर्पों शिर तोही । देहु पान आपन करु मोही ॥
सत्यकबीर तब आरती कीन्हा । अमी अंक सो बीरा दीन्हा ॥
चरणोदकदे तिलक कर दीन्हा । तुलसि माल दे सिखवनकीन्हा ॥
सब जिव जानहु एक समाना । जीवघात तज द्रोह अभिमाना ॥
साधु गुरु सम सेवा मानी । सुख स्थिर सद्गुरुकी वाणी ॥
गुरु कर्ता गुरु सम नहिं कोई । गुरु कर्ता ते श्रेष्ठ है सोई ॥
करता देही धर गुरु करही । तो करता करता होय परही ॥
सब महँ करता नाम कबीरा । रमें राम होय सकल शरीरा ॥
सर्व मई सो राम लखाहीं । राम सो अंश कबीरके आहीं ॥
जग महँ उलटी भाव दिखाये । जो स्वामी सो दास कहाये ॥
करता आद कबीर भये दासा । राम कृष्णकी महिमा प्रकाशा ॥

सबसो राम सो रमहिं कबीरा । जैसे घृत व्यापक है क्षीरा ॥
बैठा नवर बराबर पोखे । पाप नाचि तबै पुण्य कर चोखे॥
ना कोइ पाप जिवघातसमाना । साधुसेवासम पुण्य न आना ॥
गुरुके भक्तसमान नहिं दूजा । पतिव्रता जिमि पियपद पूजा ॥
सद्गुरु पिव सो जीवके आहीं । पतिव्रताते गुरुभक्तश्रेष्ठआहीं ॥
तिन स्वामीके भक्त सुरलोका । गुरु प्रियभक्त सो जीवनिसोका॥
श्वान मंजार देह धर सोई । गुरु साधुको निन्देउ सोई ॥
हरदम नाम कबीरको गावे । तासु हृदय कबीर समावे ॥
तजे अभक्ष सुभक्ष सो पावे । मीन मास मदार रत नहिं भावे॥

दोहा--मधुर मम पाय कसतुरी, माक्षी घोंघी चुन ।
मत्स्य मास मद त्यागे, पहुँचे पुरुष समीप ॥
पान परवाना पावे, सुमरे सत्य कबीर ।
कहें कबीर घर पहुँचे, बहुर न धरे शरीर ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश भवानी । लक्ष्मी गायत्रि सकुचानी ॥
हम सब गुरुविनकोहिपंथ जायब । ना जानो केहि खान समायब ॥
हमरे स्वामी तेहि सिर दीन्हा । हम तीनो मिल केहि पग लीन्हा॥

लक्ष्मीवचन ।

लक्ष्मी कहें सुनो ब्रह्माणी । सुन सेवहु कबीर मुखवाणी ॥
चहिये कबीरके दीक्षा लीजे । सत्यकबीर चरण चित दीजे ॥
कह लक्ष्मी मम पति सिरदारा । थो मम पतिके सद्गुरु सारा ॥
यह कह लक्ष्मी विष्णुपहँआई । सीस नाय चरण चित लाई ॥
आज्ञा करिये स्वामी मोरा । तब गुरु करों कबीरबदिछोरा ॥

विष्णुवचन ।

हंसके विष्णु तबआयसु दीन्हा । हम जो चहत सोईतुम कीन्हा ॥

दोहा–धन्य भाग तेहि नारको, विष्णव जाको स्वामी ।
बहुर भाग तेहि पुरुषको, जेहि घर विष्णव वामी ।

कहें कृष्ण नरिअर कर लेहू । सीस निछावर नरियर देहू ॥

दोहा–पान मिष्टान्न नरियर, पुंगी फल पुष्प श्वेत ।
श्वेत वस्त्र सिंहासन, साजहु थार समेत ॥

कंचन थार जोत प्रकाशा । हीरा माणिक अथ्र सुवासा ॥
कृष्ण लाय पीछे निज नारी । चले भक्त राधे झझकारी ॥
पुन सत शिवको सिधाई । कबीरके चरण परससबआई ॥
कहें कृष्ण सुन सत्यकबीरं । दीजे शरण नार त्रिय धीरं ॥

लक्ष्मीबचन ।

लक्ष्मी कहे विविध कर जोरी । हमको तारहु यमसोबंदिछोरी ॥

कवीरवचन ।

दोहा–कहें कबीर सुन लक्ष्मी, सोई नार सुलक्ष ।
तन स्वामी जिव पीव कहँ, सेवा करती दक्ष ॥

अपने पति तज आन न जोवे । सोई नार पतिव्रता होवे ॥
पतिव्रता निज प्रियपद पूजा । जग महँ पतितज सृष्टि न दूजा ॥

दोहा–पिय चरणोदक जूठन, पतिव्रताको अधार ।
पियहे अंबू अगिन घसे, सिरदे हने पहार ॥

सबपर सत्यनाम गुरुरूपा । अजर अमर गुरु सच्च सरूपा ॥
जीव सबे गुरु समर्थ केरा । जासु प्राण बस जाके चेरा ॥

तुम तो लक्ष्मी सम्यकी माया । साधु संतपर करिहो दाया ॥
सुनहु कृष्ण स्त्री गुरु स्वामी । तन गुरुपति पति गुरु निज नामी ।

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण हम दासी दासा । एक मत घर तब संत विलासा ॥
तब कबीर प्रसाद चढावा । सत्यनाम कहँ भोग लगावा ॥
यम त्रिण तोड दीन्ह परवाना । लक्ष्मी पान पाय सुख माना ॥
चरणामृत सीत प्रसादा । लीन्ह लक्ष्मी सत्तको स्वादा ॥
सात दंडवत कीन्ह खसम कहँ । तीन दंडवत संत तनपति कहँ ॥
कहा कृष्ण अब हम गति पावा । घर साकट वैष्णव करवावा ॥
केते पुरुष आय गुरु शिष्या । नारी साकट घर प्रेत परेखा ॥

दोहा-भक्ति करे जो स्त्री, तो बसिये घर माहिं ।
साकट स्त्री भृंभनी; नहिं जैये तेहि पाहिं ॥

स्त्री बेटी बेटा भानजी । मात पितु बंधु परिजन काजी ॥
ये सब सरगुण भ्रम पसारा । मोर मोर कर मरे संसारा ॥
मोर मोर का करहु रे भाई । मोर आप पशु देख तबाई ॥
सब गुण शूद्र तासु धराई । भक्ति विना कछु काम न आई ॥
अपने मन सब भक्त कराहीं । सार भक्त बिन नरक भोगाहीं ॥
सार भक्त सतनाम कबीरा । भजे कबीर न धरै शरीरा ॥
चौथा पद सद्गुरु स्थाना । सद्गुरु सत्य कबीर निरवाना ॥
निरगुण भक्त पतिव्रत शरीरा । एक खसम सो सत्य कबीरा ॥
त्रिगुण भक्त सो आवा जाहीं । चौरासी महँ भटका खाहीं ॥

दोहा--सतगुण रजगुण तमगुण, तिनके तीन सुभाव ॥
कौन सिरजे कौन पोसे, कोइ संहार कराव ।

रजगुण तमकी उतपत जाना । सतगुण सोवत जन्म सिराना ॥
तमगुण रुद्र काल संहारे । त्रिगुण निरंजन भसम कर डारे ।
बांचे विष्णु सतगुण सत ठाईं । सत्यके मूल सत्य कबीर सतसाईं
जेहि जस रुचे तैसो गुरु कीजे । विन गुरु जीव काल बस दीजे ॥

दोहा--सावित्री औ गौरा, मगन भये हरि बैन ।
कहें हमहू गुरु करों, सत्य कबीर सुख चैन ॥

कहैं कृष्ण कबीरसे वाणी । शिष्य होन चाहैं त्रिय दोय प्राणी ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर स्त्रीवस स्वामी । पति कहं पूंछ नाम भज नामी ॥

गायत्रीगौरावचन ।

कहैं गायत्री गौरा बहोरी । सबके स्वामी तुम बंदिछोरी ॥
दुनिया माहि कोइ हित नाहीं । दिन दश कच्चा सुख जगमाहीं ॥
अंतकाल जब काल गरासे । तब गुरु विन नहिं कोइ निकासे ॥
अघा अर्द्धंगी तेहमें तानी । लक्ष्मी तुव शरण हम कालअधीनी
सत्यकबीर तुम गुरु पितु माता । तुम्हरी दया बने सब बाता ॥
हम चीन्हा तुम साहेब आहू । सब बनजिया तुमही गुरु साहू ॥
तुम जेहि चितवहु सो तर जाई । तुम विन जियरा नरक भोगाई ॥
गौरा कहें विहसिके वाणी । हमहू लखा कबीर सहिदानी ॥
जबहिं विष्णु हरिनाकुश मारा । शिव गुणयुत छिन असुरहिं मारा
हमहू शिवगण आई हां । बैठे हरिनाकुश सिरमाहा ॥
जब कबीर विष्णुके माथे । तब देखा मैं शिवके साथे ॥

कबीरवचन।

कहैं कबीर सही तुम कहा। होहू शिष्य कपिलमुनि पहा॥

दोहा-कपिला गऊ कपिल मुनि, हो सद्गुरु हो तास।
तास शिष्य मम पुत्री, तुम्हरे होय निवाह॥

कृष्णवचन।

कहा कृष्ण गौरा सावित्रिहिं। एकै वृक्ष डार भै त्रिवधिहिं॥
मूल कबीर निरंजन डारा। साखा त्रिगुण पत्र संसारा॥
पांच पचीस जीव संग परऊ। हंस चाल तज बक मग गहहू॥
हंस सोई जिन सद्गुरु चीन्हा। सद्गुरु सत्यकबीर चित दीन्हा॥

दोहा-सावत्री औ गौरा, भई कपिलमुनि शिष्य।
विष्णुआदिक कबीर प्रमोधा,भयो सबन मन हर्ष॥

तेहि छिन मात्र रुद्र अज आये। देश मुल्क सुध हरहिं सुनाये॥
पूंछा विष्णु मृत्युलोक कहानी। चतुरानन शिव कहा बखानी॥

ब्रह्माशिववचन।

महा आनंद होत सब ठाऊं। भौ मृत्युलोक वैकुंठ सुभाऊं॥
विष्णव भया सकल जग जाई। सत्यकबीर जपे दुनियाई॥
राम कबीर करे पंथ जागा। जग सब भक्त भयउ मद त्यागा॥
विष्णव होय सो गिने न काहू। कहैं के को तुम अज शिव आहू।

कृष्णवचन।

कहैं कृष्ण यह भलि है बाता। तुम अंकुल काहे अकुलाता॥
तुमहु भक्त करहु भल चाहहू। तजहु क्रोध सद्गुरु पहिचानहू॥

महादेववचन।

कहैं महादेव तमकके बाता। सद्गुरु तुमहि विष्णु जगदाता॥

कृष्णवचन ।

कहैं कृष्ण हम सद्गुरु नाहीं । सद्गुरुके पदरजको छाहीं ॥
सद्गुरु एके सत्य कबीरा । काया बीर सतनाम कबीरा ॥
काया बीर बोलता पवना । आद पवनसो स्वास अजौना ॥
खंस हंस सरवर तनमाहीं । अमी अहार सदा सुखमाहीं ॥
सोहंग हंस अंस सतनामा । सोहंग करता पुरुष बखाना ॥
सोहंग एक कबीरते छोटा । सबसे बडे सोहंग नृप मोटा ॥
सोहंग स्वास एकहि नाऊ । अनंत नाम स्वासके भाऊ ॥
दोहा–अनंत नाम एक स्वासके, स्वासा सबके माहिं ।
निरंजन ब्रह्मा अज हरिहर,जतस्वास विना कोइ नाहिं
सो स्वासा स्वासा बिस्तारहि । आद स्वासा सो भौ सोहंग छाही।
स्वास सोहंग सो ओंकार भो तीनी । सबके रचना कबीरजी कीन्ही
दोहा–राम कबीरके अंश हैं, कबीर रामके अंश ।
राम कबीरके वंश हैं, कबीर रामके वंश ॥
सत्य सो पिता पुत्र होय धाया । तबहिं पुत्र पिता कहलाया ॥
स्वासा सत्यकबीरको अंसा । देह निरंजन घट पर संसा ॥

ब्रह्माशिववचन ।

सुनि ब्रह्मा शिव अचरज भयऊ। तबहीं शिव अस बोले लियऊ ॥
सही कबीर बडे हैं भाई । मोह कहा भूतको राई ॥
जासे हम तुम सब मिल हारा । एक बेर नहिं कैयो वारा ॥
कबीर करता हम तबहीं चीन्हा । खरा जबाब जब हम कह दीन्हा
ब्रह्मा कहें कबीर करतारा । कबीर कला सो अपरम्पारा ॥
निरंजन जाके डर भौ माना । कबीरके त्राससो काल डेराना ॥

कृष्णवचन ।

इतना सुन कृष्ण कबीरपहँ हेरा । तब कबीर प्रगटें तेहि बेरा ॥
सत्यनाम कहि शब्द उचारा । अद्भुत लीला कला विस्तारा ॥
सोभा लोक रोम एक प्रगटा । अद्भुत चंद्र सूर भौ घटा ॥

दोहा–सिंहासन पर बैठे, सद्गुरु सत्यकबीर ।
अमित कला छबिको कहे, अद्भुत हंस मन हीर ॥
धन्य भाग्य वैकुंठके, जहँ प्रगटे सत्यनाम ।
सद्गुरु देव अनंदही, रजगुण तमगुण धाम ॥

कला गुप्त किये सत्यकबीरा । जैसेको तैसे मतधीरा ॥
सबे देव थरहर पग लागे । परसत चरण सकल भ्रम भागे ॥

अजहरवचन ।

अजहर सबे कहे हरसेती । सबे शरण गहो यही सुमेती ॥

दोहा–ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, सबन कृष्ण समुझाय ।
फिर यह अवसर कहां मिले, गहो कबीरके पांव ॥

हर्षंत अजहर लीन्हो पाना । नारि पुरुष एक मत निरवाना ॥
चरणामृत सबहिन कहँ दीन्हा । सबन माँग प्रीतिसो लीन्हा ॥

कबीरवचन ।

कहे कबीर सुनो त्रियदेवा । आपन अंस रचहु जग सेवा ॥
ठीका पुरे तुम लोक सिधावो । पितुके सेवा अंस बैठावो ॥
सद्गुरु भक्ति हृदय महँ राखहु । मात पिता सेवा सत भाषहु ॥
माता पिता सबे भल होई । सद्गुरु सेय तरे कुल दोई ॥
काम क्रोध आपा घट काढव । सेवा साध सखा घर बाढव ॥

कहैं कबीर सत्यकी चाली । तरे शिष्य लागे गुरु नाली ॥
सत्य कहे होय कारज जिवके । सत्य गहे मिलिहै निज पियके ॥

दोहा-सत्य ताहि कहँ कहिये, रती न मिथ्या जाहि ।
कहैं कबीर कृष्णगीता, विष्णु व्यास चित चहि ॥

कहैं कबीर सुनो सब कोई । भाषों काया भवे सोई ॥
काया सो जो अमर ना रहई । जिवरा योनी नहिं औतरई ॥
षोडश शशि सोहंसन भाला । चकित चंद है कलाग्रिमभाला ॥
मनिमाली कंठ माल विराजे । कोटिन रवि शशि नखछवि छाजे
छत्र सिंहासन जगमग जोती । हंस खान शशि तिहुँ पुर पोती ॥
अमरलोक सो अम्मर हंसा । अमृतफल भोजन निहसंसा ॥
अमर चीर तन विमल विराजे । देह सुवास घ्राणमें छाजे ॥
श्वेत भंवर पंकज विन नाला । अमी सिंधुतट कुंज रिसाला ॥
कमोदनि विमलश्वेत उजियारी । मन पृथ्वी तन फल फुलवारी ॥
विमल सुगंध विटप फलपाता । पक्षी केलिकरें रंग राता ॥
त्रिष्टि विहंगम मय कर जूहा । चंद्र उदै फल फूल सवूहा ॥
विहसहिं हंस महा रस खानी । दसनपांति मन जगमग वाणी ॥
काया अमर सुगंध अंजोरा । योजन शत सुवास घनघोरा ॥
हंस काया अस अम्मरलोका । परस पुरुष पद हंस निसोका ॥
यह शोभा संक्षेप बखाना । अद्भुत शोभा अकह अंमाना ॥
सत्यनामका लेय परवाना । निराकारका मर्दन माना ॥
सो पावे यह काया भाई । कहैं कबीर जिन मोहि लौलाई ॥
कोट सूर्य छबि हंसन काया । बहुत अंजोर संक्षेप सुनाया ॥

दोहा-सत्यनामके एक रोम छबि, तुले न कोटि अनंत ।
अद्भुत शोभा कह कहों, कोट अनंत सूर चंद ॥
शीतल रवि सतलोक मझारा । अगिनसूरज भयो तब निराकारा
अगिनको रास निरंजन काया । अमितरास पुरुष प्रभु छाया ॥
हंसन काया कंचन सूंचा । कोटिन रवि विधि सरिस न पहुँचा
विष्णुके काया कंचन आभा । जैसे अन्नके अगुवा भाभा ॥
स्याम भये हरि पितके खोजा । अरि विष झार स्यामतन वोजा॥
ब्रह्मा ताम रुद्र तन लोहा । लरगा इंद्रका मत फंद मोहा ॥
प्रेत स्वान विष्टाके देहा । नरक देह नर नार उरेहा ॥
चौरासी लक्ष योनी खानी । नरककी नार सो अंकुर जानी ॥
कोइ एक हंस अंकुरी होई । अंकुर पावहिं अमिष न जोई ॥
अंकूरी जो भजे सतनामा । तो सब सुधरे वाको कामा ॥
सत्यनाम कबीर बखाना । कहें जनार्दन वचन प्रवाना ॥

विष्णुवचन ।

कहें विष्णु सुन नारद व्यासा । नाम कबीर भजो सुखरासा ॥
दोहा-सकल जीव गायत्री, बांध निरंजन राय ।
सत्यकबीर सो रक्षक, कहें कृष्ण समुझाय ॥

ब्रह्मावचन ।

ब्रह्मा कहें सीस भुंइ लाई । सत्यकबीर मोहिं कहहु बुझाई॥
केतिक दूर अहि सतलोका । जहां रहहिं सब हंस निसोका॥
सत्यकबीर सत्यपुरुष अमाना । न्यारा सबसे सकल अमाना ॥
अजर अमर सत्पुरुष अजावन । जिन भज सतकबीर गुरुपावन॥

कहैं ब्रह्मा हम सब बड भागी । उबरे चरण कबीरके लागी ॥
पायउं मुक्तको खान प्रवाना । जीवत मुक्त भये अज जाना ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो चतुरानन । सत्यनाम भज मन वच करमन ॥
एक आस सत्यनामकी कीरिये । और आस सकलो परिहरिये ॥
सत्यनामते अधिक न कोई । सत्यनाम भज अविचल होई ॥
अब तुम सुनहु लोक जत दूरी । गुरु ज्ञानीको हाल हजूरी ॥
निरंजनके मुखसे बाहर । सत्यलोक अमरपुर ठाहर ॥
सात तबक नभ सात पताला । चौदह यम बिच जीव बिहाला ॥
चौदह तबक चौदह यम ईशा । यमकी सेना रोम तन दीसा ॥
सिद्धदसा सतनाम कबीरा । गज रथ यम सैना घर चीरा ॥
पृथ्वी उर्ध योजन लक्ष मेघा । तासु पुन नभतर विषेधा ॥
रवि उर्ध लक्ष योजन है चंदा । चंद उर्ध तन नखत अनंदा ॥
तेइस लक्ष योजन उर्ध अपक्षरा । तेहि तत उर्ध सुरासन ठहरा ॥
सूर आस तत उर्ध यम साला । तेहि तत उर्ध निरंजन काला ॥

दोहा—ताके आगे तत दूरी, महाक्षेत्र सो नारि ।
तेहि तत मानसरोवर जहँ, कामनी रचि धमारि ॥

ताके आगे सहज सो दीपा । योगजीतके दीप समीपा ॥
सबै दीप अग्र महकाई । घ्राण सुगंध सकल रहु छाई ॥
पुरुषलोक जाय सो हंसा । ताको तरे इकोतर बंसा ॥

ब्रह्मावचन ।

ब्रह्मा मग्न होय पगु धारा । कर जोरे भाभी स्तुति सारा ॥
कहैं ब्रह्मा धन्य कृष्ण व्यासा । जिन कियो प्रगट कबीर प्रकाशा ।

कहैं अज सत्यकबीर संवादी । हम सब शिशु कीतमलघुवादी ॥
अन चीन्हे हम बाद बहु कीन्हा । बकसहु सत्यकबीर प्रवीना ॥
अब तो शरण तुम्हारी आये । मम अवगुण क्षमा प्रभु लाये ॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुनो अज वाणी । मात पिता शिशु घट नहिं मानी ॥
जो हम क्रोध करो तुव सबपर । को तोहिराख सके अज हरिहर ॥
तुन तीनोंके पितु महकाला । निराकार सब करे बिहाला ॥
हम तुम सबको प्रथम चेतावा । गहो शरण होय जिव मुक्तावा ॥
तब तुम गर्भवासमहँ भूले । ताते फिर २ योनी झूले ॥
जब सिर टेकेउ ऋषिदेव कारा । तब कबीरके शरण पवेरा ॥
कबीरके नाम शरण प्रतापा । उलटहिं जाय कालहिं चांपा ॥
कहैं कबीर सुनहु तुम चित दे । हृदय कबीर नाम जप हितकै ॥
जो जेहि नाम सुमरे चितलाई । हृदय कबीर नाम लौलाई ॥

दोहा-निशि दिन सुमरहु नाम मम, यमते रहहु निसंक ।
शब्द निरख पंथ गवनहु, गुरु पितु जेहि न कलंक ॥

चरण चूम अज सीस चढाये । तत्क्षण रुद्र जो गमन लाये ॥
कहैं महादेव विनय बहूता । कहहु कबीर योग सतमता ॥
केतिक स्वास चले दिन राती । किम घर बरे तेल विन वाती ॥
केते हांथ धरती आकाशा । कौन देवको कहां निवासा ॥
केतिक नदी केतिक गिरवरतन । कौन सिंधुको गाय कहावन ॥
कौन अमावस कौन परीवा । कौन पुन्नवा कौन ग्रह धरिवा ॥
केतिक रुधिर कायामहँ आही । बगन ओंकार फेर कित आही ॥
पांच तत्त्वहैं काहे नामा । और पचीस नाम पंच बामा ॥

काया माहिं के अंस हैं ताता । सोकहु के अंस आहिं तन माता ॥
कौन तत्त्व केहि जोनी साजा । योग भलाके भोगे राजा ॥
मृतुक मरे जरे तन क्षारा । परम पुरुष होय तनते न्यारा ॥
कौन देह धरि नरक भोगाईं । को है सेवक लेय मिलाईं ॥
चौदह भुवन कायामहँ काही । कहिये तन मचे मोहि पांही ॥
पांच सत्तका रंग कौन है । विन मंदिरका है सो कौन है ॥
कौन योगीको सिंगी बजावे । कौन आसन कौन विभूत रमावे ॥
काहेकी डिब्बी काहेका ढकना । कौन बेगाना को है अपना ॥
कौनसो चावल कौनसो दाली । कौनसी अगिन जातकहिघाली ॥
कौन कपिल को देवता आही । केतिक अजपा कहां जपाही ॥
विनती कर शिव पूछहिं भेऊ । कहें कबीर सुनहु सब कोऊ ॥
योग यज्ञ तप तीर्थ कर्म काटा । यह मत चालि जिव बारह वाटा ॥
सार भक्त बिन तरे न कोईं । चहुं युग भक्ति श्रेष्ठ गुरु सोईं ॥
कहें कबीर सुन प्रेतके ईशा । गहहु देव पथ तारहु सीसा ॥
तुम सब लीन्ह पान परवाना । भक्ति चावल चित तज मम काम।
एक २ अंश देहते काढहु । तेहि पितु सेव राख पितु बाढहु ॥

दोहा-अपनी अक्रित दुतिअन, सिरजा तीनो देव ।
बनिजा तीनो छद्गुरु मिले, क्रीतम्म देव पितु सेव ॥

छे सौ बीस सहस्र इकईसा । येतिक स्वास दिवस निशि ईसा ॥
मन पवनाको धाधियो तारी । विना तेल औ दीपक वारी ॥
साढे तीन कर क्षीनीजहँहांथा । आंगुर चार अकाशको माथा ॥
मल निकास बछ गनपत राजा । रिद्ध सिद्ध समसावत्रीविराजा ॥
सकल सिद्ध मिल गुरुपद सेवा । गुरु विन गनपति भक्ति बहेवा ॥

पृथ्वी तत्व तिष्ठत तेहि बारिज। पृथ्वी समान साध तेह कारिज॥
सोह चतुरदल विधु सूरंगा। नाम बीच अजपा सोहंगा॥
सोहंगका विन डोर कमला। जपे सो अमृत नाम दयाला॥
षट्पत्रपद इंद्री अस्थाना। ब्रह्मा सावित्री तहँवा जाना॥
रजगुण पीत बरण सो पंकज। षट्सहस्र अजपातँहआपअज॥
आप तत्त तहँ कीन्हि निवासा। विषै निरंजन काम यम फांसा॥
केवल सो अष्टदलनील सुरंगा। विष्णु देवता लक्ष्मीसंगा॥
सबगुण षट् सहस्र अजपा जप। सत्यनाम सम नहिं कोइ तप॥
वायु तत्त तहँ गांठ बंधानी। नाभचक्र पवना घर जानी॥
कीतम घर तन पवन सोहंगा। आद अमर घर सद्गुरु संगा॥
जाके बस सोहंग है भाई। सोई सत्यकबीर गोसांई॥

दोहा--आद पवन सोहंग है, कृतिम वायु तत पांच।
जहांते सोहंग ऊपजा, कहें कबीर सो सांच॥

शिव शारदा दस हियकमला। स्फटिक वर्णअतिसोहेपदअमला
तेज तत्त वडवानल चितंगी। हृदय दरश गुरु सद्गुरु संगी॥
षट्सहस्र अजपा तहँ होई। शिव सक्ती गुरु शिष्यधरसोई॥
द्वादसदल पंकज कंठ अधर। तत्तं अकाश त्रिगुण मनस धर॥
अग्र परम शिव दस द्वादसी। स्वांतकीलक्ष्मीमहाविष्णुसंगवसी
एक सहस्र अजपा तहँ होई। सब्ज रंग बरते पद सोई॥
सब्ज स्याम जेठ लघु भाई। सब्ज रिस्वाम लखि जाई॥
कंठ केवल दल षोडश पूरा। तहां वस्तु जिवसकलरंगसूरा॥
अजपा छे सो नाम विहंगा। सुरत निरत सो सद्गुरु संगा॥
भंवर गुफा दोय दलपद सोहा। परमहंस बसें नृप निरमोहा॥

एक निरमोह सुरत सतनामा। दुतिय निरमोह कबीरशिष्यरामा
स्याम लालमी रंग सोहाई। अजपा सहस कबीर लखाई ॥
सहसकमलदलाझलामिलझलके। मन पवन झीर मानसरोवरसे ॥
सुरत कमलपर सद्गुरु वासा। एक सहस अजपा प्रकाशा ॥
गुप्त गुहिंज निरगुण सरबादी। शब्दसरूप सुरत संग स्वादी ॥
बत्तिस पदुम पत्र गुण गाना। सुखा कंवल गुरु दरश पयाना ॥
दलअसंख्यकोकरबलसो भूला। जेहि २ विन शून्य २ अस्थूला ॥
असंख्यदलकंवलकेदेखहुआगे। सतसाहेब दसमे बडभागे ॥
सतसाहेब सतनाम कबीरा। कहें कबीर हम सकल शरीरा॥
हंस हमार सकल मत ताते। जीवघातके निकट न जाते ॥
कहें कबीर सुनो वृषवासन। काया लखहु देवन जहँ आसन॥
अटूट कोट पर्वत तहँहाडा। नौ सौ नदी समानीजेहिभांडा ॥
ज्ञानहीन जिव रात अमावस। पूनम चांद गहुजगतगुरुआवस॥
गुरु सद्गुरु कबीर मिल तरना। कलश सवांरहु रतन सुबरण। ॥
सवा हांथ नभको गगन घर। बरणहु एक २ सुन संकर ॥
पृथ्वी आप तेज वायु अकाशा। यही नाम पंच तत्व प्रकाशा॥
और सुनहु पांचहुके भाजा। ताते जीवन पोत दो मरजा ॥
पृथ्वीतत्वकी सुनहु प्रकृती। गुरु प्रताप कहुँ संतन जीती ॥
असत मेद नारि तुच रोमा। बंधु पंच यह पृथ्वी तत भोमा॥
लाल प्रसेव सुकल सोम सुत्रं। पंच बंधु वह आपकी धुत्रं ॥
वायु तत्तकी भारजा बोली। लिये पवन फिरे उडन खटोली ॥
गावन धावन बोलन अगोचर। अटवा नतसी प्राणन दूसर ॥
क्रीतम वायु पंचतत्त संग तेहि बंधु। तेहि मुख बैन बोले भज नंद ॥

नासिका वाट आवे जाई । रमता राम स्थिर न रहाई ॥
स्थिर पुरुष सत्यनाम कबीरा । मरे न जरे न धरे शरीरा ॥
तेज तत्त्वकी बंधु कहाई । तृषा क्षुधा आलस जमुहाई ॥
निद्रा मिल पांचो तजे दासी । नाम भक्त विन यमकी फांसी ॥
लज्जा शंका हर्ष शोक मोहा । यह अकाश बंधु संदोहा ॥
कहें कबीर सांचा मोहि भावे । सांचा सो जो सद्गुरु गुण गावे ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर हम नाम लखाई । सद्गुरु विन कोइ मुक्ति न पाई ॥
मग्न भये शिव नाचन लागे । कर गहि हरको दुलारन लागे ॥
सुनहु शंभु पूछहु मचाई । इतना सुन नाचत हो भाई ॥
जो पूछेहु तेहि महँ कछु बाकी । सो सुन लेहु मह पंथ ताकी ॥
दूत तुम्हार फिरहिं संसारा । पुण्यहिं पापी दोनो लै जारा ॥

महादेववचन ।

कहें महादेव सुन सतनामा । तुव सेवक जो हम तेहि कामा ॥
पाप पुण्य है त्रिगुण बाजी । बेद ठेल त्रिपतान्त्रिक साजी ॥
पाप पुण्य है यमके खेती । दया सत्त प्रमारथ सुनेती ॥
हमहु चले कुपंथ डर ताता । तापर प्रबल अष्टंगीमाता ॥
अपने पुत्रहिं जो धर खाई । आनहिं कस छोडे भाई ॥
पितु आज्ञा हम बहु जिव चांपा । परे आन हमरे सिरपापा ॥
ताते शरण तुम्हारी आये । काल पिताते आप बचाये ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर भल होय सब केरा । जरा मरण सतनाम निबेरा ॥
अब तुम जात मातु तन बूझहु । तन स्वासा स्वासा गम सुझहु ॥

एकको लोहु एकको पानी। दोय मिल सिरजा विदेहनिसानी
निहअक्षर निहतत्तसो निरगुण। अमी नीर विन कुंभक सरगुण॥
सद्गुरु शब्दसे लागी धरनी। उर्ध सुरत सोहंग परवनी॥
पितुके बुंदसो हाड औ गूदा। मांस रक्त औ मेद औजूदा॥
पुन पितु अंस रुधिर तन तवलों। तवलहि तन श्रोनित जिव जवलों
चार अंस तनमहँ पितुकेरा। पांच अंस माता बन घेरा॥
एक अधिक माता गुण भयऊ। चित देखो पन सतगुण कियऊ॥
पौन आगे परा चल पाछे। घरिया माहिं तन कछनी कांछे
पिता पौन ले सांचहि ढारी। तव जिव परा परातम नारी॥
आतम परमातप जिव संगा। नांद विंदु मिलना मत रंगा॥
अब जो अंस सुनहु शिव आहीं। जे जननी सो जो इन होय खाही
जेहि जननी तन पांच प्रकृती। रोम चाम नख दंत भगोती॥
जत द्वार तन तत भग जानी। आद लिंग सोहंग बखानी॥
आठो पहर करे रति सोई। आवागवन महा दुख होई॥
जबलग अमरलोक नहिं पहुँचे। आवागौन भग भोगि विगूचे॥
भक्त करे तो वारहि नीकी। भक्त बिहून सकल जग फीकी॥
कीतम निरंजन पितु मम आहीं। तनके मात पिता यह साही॥
जीव सब सत्यनामके आहीं। सत्यकबीर सतनाम लखाहीं॥

महादेववचन।

कहें शंभु संसे गइ मोरी। तुम दयाल मम बंदीछोरी॥
अब साहेब कहु जीवत लेखा। कौन तत्त केहि ज़ोनि परेखा॥

कबीरवचन ।

कहैं कबीर सुन उमापति ईशा । नरतन त्रिगुण पांच पचीसा ॥
चार खान महँ नर तन ईशा । सकल भेद जानहु जगदीशा ॥
नरपिंडज चौरासी नारा । नाम भक्त बिन यमके चारा ॥
पिंडज गौ गज चौपग महिषा । अरना बाघ सिंह बनगोहिषा ॥
श्वान मंजार अजिया सुत बीगा । पृथ्वी आप वाय तेज अंगा ॥
त्रिगुण मेराय सकल जिव दीन्हा। सतगुण रज तम भासे चीन्हा॥
रजगुण बहु छल क्षुद्र परवंडा । रोग वियोग भोग यमदंडा ॥
मिथ्या बोल सोग संतापा । छुतहिं छूत जिव छूतहिं थापा॥
वैष्णवसे नहिं नवहिं अभागे । वैष्णनव असंखहि द्विज नागे ॥
तिनहु मागह बड वैष्णो बखाना। जीव दया कथि जग पतियाना॥
बहुर युद्ध महाभारथ करावा । तब करता हरि धका दियावा॥
कृष्ण सीस जब वसे कबीरा । तबलग राम कृष्ण मत धीरा ॥
निरंजन अधा परवेसा । तब भे कृष्ण कालकर भेसा ॥

दोहा–जबलग जाकर नाम लिय, तब लहि तेह यह सोय
कहैं कबीर मोहिं सुमेर, एकमत सब सुख लोय॥

पांच तीनकी काया कांची । अमरपुरी अमर तन सांची ॥
सतगुण सत्यकबीरके आसा । निरंजन अधा रज तम फांसा ॥
जैसे तुलसी भांमे राई । औ गुर राम तुलसी सार लाई ॥
रज तम गुंमा भांग बखाना । भांग महादेव अज गुमा जाना ॥
तुलसी विष्णु अंस विनाशी । औ अविनाशी कबीर सुखराशी॥

दोहा–कहैं महादेव विष्णु अज, सुन सतनाम कबीर।
निराकार डहनसे, राख लेहु गुरु पीर ॥

कबीर वचन ।

कहैं कबीर सुनहु त्रिय देवा । सब मिल करहु साधुकी सेवा ॥
जगमहँ वैष्णव भेष मम दासा । प्रेमवस भये ताके पासा ॥
सत रज तम जिव सबहै मेरा । अभ्रष पंथ राक्षस जिव चेरा ॥
बीज वंस तेहि रहे न कोई । मीन गऊ बध जल जिव खोई ॥
सतगुणको सो भाव बखानी । रज तम तज सतपंथ चलज्ञानी ॥
सत्य दया पर आतम पूजा । सद्गुरु साध चरण मन बूझा ॥
सकल देव मिल निरगुण नामा । कबीर अंस तन रमता रामा ॥
सबसे प्रेम क्षमा धीरज तन । अपने जानत न दुखवें काहु मन ॥
कौनहु जीव जंतु न दुखावें । समदृष्टी निज सबपर भावे ॥
काहूके तन मांस न खाई । मीन मास मद निकट न जाई ॥
घृत मिष्टान्न पान फुलवारी । यह सब सात्वकी भक्ष विचारी ॥
अभ्यागत आवे कोइ बरणा । सबकर पोषन सब मिल करना ॥
सात्वकी चाल मुक्त नर नारी । रज तम भौ सब भ्रम संसारी ॥
भक्षित भाव गलतान लिय नामा । परनारी द्रव्य अपंथ कर कामा ॥
कच्छ मच्छ सकलो जिवजंता । सब जिव परा क्षमा शुभ संता ॥
तीर्थ व्रत तप त्रिगुण जोगा । बनोवास अधर्म तज भोगा ॥
भोग सात्वकी भजन सतनामा । इच्छा दशा समर्थ निहकामा ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण पुलकित होय वाणी । सत्य कबीर तुमहिं सुख खानी ॥
हम सब कहँ तुम दीन्ह बडाई । आप दास होय सेवा लाई ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर बडेकी रीती । सब जिव पोषव सबसे प्रीती ॥

नमन दीनता लघुता भाती । पतिव्रता सब लाब तेहि कांती ॥
सद्गुरु नाम कबीर अटोटा । कबीर कंथ भज कछु नहिं टोटा॥

विष्णुवचन ।

कहें कृष्ण अज हर शुक व्यासा । अब सद्गुरु कहिय तमासा ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर तमगुणके लक्षण । दरिद्री भिखारी क्रोध मत तिक्षण
मारन मरन राते षट उरमा । सत्य नाम भजे सो जिवधरमा ॥
सत्यनाम सो अम्मर काया । जगमग जोत सो अंस सुहाया ॥
अमरलोक सो अटल रहाहीं । जीव दया वद जग प्रगटाहीं ॥
असुरहिं साध चतुर मुख साखा। रज तम भक्त असुर जग लाखा
मुग्ध मोह बस तक्षक भासा । राक्षसी भोजन प्रेत पिशाचा ॥
विष्णु भक्तके द्रोह कराहीं । शिव जोगी सिष साधे नाहीं ॥
और कहें शिव जोगी सिध्या ।कलयुगद्विज मिल शिव शिष्यगिधा
मीन मास मद भष गिद्ध श्वाना । मीन मास मद है अघ खाना ॥
चोरी और करहिं बटपारी । झूठा लंपट चुगल जुवारी ॥
षट उर मास रसके संगी । रज तम शिष कुपंथ अभंगी ॥
छीन सतगुण रज तम बहुताई । यहि जीवको डर विचल न जाई ।
नहिं विचलहिं सतगुरुजेहिमाहीं । सत्त चीन्ह रज तम मिन डाहीं ॥
सत्तहिं दिन २ बाढ सवाई । गुरु साध विमुख यम खाई ॥
दिना चार कलि श्रेष्ठ मलेच्छा । झष भखहिं गौ भखहिं अभक्षा॥
जहँ लग अवगुण रज तम जानो । सतगुण रज तम चाल बखानो॥
रज तम अधार ते वैष्णव नाहीं । वैष्णव सतकबीर सतोगुणमाहीं
हमरे दासहिं जो कोइ मनिहै । तेहि सुख होय यम नहिं दहिहै ॥

एक २ रोम वैष्णव सतोगुण । रज तम देवी पंथहै दुर्जन ॥
यह सब तन वैष्णव तन दूजा । रज तम देवी पंथ अरूझा ॥
जो नहिं संतहि माने भाई । झूठहिं थाप नरकमें जाई ॥
जन्मे मरे सो कीतम झूठा । अजर स्वास जिव संतन दूठा ॥
सत्यकबीर अजर अविनाशी । सत्यकबीर जो करे हुलासी ॥
दुलह कबीर अमर सुखरासी । दुलहिन जीव अमरघरवासी ॥
देह धरे औ जिव चकलागा । खसम विसार जार मन बागा ॥
धगरा मनमत त्रिगुण निरंजन । खसम कबीर काल सिरभंजन ॥
जै जै स्वामी सत्य कबीरं । स्तुति करें त्रिय देव सो धीरं ॥
तीनो कहे हम तरे तुव दाया । मुक्त परवाना कबीर सिरवाया ॥
अगले हंसन वाट चिन्हाई । सर्व शास्त्र दाया फरमाई ॥

कृष्णवचन ।

कहें कृष्ण यह निश्चय जानी । मुक्ति कबीर चरण लपटानी ॥

कबीरवचन ।

कहें कबीर सुनो सब कोई । सांची भक्ति विना गत खोई ॥
सांच भक्ति गुरु साध विश्वासा । भैरों भूत देवी यमफांसा ॥
कहें कबीर सुन वृषभ सवारी । पूछेहु प्रथम सो लेहु निरवारी ॥
सब योनिन तत गुण कीत विवरण । पांचतीन एक मिलनर जोहतन
पिंडज चार तत्त नभ त्यागी । और सकल नभहि ते लागी ॥
अवूज तीनते पृथ्वी वाई । उषमज दोय तत्त तेज औवाई ॥
एक तत्त अंकुर दलको थेका । पांच तत्त नर शब्द विवेका ॥
चार खान रचि त्रिगुण अष्टंगी । एक जीव तनका चित्रभंगी ॥
जोग भोग दोउ रोग समाना । नाम भक्त चहुँ युग निरवाना ॥

पांच तीन बस तन अघखानी। सद्गुरु सेव हंस पिल जानी॥
तन विदेह विन घरको भवन है। पांच तत्त मन कहांसोरंगहै॥
प्रथम कहेउं पंच सैल ततुरंगा। सुन भूलेहु तुम खाहु बहु भंगा॥
योगी सोहंग तन सिंगी बजावे। सहज आसन तन बिभूत रमावे॥
दृढताई डिब्बी अमीगत ढपना। सबे बिगाना सद्गुरु अपना॥
चावल प्रीत चेतन दिल दाला। ब्रह्म अगिन कमल परजाला॥
निरगुण नाम निमक सो सब रस। तेज पात विश्वास सो अदरख॥
प्रेम सुचित सो घीव जीवन। काया क्षीर मथे कोइ गुरुजन॥
पारस पान प्रसाद चढाये। अमी नीर कबीर पियाये॥
दया दही गऊ घृत सुच दूधा। खोवा काम क्रोध घर सोधा॥
परस प्रसाद विरान सुरत सेवक। शुभ आशिष देहिं गुरुदेवक॥
अजर अमर घर वर मिल आशिष। पिया रूप रस जगमें अतिसु॰
पिय हिय पैठि सेवककेरा। जन्म मरनका करे नवेरा॥
भया निवेरा सो कस हूवा। पांच पचीस त्रिगुन तन जूवा॥
अजर अमर अविचल सो काया। अमर लोक सबे सुख पाया॥
कहें कबीर छूटेउ सब संसा। तरे इकोतर पिछले वंसा॥
सद्गुरु शरण हाथिगत पुरुषा। खसम कबीरहिं लखेन न मुर्खा॥
कहें कबीर तन भुवन चतुर्दश। चौदह संग चालक जीव सरबस॥
चौदह संग जब बाहर होई। सत कहे सद्गुरु शरण समोई॥
अजरलोक पगु अधर बखाना। निज पगु अरध बितल परजाना
तीन लोक उरध तेह ताको। लोक तलातल जंघ अस्थापो॥
लोक माहिं तल इंदुकी वारी। मलस्थान रसातल खारी॥
कटि पताललोक विस्तारा। सान दीप नभ अधर उचारा॥

इंद्र सप्त दीप भुवलोक नाभी स्थानी । नाभके वाम दहिने भै जानी॥
स्वर्गलोक हृदय अस्थापी । अमर लोक तन दोउ भुज दापी॥
कंठ स्थान आहि जनलोका । है पतलोक लिलाट विसोका ॥
कीतम सत्यलोक नर माथा । आद सतलोक अमरपुर ताका॥
कुल अंगुष्ठ घुट्टी पग्र पाही । नाडि सकल सेस परवाही ॥
निज मुख देखहु तीनों लोका । रसना उर्ध सरम पंथ मोका ॥
रसना मृत्युलोक कोई थिर नाहीं। जिंदा जग प्रगट रहाकोइ न माही
रसना अरध पतालके सो साता । अष्ट धात पिंजरा जिवराता ॥
निराकार प्रबल मंजारा । सत्यनाम विन तेहि दै मारा ॥
अष्टंगी मंजारी खोटी । तीन लोक जिव खायासि घोटी ॥
कहैं कबीर जिन सुमरो मोही । यम सिर भंजन बचायेउ वोहीं॥
चौदह यम तन जीवहिं घेरा । चौदह यमका करों निवेरा ॥
प्रथमहिं धर्म करे यम घाता । धर्मराय यम इस मन माता ॥
दुतिय काम त्रितय यम क्रोधा । चौथे लोभ पंचये भ्रम सोधा ॥
छठयें यम लक्ष बुध विकारा । सतयें परधन हर सत हारा ॥
अठयें अहंकार नौमें मोहा । दसयें दस इंद्री सुख जोहा ॥
इकादसे आप तन पोषा । अभ्यागत तज खाय न मोषा॥
द्वादसपै लेय विश्वास घाती । त्रियदस तृष्णा लोभ जमाती ॥
चतुर्दश चिंता तन वन आगी । चिंताहि डाह कोई बैरागी ॥
चिंता सोइ जो सद्गुरु सेवा । सद्गुरु सब देवनकर देवा ॥

कृष्णवचन ।

कहैं कृष्ण निरने निरवारा । सत्यकबीर भौ तारनहारा ॥
हम सब मगन कबीरके पाछे । हमार निबाह कबीरकृत आछे॥

चारों युग कबीर मोहि राखा। कहें कृष्ण व्यास सत भाषा॥
पूछहिं तारा अकाश घर स्वामी। कहें सद्गुरु नखत निधामी॥
केतिक तारा आहिं अकाशा। कौन वरण तारागण भाषा॥

कबीरवचन।

कहें कबीर तारा यम रोवा। प्रबल निरंजन यम जिव हुवा॥
उतरो याही यमकी काया। दिये छिटकाय रैन नभ माया॥
होत प्रात फिर सुन्य समाई। सात तबकके पार सो जाई॥
सुन्य समाय रहा धर ध्याना। दिन गत बहुरि रैन प्रगटाना॥
रैन निरंजन दिवस कबीरं। सूर निरंजन शशि सत धीरं॥
अनंत कोट उडगण तनवारा। चौदह योजन गोछ निराकार॥
गोछ बीर जीवहिं दे सूरी। कबीरके भक्त करे भौ मूरी॥

दोहा-श्रीकृष्ण त्रिय देव मिल, स्तुति करहिं अपार।
सुखदेव व्यास सब विनवहीं, जै जै कबीर विचार॥
कबीर काल सिर भंजन, और मुक्त देहिं जीव।
विष्णु व्यास सत कहत हैं, सत्यकबीर निज पीव।

इति श्रीकबीरकृष्णगीता समाप्ता।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS